

THE WORKS OF  
**SRI SANKARACHARYA**

VOLUME

**18**

SRI VANI VILAS PRESS

— SRIRANGAM —

परिग्रहण सं० 10380

ग्रन्थालय, के. ए. वि. संस्थान  
सारनाथ, वाराणसी



TO

HIS HOLINESS SRI JAGADGURU

**SRI SACHCHIDANANDA SIVABHINAVA**

**NRISIMHA BHARATI SWAMI**

WHO ADORNS THE THRONE OF THE SRINGERI MUTT

AS THE WORTHY REPRESENTATIVE OF THE

REFORM SANKARACHARYA

AND

THAN WHOM IT IS IMPOSSIBLE

TO COME ACROSS A HOLIER PERSONAGE

A TRUER MAHATMA A NOBLER SAINT

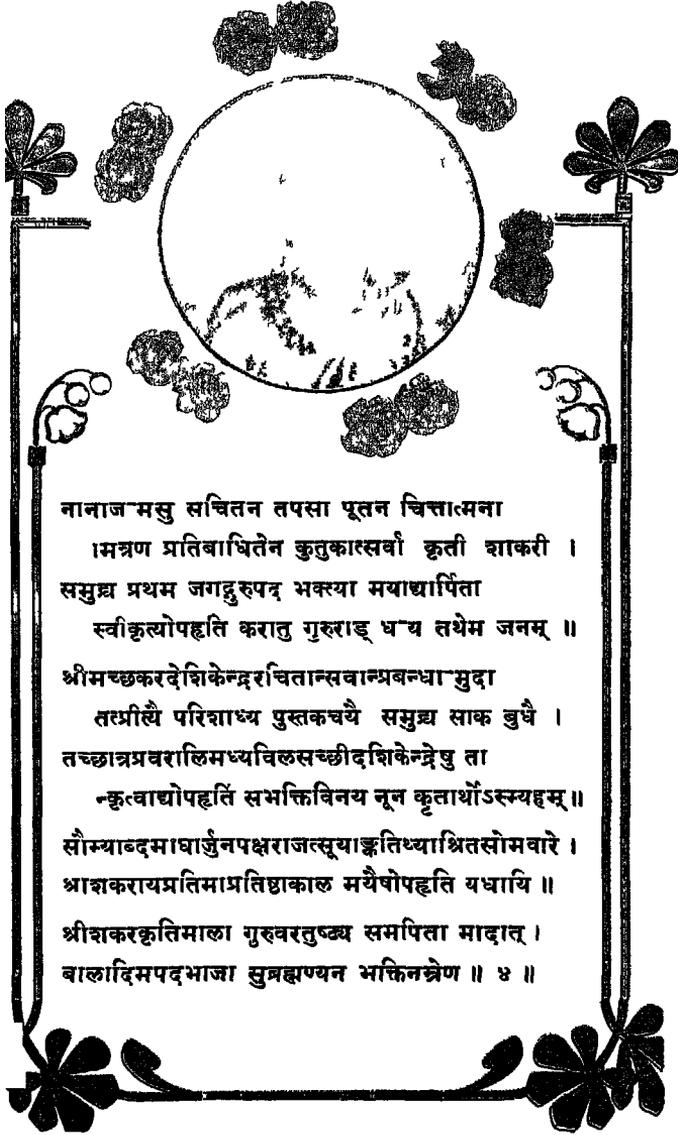
AND A MORE RIGOROUS ASCETIC

THIS EDITION IS MOST RESPECTFULLY INSCRIBED

AS A TOKEN OF UNBOUNDED ADMIRATION

BY THE HUMBLEST OF ALL HIS DISCIPLES

T K BALASUBRAHMANYAM



नानाजन्मसु सञ्चितन तपसा पूतन चित्तात्मना  
।मन्त्रेण प्रतिबाधितेन कुतुकास्सर्वा कृती शाकरी ।  
समुच्च प्रथम जगद्गुरुपद भक्त्या मयाद्यार्पिता  
स्वीकृत्योपहृति करातु गुरुराद् धन्य तथेम जनम् ॥  
श्रीमच्छकरदेशिकेन्द्रचितान्सवान्प्रबन्धासुदा  
तत्प्रियै परिशाध्य पुस्तकचयै समुच्च साक बुधै ।  
तच्छात्रप्रवरालिमध्यविलसच्छीदशिकेन्द्रेषु ता  
नकृत्वाद्योपहृति सभक्तिविनय नून कृतार्थोऽस्म्यहम् ॥  
सौम्याब्दमाषार्जुनपक्षराजत्सूयाङ्कतिथ्याश्रितसोमवारे ।  
श्राशकरायप्रतिमाप्रतिष्ठाकाल मयैषोपहृति यथायि ॥  
श्रीशकरकृतिमाला गुरुवरतुष्य समपिता मादात् ।  
बालादिमपदभाजा सुब्रह्मण्यन भक्तिन्नेण ॥ ४ ॥





	PAGE
VISHNU ŠOTRAS	1
MISCELLANEOUS ŠOTRAS	70
LALITA TRISATISTOTRA BHASHYA	161







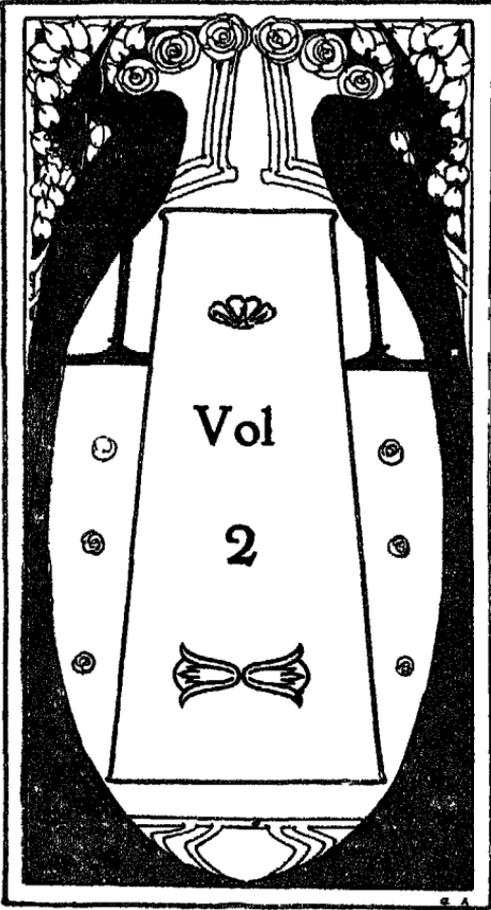
	पृष्ठम्
विष्णुस्तोत्राणि	१
सकीर्णस्तोत्राणि	७०
ललितात्रिशतीस्तोत्रभाष्यम्	१६१







**STOTRAS.**



Vol

2





॥ श्री ॥

# ॥ विषयानुक्रमणिका ॥



	पृष्ठम्
हनुमत्पञ्चरत्नम्	१
श्रीरामभुजगप्रयातस्तोत्रम्	३
लक्ष्मीनृसिंहपञ्चरत्नम्	११
लक्ष्मीनृसिंहकरुणारसस्तोत्रम्	१३
श्रीविष्णुभुजगप्रयातस्तोत्रम्	१८
विष्णुपादादिकेशान्तस्तोत्रम्	२२
पाण्डुरङ्गाष्टकम्	३६
अच्युताष्टकम्	३९
कृष्णाष्टकम्	४२
हरिस्तुति	४५
गोविन्दाष्टकम्	५६
भगवन्मानसपूजा	५९
मोहमुद्गर	६२
कनकधारास्तोत्रम्	७०
अन्नपूर्णाष्टकम्	७५

मीनाक्षीपञ्चरत्नम्	७९
मीनाक्षीस्तोत्रम्	८१
दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम्	८४
कालभैरवाष्टकम्	८९
नर्मदाष्टकम्	९२
यमुनाष्टकम्	९५
यमुनाष्टकम्	९८
गङ्गाष्टकम्	१०१
मणिकर्णिकाष्टकम्	१०४
निर्गुणमानसपूजा	१०७
प्रातः स्मरणस्तोत्रम्	११२
जगन्नाथाष्टकम्	११४
षट्पदीस्तोत्रम्	११७
भ्रमराम्बाष्टकम्	११९
शिवपञ्चाक्षरनक्षत्रमालास्तोत्रम्	१२२
द्वादशलिङ्गस्तोत्रम्	१३०
अर्घनारीश्वरस्तोत्रम्	१३४
शारदाभुजगप्रयाताष्टकम्	१३७
गुर्वष्टकम्	१४०
काशीपञ्चकम्	१४३







॥ श्रीमहाविष्णु. ॥

॥ श्री ॥

॥ हनुमत्पञ्चरत्नम् ।

*Gourshunker Ganeriwala*

वीताखिलविषयेच्छ

जातानन्दाश्रुपुलकमयच्छम् ।

सीतापतिदूताद्य

वातात्मजमद्य भावये हृद्यम् ॥ १ ॥

तरुणारुणमुखकमल

करुणारसपूरपुरितापाङ्गम् ।

सजीवनमाशासे

मञ्जुलमहिमानमञ्जनाभाग्यम् ॥ २ ॥

शम्बरवैरिशरातिग-

सम्बुजदलविपुललोचनोदारम् ।

कम्बुगलमनिलदिष्ट

बिम्बज्वलितोष्णमेकमवलम्बे ॥ ३ ॥

दूरीकृतसीतार्ति

प्रकटीकृतरामवैभवस्फूर्ति ।

दारितदशमुखकीर्ति

पुरतो मम भातु हनुमतो मूर्ति ॥ ४ ॥

वानरनिकराध्यक्ष

दानवकुलकुमुदरविकरसदृक्षम् ।

दीनजनावनदीक्ष

पवनतप पाकपुञ्जमद्राक्षम् ॥ ५ ॥

एतत्पवनसुतस्य

स्तोत्रं य पठति पञ्चरत्नाख्यम् ।

श्चिरमिह निखिलान्भोगा

न्भुङ्क्त्वा श्रीरामभक्तिभागभवति ॥ ६ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य

श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य

श्रीमच्छंकरभगवत कुतौ

हनुमत्पञ्चरत्न सपूर्णम् ॥

॥ श्री ॥

## ॥ श्रीरामभृङ्गप्रथातस्तोत्रम् ॥

विशुद्ध पर सच्चिदानन्दरूप  
गुणाधारमाधारहीन वरेण्यम् ।  
महान्त विभान्त गुहान्त गुणान्त  
सुखान्त स्वय धाम राम प्रपद्ये ॥ १ ॥

शिव नित्यमक विभु तारकाख्य  
सुखाकारमाकारशून्य सुमान्यम् ।  
महेश कलेश सुरेश परेश  
नरेश निरीश महीश प्रपद्ये ॥ २ ॥

यदावर्णयत्कर्णमूलेऽन्तकाले  
शिवो राम रामेति रामेति काश्याम् ।  
तदेक पर तारकब्रह्मरूप  
भजेऽह भजेऽह भजेऽह भजेऽहम् ॥ ३ ॥

महारत्नपीठे शुभे कल्पमूले  
 सुखासीनमादित्यकोटिप्रकाशम् ।  
 सदा जानकीलक्ष्मणोपेतमेक  
 सदा रामचन्द्र भजेऽहं भजेऽहम् ॥ ४ ॥

कणद्रत्नमञ्जीरपादारविन्द  
 लसन्मेखलाचारुपीताम्बराढ्यम् ।  
 महाग्नहारोल्लसत्कौस्तुभाङ्ग  
 । नदच्चञ्चरीमञ्जरीलोलमालम् ॥ ५ ॥

लसच्चन्द्रिकास्मेरशोणाधराभ  
 समुद्यत्पतङ्गेन्दुकोटिप्रकाशम् ।  
 नमद्ब्रह्मरुद्रादिकोटीररत्न  
 स्फुरत्कान्तिनीराजनाराधिताङ्घ्रिम् ॥ ६ ॥

पुर प्राञ्जलीनाञ्जनेयादिभक्ता-  
 न्स्वचिन्मुद्रया भद्रया बोधयन्तम् ।  
 भजेऽहं भजेऽहं सदा रामचन्द्र  
 त्वदन्य न मन्ये न मन्ये न मन्ये ॥ ७ ॥

यदा मत्समीप कृतान्त समेत्य  
 प्रचण्डप्रकोपैर्भटैर्भीषयेन्माम् ।  
 तदाविष्करोषि त्वदीय स्वरूप  
 सदापत्प्रणाश सकोदण्डबाणम् ॥ ८ ॥

निजे मानसे मन्दिरे सनिधेहि  
 प्रसीद् प्रसीद् प्रभो रामचन्द्र ।  
 ससौमित्रिणा कैकयीनन्दनेन  
 स्वशक्त्यानुभक्त्या च समेठ्यमान ॥ ९ ॥

स्वभक्ताग्रगण्यै कपीशैर्महीशै-  
 रनीकैरनकैश्च राम प्रसीद् ।  
 नमस्ते नमोऽस्त्वीश राम प्रसीद्  
 प्रशाधि प्रशाधि प्रकाश प्रभो माम् ॥ १० ॥

त्वमेवासि दैव पर मे यदेक  
 सुचैतन्यमेतत्त्वदन्य न मन्ये ।  
 यतोऽभूदमेय विद्यद्वायुतेजो  
 जलोठ्यादिकार्यं चर चाचर च ॥ ११ ॥

नम सखिदानन्दरूपाय तस्मै  
 नमो देवदेवाय रामाय तुभ्यम् ।  
 नमो जानकीजीवितेशाय तुभ्य  
 नम पुण्डरीकायताक्षाय तुभ्यम् ॥ १२ ॥

नमो भक्तियुक्तानुरक्ताय तुभ्य  
 नम पुण्यपुञ्जैकलभ्याय तुभ्यम् ।  
 नमो वेदवेद्याय चाद्याय पुसे  
 नम सुन्दरायेन्दिरावल्लभाय ॥ १३ ॥

नमो विश्वकर्त्रे नमो विश्वहर्त्रे  
 नमो विश्वभोक्त्रे नमो विश्वमात्रे ।  
 नमो विश्वनेत्रे नमो विश्वजेत्रे  
 नमो विश्वपित्रे नमो विश्वमात्र ॥ १४ ॥

नमस्ते नमस्त समस्तप्रपञ्च  
 प्रभागप्रयोगप्रमाणप्रवीण ।  
 मदीय मनस्त्वत्पदद्वन्द्वसेवा  
 विधातु प्रवृत्त सुचैतन्यसिद्धयै ॥ १५ ॥

श्रीरामभुजङ्गप्रयाततोत्रम् ।

७

शिलापि त्वदङ्घ्रिक्षमासङ्गिरेणु  
प्रसादाद्धि चैतन्यमाधत्त राम ।  
नरस्त्वत्पदद्वन्द्वसेवाविधाना-  
सुचैतन्यमेतीति किं चित्तमल्ल ॥ १६ ॥

पवित्र चरित्र विचित्र त्वदीय  
नरा ये स्मरन्त्यन्वह रामचन्द्र ।  
भवन्त भवान्त भरन्त भजन्तो  
लभन्ते कृतान्त न पश्यन्त्यतोऽन्ते ॥ १७ ॥

स पुण्य स गण्य शरण्यो ममाय  
नरो वेद यो देवचूडामणिं त्वाम् ।  
सदाकारमेक चिदानन्दरूप  
मनोवागगम्य पर धाम राम ॥ १८ ॥

प्रचण्डप्रतापप्रभावाभिभूत  
प्रभूतारिवीर प्रभो रामचन्द्र ।  
बल ते कथ वर्ण्यतेऽतीव बाल्ये  
यतोऽखण्डि चण्डीशकोदण्डदण्डम् ॥ १९ ॥

दशग्रीवसुप्र सपुत्र समित्र  
 सरिदुर्गमध्यस्थरक्षोगणेशम् ।  
 भवन्त विना राम वीरो नरो वा  
 सुरो वामरो वा जयेत्कस्त्रिलोक्याम् ॥ २० ॥

सदा राम रामेति रामामृत ते  
 सदाराममानन्दनिष्यन्दकन्दम् ।  
 पिबन्त नमन्त सुदन्त हसन्त  
 हनूमन्तमन्तर्भजे त नितान्तम् ॥ २१ ॥

सदा राम रामेति रामामृत ते  
 सदाराममानन्दनिष्यन्दकन्दम् ।  
 पिबन्नन्वह नन्वह नैव मृत्यो  
 बिभेभि प्रसादादसादात्तवैव ॥ २२ ॥

असीतासमेतैरक्रोदण्डभूषै  
 रसौमित्रिवन्द्यैरचण्डप्रतापै ।  
 अलङ्केशकालैरसुग्रीवमित्रै-  
 ररामाभिधैरल दैवतैर्न ॥ २३ ॥

अवीरासनस्थैरचिन्मुद्रिकाढ्यै  
 रभक्ताञ्जनेयादितत्त्वप्रकाशै ।  
 अमन्दारमूलैरमन्दारमालै  
 । ररामाभिधेयैरल दैवतैर्न ॥ २४ ॥

असिन्धुप्रकोपैरवन्धप्रतापै  
 रबन्धुप्रयाणैरमन्दस्मिताढ्यै ।  
 अदण्डप्रवासैरखण्डप्रबोधै  
 ररामाभिधेयैरल दैवतैर्न ॥ २५ ॥

हरे राम सीतापते रावणारे  
 खरारे मुरारेऽसुरार परेति ।  
 लपन्त नयन्त सदाकालमेव  
 समालोकयालोकयाशेषबन्धो ॥ २६ ॥

नमस्ते सुमित्रासुपुत्राभिवन्ध  
 नमस्ते सदा कैकयीनन्दनेड्य ।  
 नमस्ते सदा वानराधीशवन्ध  
 नमस्ते नमस्ते सदा रामचन्द्र ॥ २७ ॥

प्रसीद् प्रसीद् प्रचण्डप्रताप

प्रसीद् प्रसीद् प्रचण्डारिकाल ।

प्रसीद् प्रसीद् प्रपन्नानुकम्पिन्

प्रसीद् प्रसीद् प्रभो रामचन्द्र ॥ २८ ॥

भुजङ्गप्रयात पर वेदसार

मुदा रामचन्द्रस्य भक्त्या च नित्यम् ।

पठन्सन्तत चिन्तयन्स्वान्तरङ्ग

स एव स्वयं रामचन्द्र स धन्य ॥ २९ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य

श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य

श्रीमच्छंकरभगवत क्रतौ

श्रीरामभुजङ्गप्रयातस्तोत्रम्

सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

## ॥ लक्ष्मीनृसिंहपञ्चरत्नम् ॥

—\*—

त्वत्प्रभुजीवप्रियमिच्छसि चेन्नरहरिपूजा कुरु सतत  
प्रतिबिम्बालकृतिधृतिकुशलो बिम्बालकृतिमातनुते ।  
चेतोभृङ्ग भ्रमसि वृथा भवमरुभूमौ विरसाया  
भज भज लक्ष्मीनरसिंहानघपदसरसिजमकरन्दम् ॥

शुक्तौ रजतप्रतिभा जाता कटकाद्यर्थसमर्था चै  
हु खमयी ते ससृतिरेषा निर्वृतिदाने निपुणा स्यात् ।  
चेतोभृङ्ग भ्रमसि वृथा भवमरुभूमौ विरसाया  
भज भज लक्ष्मीनरसिंहानघपदसरसिजमकरन्दम् ॥

आकृतिसाम्याच्छाल्मलिकुसुमे स्थलनलिनत्वभ्रममकरो  
गन्धरसाविह किमु विद्येते विफल भ्राम्यसि शृशविरसेऽस्मिन् ।  
चेतोभृङ्ग भ्रमसि वृथा भवमरुभूमौ विरसाया  
भज भज लक्ष्मीनरसिंहानघपदसरसिजमकरन्दम् ॥ ३ ॥

क्लृप्तचन्दनवनितादीन्विषयान्सुखदान्मत्वा तत्र विहरसे  
 गन्धफलीसदृशा ननु तेऽमी भोगानन्तरदु खकृत स्यु ।  
 चेतोभृङ्ग भ्रमसि वृथा भवमरुभूमौ विरसाया  
 भज भज लक्ष्मीनरसिंहानघपदसरसिजमकरन्दम् ॥४॥

तव हितमेक वचन वक्ष्ये शृणु सुखकामो यदि सतत  
 स्वप्ने दृष्ट सकल हि सृषा जाग्रति च स्मर तद्वदिति ।  
 चेतोभृङ्ग भ्रमसि वृथा भवमरुभूमौ विरसाया  
 भज भज लक्ष्मीनरसिंहानघपदसरसिजमकरन्दम् ॥५॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य  
 श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य  
 श्रीमच्छकरभगवत कृतौ  
 लक्ष्मीनृसिंहपञ्चरत्न सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

## ॥ लक्ष्मीनृसिंहकरुणारसस्तोत्रम् ॥

श्रीमत्पयोनिधिनिकेतनचक्रपाण

भोगीन्द्रभोगमणिराजितपुण्यमूर्ते ।

योगीश शाश्वत शरण्य भवाब्धिपोत

लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १ ॥

ब्रह्मेन्द्ररुद्रमरुदर्ककिरीटकोटि

सघट्टिताङ्घ्रिकमलामलकान्तिकान्त ।

लक्ष्मीलसत्कुचसरोरुहराजहस

लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ २ ॥

ससारदावदहनाकरभीकरोरु-

ज्वालावलीभिरतिदग्धतनूरुहस्य ।

त्वत्पादपद्मसरसीरुहमागतस्य

लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ३ ॥

ससारजालपतितस्य जगन्निवास

सर्वेन्द्रियार्थबद्धिशाप्रज्ञबोधोपमस्य ।

प्रोत्कम्पितप्रचुरतालुकमस्तकस्य

लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ४ ॥

ससारकूपमतिघोरमागधमूल

सप्राप्य तु खशतसर्पसमाकुलस्य ।

दीनस्य देव कृपया पदमागतस्य

लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ५ ॥

ससारभीकरकरीन्द्रकराभिघात

निष्पीड्यमानवपुष सकलार्तिनाश ।

प्राणप्रयाणभवभीतिसमाकुलस्य

लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ६ ॥

ससारसर्पविषदिग्धमहोमतीव्र

दृष्ट्वाप्रकोटिपरिदृष्टविनष्टमूर्ते ।

नागारिवाहन सुधाब्धिनिवास शौरे

लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ७ ॥

लक्ष्मीनृसिंहकरुणारसस्तोत्रम् ।

१५

ससारवृक्षमघवीजमनन्तकर्म-

शाखायुत करणपत्रमनङ्गपुष्पम् ।

आरुह्य द्रु खफलित चकित दयालो

लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ८ ॥

ससारसागरविशालकरालकाल

नक्रग्रहप्रसितनिग्रहविग्रहस्य ।

व्यग्रस्य रागनिचयोर्मिनिपीडितस्य

लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ९ ॥

ससारसागरनिमज्जनमुह्यमान

दीन विलोक्य विभो करुणानिधे माम् ।

प्रह्लादस्वेदपरिहारपरावतार

लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १० ॥

ससारघोरगहने चरतो मुरारे

मारोग्रभीकरमृगप्रचुरार्दितस्य ।

भार्तस्य मत्सरनिदाघसुदु खितस्य

लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ११ ॥

बद्धा गले यमभटा बहु तर्जयन्त  
 कर्षन्ति यत्र भवपाशशतैर्युत माम् ।  
 एकाकिन परवश चकित दयालो  
 लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १२ ॥

लक्ष्मीपते कमलनाभ सुरेश विष्णो  
 यज्ञेश यज्ञ मधुसूदन विश्वरूप ।  
 ब्रह्मण्य केशव जनार्दन वासुदेव  
 लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १३ ॥

एकेन चक्रमपरेण करेण शङ्ख-  
 मन्येन सिन्धुतनयामवलम्ब्य तिष्ठन् ।  
 वामेतरेण वरदाभयपद्मचिह्न  
 लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १४ ॥

अन्धस्य मे हृतविवेकमहाधनस्य  
 चौरैर्महाबलिभिरिन्द्रियनामधेयै ।  
 मोहान्धकारकुहरे विनिपातितस्य  
 लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १५ ॥

लक्ष्मीनृसिंहकरुणारसस्तोत्रम् ।

१७

प्रह्लादनारदपराशरपुण्डरीक-

व्यासादिभागवतपुगवहृन्निवाम ।

भक्तानुरुक्तपरिपालनपारिजात

लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १६ ॥

लक्ष्मीनृसिंहचरणाब्जमधुव्रतेन

स्तोत्र कृत शुभकर भुवि शकरेण ।

ये तत्पठन्ति मनुजा हरिभक्तियुक्ता

स्ते यान्ति तत्पदसरोजमखण्डरूपम् ॥ १७ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचायस्य

श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य

श्रीमच्छकरभगवत कृतौ

लक्ष्मीनृसिंहकरुणारसस्तोत्र सपूर्णम् ॥



॥ श्रीः ॥

## ॥ श्रीविष्णुभुजंगप्रयातस्तोत्रम् ॥

त्रिदश विभु निर्मल निर्विकल्प  
निरीह निराकारमोकारगम्यम् ।  
गुणातीतमव्यक्तमेक तुरीय  
पर ब्रह्म य वेद तस्मै नमस्ते ॥ १ ॥

विशुद्ध शिव शान्तमाद्यन्तशून्य  
जगज्जीवन व्योतिरानन्दरूपम् ।  
अदिग्दशकालव्यवच्छेदनीय  
त्रयी वक्ति य वेद तस्मै नमस्तै ॥ २ ॥

महायागपीठे परिभ्राजमाने  
धरण्यादितत्त्वात्मके शक्तियुक्त ।  
गुणाहस्करे बह्निबिम्बार्धमध्ये  
समाप्तीनर्मोर्कार्णिकेऽष्टाक्षराब्जे ॥ ३ ॥

समानोदितानेकसूर्येन्दुकोटि-  
 प्रभापूरतुल्यद्युतिं दुर्निरीक्षम् ।  
 न शीतं न चाष्णं सुवर्णावदात-  
 प्रसन्नं सदानन्दसवित्स्वरूपम् ॥ ४ ॥

सुनासापुटं सुन्दरभ्रूललाटं  
 किरीटोचिताकुञ्चितस्निग्धकेशम् ।  
 स्फुरत्पुण्डरीकाभिरामायताक्षं  
 समुत्फुल्लरत्नप्रसूनावतसम् ॥ ५ ॥

लसत्कुण्डलामृष्टगण्डस्थलान्तं  
 जपारागचोराधरं चारुहासम् ।  
 अलिव्याकुलामोदिमन्दारमालं  
 महोरस्फुरत्कौस्तुभोदारहारम् ॥ ६ ॥

सुरत्नाङ्गदैरन्वितं बाहुदण्डै-  
 श्रुतुभिश्चलत्कङ्कणालकृताग्रैः ।  
 उदारोदरालकृतपीत्रवस्त्रं  
 पद्मद्वन्द्वनिर्धूतपद्माभिरामम् ॥ ७ ॥

स्वभक्तेषु सदर्शिताकारमेव  
 सदा भावयन्सनिरुद्धेन्द्रियाश्च ।  
 दुराप नरो याति ससारपार  
 परस्मै परेभ्योऽपि तस्मै नमस्ते ॥ ८ ॥

श्रिया शातकुम्भद्युतिस्त्रिगधकान्त्या  
 धरण्या च दूर्वादलश्यामलाङ्गया ।  
 कलत्रद्वयेनामुना तोषिताय  
 त्रिलोकीगृहस्थाय विष्णो नमस्ते ॥ ९ ॥

शरीर कलत्र सुत बन्धुवर्गं  
 वयस्य धन सद्म भृत्य भुव च ।  
 समस्त परित्यज्य हा कष्टमेको  
 गमिष्यामि दु खेन दूर किलाहम् ॥ १० ॥

जरेय पिशाचीव हा जीवतो मे  
 वसामत्ति रक्त च मास बल च ।  
 अहो देव सीदामि दीनानुकम्पि  
 निष्कमद्यापि हन्त त्वयोदासितव्यम् ॥ ११ ॥

कफव्याहृतोष्णोल्बणश्वासवेग  
व्यथाविष्फुरत्सर्वमर्मास्थिबन्धाम् ।  
विचिन्त्याहमन्त्यामसख्यामवस्था  
विभेमि प्रभो किं करोमि प्रसीद ॥ १२ ॥

लपन्नच्युतानन्त गोविन्द विष्णो  
मुरारे हरे नाथ नारायणेति ।  
यथानुस्मरिष्यामि भक्त्या भवन्त  
तथा मे दयाशील देव प्रसीद ॥ १३ ॥

भुजगप्रयात पठेद्यस्तु भक्त्या  
समाधाय चित्ते भवन्त मुरारे ।  
स मोह विहायाशु युष्मत्प्रसादा  
त्समाश्रित्य योग ब्रजत्यच्युत त्वाम् ॥ १४ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोविन्दभग  
वत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ  
श्रीविष्णुभुजगप्रयातस्तोत्र सपूर्णम् ॥

---

॥ श्री ॥

## ॥ विष्णुपादादिकेशान्तस्तोत्रम् ॥

—\*—

लक्ष्मीभर्तुर्भुजाग्रे कृतवसति सित यस्य रूप विशाल  
नीलाद्रेस्तुङ्गशृङ्गस्थितमिव रजनीनाथबिम्ब विभाति ।  
पायान्न पाञ्चजन्य स दितिसुतकुलत्रासनै पूरयन्स्वै  
निध्वानैर्नीरदौघध्वनिपरिभवदैरम्बर कम्बुराज ॥ १ ॥

आहुर्यस्य स्वरूप क्षणमुखमखिल सूरय कालमेत  
ध्वान्तस्यैकान्तमन्त यदपि च परम सर्वधाम्ना च धाम ।  
चक्र तच्चक्रपाणेर्दितिजतनुगलद्रक्तधाराक्तधार  
शश्वन्नो विश्ववन्द्य वितरतु विपुल शर्म धर्माशुशोभम् ॥

अव्याग्निर्घातघोरो हरिभुजपवनामर्शनाध्मातमूर्ते  
रस्मान्विस्मेरनेत्रत्रिदशनुतिवच साधुकारै सुतार ।  
सर्वं सहर्तुमिच्छोररिक्कुलभुवन स्फारविष्फारनाद  
सयत्कल्पान्तसिन्धौ शरसलिलघटावार्मुच कार्मुकस्य ॥

जीमूतश्यामभासा मुहुरपि भगवद्बाहुना मोहयन्ती  
 युद्धेषूद्धूयमाना झटिति तटिदिवालक्षयते यस्य मूर्ति ।  
 सोऽसिन्हासाकुलाक्षत्रिदशरिपुवपु शोणितास्वादतृप्नो  
 नित्यानन्दाय भूयान्मधुमथनमनोनन्दनो नन्दको न ॥

कम्पाकारा मुरारे करकमलतलेनानुरागाद्गृहीता  
 सम्यगवृत्ता स्थिताप्र सपदि न सहते दर्शनं या परेषाम् ।  
 राजन्ती दैत्यजीवासवमदमुदिता लोहितालेपनाद्रां  
 काम दीप्ताशुकान्ता प्रदिशतु दयितेवास्य कौमोदकी न ॥

यो विश्वप्राणभूतस्तनुरपि च हरेर्यानकेतुस्वरूपो  
 य सचिन्त्यैव सद्य स्वयमुरगवधूवर्गगर्भा पतन्ति ।  
 चञ्चलण्डोरुतुण्डत्रुटितफणिवसारक्तपङ्काङ्कितास्य  
 वन्दे छन्दोमय त खगपतिममलस्वर्णवर्णं सुपर्णम् ॥ ६ ॥

विष्णोर्विश्वेश्वरस्य प्रवरशयनकृत्सर्वलोकैकघर्ता  
 सोऽनन्त सर्वभूत पृथुविमलयशा सर्ववेदैश्च वेद्य ।  
 पाता विश्वस्य शश्वत्सकलसुररिपुध्वसन पापहन्ता  
 सर्वज्ञ सर्वसाक्षी सकलविषभयात्पातु भोगीश्वरो न ॥

वाग्भूगौर्यादिभेदैर्विदुरिह मुनयो या यदीयैश्च पुसा  
 कारुण्यार्द्रै कटाक्षै सकृदपि पतितै सपद स्यु समग्रा ।  
 कुन्देन्दुस्वच्छमन्दस्मितमधुरमुखाम्भोरुहा सुन्दराङ्गी  
 वन्दे वन्द्यामशेषैरपि मुरभिदुरोमन्दिरामिन्दिरा ताम् ॥

या सूते सत्त्वजाल सकलमपि सदा सनिधानेन पुसो  
 धत्ते या तत्त्वयोगाच्चरमचरमिद भूतये भूतजातम् ।  
 धार्त्री स्थात्री जनित्री प्रकृतिमविकृतिं विश्वशक्तिं विधात्रीं  
 विष्णोर्विश्वात्मनस्ता विपुलगुणमयीं प्राणनाथा प्रणौमि ॥

येभ्योऽसूयद्भिरुच्चै सपदि पदमुरु त्यज्यते दैत्यवर्गे-  
 र्हेभ्यो धर्तुं च मूर्ध्ना स्पृहयति सतत सर्वगीर्वाणवर्ग ।  
 नित्य निर्मूलयेयुर्निचिततरममी भक्तिनिघ्नात्मना न  
 पद्माक्षस्याङ्घ्रिपद्मद्वयतलनिलया पासव पापपङ्कम् ॥

रेखा लेखादिवन्द्याश्चरणतलगताश्चक्रमत्स्यादिरूपा  
 स्निग्धा सूक्ष्मा सुजाता मृदुललिततरक्षौमसूत्रायमाणा ।  
 दद्युर्नो मङ्गलानि भ्रमरभरजुषा कोमलेनाब्धिजाया  
 कम्पेणाग्नेह्यमाना किसलयमृदुना पाणिना चक्रपाणे ॥

यस्मादाक्रामतो द्या गरुडमणिशिलाकेतुदण्डायमाना  
 दाश्च्योतन्ती बभासे सुरसरिदमला वैजयन्तीव कान्ता ।  
 भूमिष्ठो यस्तथान्यो भुवनगृहवृहत्स्तम्भशोभा दधौ न  
 पातामेतौ पयोजोदरललिततलौ पङ्कजाक्षस्य पादौ ॥

आक्रामद्गया त्रिलोकीमसुरसुरपती तत्क्षणादेव नीतौ  
 याभ्या वैरोचनीन्द्रौ युगपदपि विपत्सपदोरेकधाम ।  
 ताभ्या ताम्रोदराभ्या मुहुरहमजितस्याञ्चिताभ्यामुभाभ्या  
 प्राज्यैश्वर्यप्रदाभ्या प्रणतिमुपगत पादपङ्केरुहाभ्याम् ॥

येभ्यो वर्णश्चतुर्थश्चरमत उदभूदादिसग प्रजाना  
 साहस्री चापि सरया प्रकटमभिहिता सर्ववेदेषु येषाम् ।  
 प्राप्ता विश्वभरा यैरतिवितततनोर्विश्वमूर्तेर्विराजो  
 विष्णोस्तेभ्यो महद्भ्य सततमपि नमोऽस्त्वङ्घ्रिपङ्केरुहेभ्य ॥

विष्णो पादद्वयाग्रे विमलनखमणिभ्राजिता राजते या  
 राजीवस्येव रम्या हिमजलकणिकालकृताग्रा दलाली ।  
 अस्माक विस्मयार्हाण्यखिलजनमन प्रार्थनीया हि सेय  
 दद्यादाद्यानवद्या ततिरतिरुचिरा मङ्गलान्यङ्गुलीनाम् ॥

यस्या दृष्ट्वामलाया प्रतिकृतिममरा सभवन्त्यानमन्त  
 सेन्द्रा सान्द्रीकृतेर्ष्यास्त्वपरसुरकुलाशङ्कयातङ्कवन्त ।  
 सा सद्य सातिरेका सकलसुखकरीं सपद साधयेन्न  
 अश्वच्चार्वशुचक्रा चरणनलिनयोश्चक्रपाणेर्नखाली ॥

पादाभोजन्मसेवासमवनतसुरव्रातभास्वत्किरीट-  
 प्रत्युप्तोच्चावचाश्मप्रवरकरगणैश्चित्रित यद्विभाति ।  
 नम्राङ्गाना हरेर्नो हरिदुपलमहाकूर्मसौन्दर्यहारि-  
 च्छाय श्रेय प्रदायि प्रपद्युगमिद् प्रापत्पापमन्तम् ॥

श्रीमलयौ चारुवृत्ते करपरिमलनानन्दहृष्टे रमाया  
 सौन्दर्याढ्येन्द्रनीलोपलरचितमहादण्डयो कान्तिचोरे ।  
 सूरिन्द्रै स्तूयमाने सुरकुलसुखदे सूदितारातिसथे  
 जङ्घे नारायणीये मुद्गुरपि जयतामस्मदहो हरन्त्यौ ॥

सम्यक्साह्य विधातु सममिव सतत जङ्घयो खिन्नयोर्ये  
 भारीभूतोरुदण्डद्वयभरणकृतोत्तम्भभाव भजेते ।  
 चित्तादर्श निधातु महितमिव सता ते समुद्रायमान  
 वृत्ताकारे विधत्ता हृदि मुदमजितस्नानिश जानुनी न ॥

देवो भीतिं विधातु सपदि विदधतौ कैटभाख्य मधु चा  
 प्यारोप्यारूढगर्वावधिजलधि ययोरदिदैत्यौ जघान ।  
 वृत्तावन्योन्यतुल्यौ चतुरमुपचय बिभ्रतावभ्रनीला  
 वूरु चारु हरेस्तौ मुदमतिशयिनीं मानस नो विधत्ताम् ॥

पीतेन द्योतते यच्चतुरपरिहितेनाम्बरेणात्युदार  
 जातालकारयोग जलमिव जलधेर्बाडबाग्निप्रभाभि ।  
 एतत्पातित्यदान्नो जघनमतिघनादेनसो माननीय  
 सातत्येनैव चेतोविषयमवतरत्पातु पीताम्बरस्य ॥ २ १ ॥

यस्या दाम्ना त्रिधात्रो जघनकलितया भ्राजतेऽङ्ग यथाब्धे-  
 र्मध्यस्थो मन्दराद्रिभुजगपतिमहाभागसनद्धमध्य ।  
 काञ्ची सा काञ्चनाभा मणिवरकिरणैरुल्लसद्भि प्रदीप्ता  
 कल्या कल्याणदात्री मम मतिमनिश कम्परूपा करोतु ॥

उन्नन्न कम्पमुच्चैरुपचितमुदभूद्यत्र पत्रैर्विषिचै  
 पूर्वं गीर्वाणपूज्य कमलजमधुपस्यास्पद तत्पयोजम् ।  
 यस्मिन्नीलाशमनीलैस्तरलरुचिजलै पूरिते केलिबुद्धया  
 नालीकाक्षस्य नाभीसरसि वसतु नश्चित्तहसश्चिराय ॥

२८ विष्णुपादादिकेशातस्तोत्रम् ।

पाताल यस्य नाल वलयमपि दिशा पत्रपङ्कीर्णगेन्द्रा-  
न्विद्वास केसरालीर्विदुरिह विपुला कर्णिका स्वर्णशैलम् ।  
भूयाद्नायत्स्वयभूमधुकरभवन भूमय कामद नो  
नालीक नाभिपद्माकरभवमुरु तन्नागशय्यस्य शौरे ॥

आदौ कल्पस्य यस्मात्प्रभवति वितत विश्वमेतद्विकल्पै  
कल्पान्ते यस्य चान्त प्रविशति सकल स्थावर जङ्गम च ।  
अत्यन्ताचिन्त्यमूर्तेश्चिरतरमजितस्यान्तरिक्षस्वरूपे  
तस्मिन्नस्माकमन्त करणमतिमुदा क्रीडतात्क्रोडभागे ॥

कान्त्यम्भ पूरपूर्णे लसदसितवलीभङ्गभास्वत्तरङ्गे  
गम्भीराकारनाभीचतुरतरमहावर्तगोभिन्नुदारे ।  
क्रीडत्वानद्वहेमोदरनहनमहाबाडबाग्निप्रभाह्ये  
काम दामोदरीयोदरसलिलनिधौ चित्तमत्स्यश्चिर न ॥

नाभीनालीकमूलादधिकपरिमलोन्मोहितानामलीना  
माला नीलेव यान्ती स्फुरति रुचिमती वक्त्रपद्मोन्मुखी या ।  
रम्या सा रोमराजिर्महितरुचिकरी मध्यभागस्थ विष्णो-  
श्चित्तस्था मा विरसीश्चिरतरमुचिता साधयन्ती श्रीय न ॥

सस्तीर्णं कौस्तुभाशुप्रसरकिसलयैर्मुग्धमुक्ताफलाढ्य  
 श्रीवत्सोल्लासि फुल्लप्रतिनववनमालाङ्कि राजद्भुजान्तम् ।  
 वक्ष श्रीवृक्षकान्त मधुकरनिकरश्यामल शार्ङ्गपाणे  
 ससाराध्वश्रमार्तेरुपवनमिव यत्सेवित तत्प्रपद्ये ॥ २८ ॥

कान्त वक्षो नितान्त विदधदिव गल कालिमा कालशत्रो  
 रिन्दोर्बिम्ब यथाङ्को मधुप इव तरोर्मश्वरी राजत य ।  
 श्रीमान्नित्य विधेयादविरलमिलित कौस्तुभश्रीप्रतानै  
 श्रीवत्स श्रीपत स श्रिय इव दयितो वत्स उच्चै श्रिय न ॥

सभूयाम्भोधिमध्यात्सपदि महजया य श्रिया सनिधत्ते  
 नीले नारायणोर स्थलगगनतले हारतारोपसेव्ये ।  
 आशा सर्वा प्रकाशा विदधदपिदधच्चात्मभासान्यतेजा  
 स्याश्चर्यस्याकरो नो द्युमणिरिव मणि कौस्तुभ सोऽस्तुभूत्यै ॥

या वायावानुकूल्यात्सरति मणिरुचा भासमाना समाना  
 साक साकम्पमसे वसति विदधती वासुभद्र सुभद्रम् ।  
 सार सारङ्गसधैर्मुखरितकुसुमा मेचकान्ता च कान्ता  
 माला मालालितास्मान्न विरमतु सुखैर्योजयन्ती जयन्ती ॥

हारस्योरुप्रभाभि प्रतिनववनमालाशुभि प्राशुरूपै  
 श्रीभिश्चाप्यङ्गदाना कबलितरुचि यन्निष्कभाभिश्च भाति ।  
 बाहुल्येनैव बद्धाञ्जलिपुटमजितस्याभियान्चामहे त  
 द्वन्धार्ति बाधता नो बहुविहितिकरीं बन्धुर बाहुमूलम् ॥

विश्वत्राणैकदीक्षास्तदनुगुणगुणक्षत्रनिर्माणदक्षा  
 कर्तारो दुर्निरूपस्फुटगुणयशसा कर्मणामद्भुतानाम् ।  
 शार्ङ्ग बाण कृपाण फलकमरिगदे पद्मशङ्खौ सहस्र  
 विभ्राणा शस्त्रजाल मम दधतु हरर्वाहवो मोहहानिम् ॥

कण्ठाकल्पोद्गतैर्ये कनकमयलसत्कुण्डलोत्थैरुदारै  
 रुद्योतै कौस्तुभस्याप्युरुभिरुपचितश्चित्रवर्णो विभाति ।  
 कण्ठाश्लेषे रमाया करवलयपदैर्मुद्रिते भद्ररूपे  
 वैकुण्ठीयेऽत्र कण्ठे वसतु मम मति कुण्ठभाव विहाय ॥

पद्मानन्दप्रदाता परिलसदरुणश्रीपरीताम्रभाग  
 काले काले च कम्बुप्रवरशशधरापूरणे य प्रवीण ।  
 वक्त्राकाशान्तरस्थस्तिरयति नितरा दन्ततारौघशोभा  
 श्रीभर्तुर्वन्तबासोद्युमणिदधतमोनाशनायास्त्वसौ न ॥

नित्य स्नेहातिरेकाञ्जिकमितुरल विप्रयोगाक्षमा या  
 वक्त्रेन्दोरन्तराले कृतवसतिरिवाभाति नक्षत्रराजि ।  
 लक्ष्मीकान्तस्थ कान्ताकृतिरतिविलसन्मुग्धमुक्तावलिश्री-  
 र्दन्ताली सतत सा नतिनुतिनिरतानक्षतान्क्षतान्न ॥

ब्रह्मन्ब्रह्मण्यजिह्वा मतिमपि कुरुषे देव सभावये त्वा  
 शभो शक्र त्रिलोकीभवसि किममरैर्नारदाद्या सुख व ।  
 इत्थ सेवावनम्र सुरमुनिनिकर वीक्ष्य विष्णो प्रसन्न  
 स्यास्येन्दोरास्त्रवन्ती वरवचनसुधाह्लादयेन्मानस न ॥

कर्णस्थस्वर्णकम्रोज्ज्वलमकरमहाकुण्डलप्रोतदीप्य  
 न्माणिक्यश्रीप्रतानै परिमिलितमलिश्यामल कोमल यत् ।  
 प्रोद्यत्सूर्याशुराजन्मरकतमुकुराकारचोर मुरारे  
 गार्ढामागाभिर्नी न शमयतु विपद् गण्डयोर्मण्डल तत् ॥

वक्त्राम्भोजे लसन्त मुहुरधरमणिं पक्वबिम्बाभिराम  
 दृष्ट्वा इष्टुं शुक्लस्व स्फुटभवतरतस्तुण्डवण्डायते य ।  
 घोण शोणीकृतात्मा श्रवणयुगलसत्कुण्डलोच्चैर्धुरारै  
 प्राणरूपस्थानिलस्य प्रसरणसरणि प्राणदानाय न स्यात् ॥

दिक्कालौ वेदयन्तौ जगति मुद्गरिमौ मचरन्तौ रवीन्दू  
 त्रैलोक्यालोकदीपावभिदधति ययोरेव रूप मुनीन्द्रा ।  
 अस्मानब्जप्रभे ते प्रचुरतरकूपानिर्भर प्रेक्षमाणे  
 पातामाताम्रशुक्लासितरुचिरुचिरे पद्मनेत्रस्य नेत्रे ॥४०॥

पातात्पातालपातात्पतगपतिगतेभ्रूयुग भुममध्य  
 येनेषञ्चालितेन स्वपदानियमिता सासुरा देवसधा ।  
 नृत्यलालाटारङ्गे रजनिकरतनार्धखण्डावदाते  
 कालव्यालद्वय वा विलमति समया वालिकामातर न ॥

लक्ष्माकारालकालिस्फुरदलिकशशाङ्कार्धसदर्शमील-  
 नेत्राम्भोजप्रबोधोत्सुकनिभृततरालीनभृङ्गच्छटाभ ।  
 लक्ष्मीनाथस्य लक्ष्यीकृतविबुधगणापाङ्गबाणासनार्ध-  
 च्छाये नो भूरिभूतिप्रभवकुशलते भ्रूलते पालयेताम् ॥

रूक्षस्मारक्षुचापन्युतशरनिकरक्षीणलक्ष्मीकटाक्ष-  
 प्रोत्फुल्लपद्ममालाविलसितमहितस्फाटिकैशानलिङ्गम् ।  
 भूयाद्भूयो विभूतै मम भुवनपतेभ्रूलताद्वन्द्वमध्या  
 दुत्थ तत्पुण्ड्रमूर्ध्वं जनिमरणतम खण्डन मण्डन च ॥

पीठीभूतालकान्त कृतमकुटमहादेवलिङ्गप्रतिष्ठे

लालाटे नाट्यरङ्गे विकटतरतटे कैटभारेश्चिराय ।

प्रोद्धाट्यैवात्मतन्द्रीप्रकटपटकुटीं प्रस्फुरन्ती स्फुटाङ्ग

पट्टीय भावनारया चटुलमतिनटी नाटिका नाटयेन्न ॥

मालालीवालिघाञ्ज कुवलयकलिता श्रीपते कुन्तलाली

कालिन्द्यारुह्य मूर्ध्नो गलति हरशिर स्वर्धुनीस्पर्धया नु ।

राहुर्वा याति वक्त्र सकलशशिकलाभ्रान्तिलोलान्तरात्मा

लोकैरालोक्यते या प्रदिशतु मतत साखिल मङ्गल न ॥

सुप्ताकारा प्रसुप्ते भगवति विबुधैरप्यदृष्टस्वरूपा

व्याप्तव्योमान्तरालास्तरलमणिरुचा रञ्जिता स्पष्टभास ।

देहच्छायोद्गमाभा रिपुवपुरगरुडोषरोषाग्निधूस्या

केशा केशिद्विषो नो विदधतु विपुलक्लेशपाशप्रणाशम् ॥

यत्र प्रत्युत्तरन्नप्रवरपरिलसद्भूरिरोचिष्प्रतान-

स्फूर्त्या मूर्तिर्भुरारेद्युमणिशतचित्तव्योमवहुर्निरीक्षया ।

कुर्वत्पारेपयोधि ज्वलदकृशशिखाभास्वदौर्वाग्निशङ्का

शश्वन्न शर्म दिश्यात्कलिकलुषतम पाटन ततिकरीटम् ॥

भ्रान्त्वा भ्रान्त्वा यदन्तस्त्रिभुवनगुरुरण्यब्दकोटीरनेका  
 गन्तु नान्त समर्थो भ्रमर इव पुनर्नाभिनालीकनालात् ।  
 उन्मज्जन्नूर्जितश्रीस्त्रिभुवनमपर निममे तत्सदृक्ष  
 देहाम्भोधि स देयान्निरवधिरमृत दैत्यविद्वेषिणो न ॥

मत्स्य कूर्मो वराहो नरहरिणपतिवामनो जामदग्न्य  
 काकुत्स्थ कसघाती मनसिजविजयी यश्च कल्किर्भविष्यन् ।  
 विष्णोरशावतारा भुवनहितकरा धर्मसस्थापनाथा  
 पायासुर्मा त एते गुरुतरकरुणाभारस्त्रिनाशया ये ॥४९॥

यस्माद्वाचो निवृत्ता सममपि मनसा लक्षणामीक्षमाणा  
 स्वार्थालाभात्परार्थव्यपगमकथनश्लाघिनो वेदवादा ।  
 नित्यानन्द स्वसविन्निरवधिविमलस्वान्तसक्रान्तबिम्ब  
 ऋचायापत्यापि नित्य सुरयति यमिनो यत्तद्व्यान्महो न ॥

आपादादा च शीर्षाद्वपुरिदमनघ वैष्णव य स्वचित्ते  
 धत्ते नित्य निरस्ताखिलकलिकलुष सततान्त प्रमोदम् ।  
 जुह्वज्जिह्वाकृशानौ हरिचरितहवि स्तोत्रमन्त्रानुपाठै  
 स्तत्पादाम्भोरुहाभ्या सततमपि नमस्कुर्महे निर्मलाभ्याम् ॥

विष्णुपादादिकेशा तस्तोत्रम् ।

३५

मोदात्पादादिकेशस्तुतिमितिरचिता कीर्तयित्वा त्रिधा  
पादाब्जद्वन्द्वसेवासमयनतमतिर्मस्तकेनानभेद्य ।  
उन्मुक्त्यैवात्मनैनोनिचयकवचक पञ्चतामेल्य भानो-  
बिम्बान्तर्गोचर स प्रविशति परमानन्दमात्मस्वरूपम् ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य  
श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य  
श्रीमच्छंकरभगवत कृतौ  
विष्णुपादादिकेशान्तस्तोत्र  
सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

## ॥ पाण्डुरङ्गाष्टकम् ॥

महायोगपीठे तटे भीमरथ्या  
वर पुण्डरीकाय दातु मुनीन्द्रै ।  
समागत्य तिष्ठन्तमानन्दकन्द  
परब्रह्मलिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ १ ॥

तटिद्वासस नीलमेघावभास  
रमामन्दिर सुन्दर चित्प्रकाशम् ।  
वर त्विष्टकाया समन्यस्तपाद्  
परब्रह्मलिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ २ ॥

प्रमाण भवाब्धेरिदं मामकाना  
नितम्ब कराभ्या धृतो यन तस्मात् ।  
विधातुर्वसत्यै धृतो नाभिकोश  
परब्रह्मलिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ३ ॥

स्फुरत्कौस्तुभालकृत कण्ठदेशे  
श्रिया जुष्टकेयूरक श्रीनिवासम् ।  
शिव शन्तमीड्य वर लोकपाल  
परब्रह्मलिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ४ ॥

शरच्चन्द्रबिम्बानन चारुहास  
लसत्कुण्डलाक्रान्तगण्डस्थलान्तम् ।  
जपारागबिम्बाधर कञ्जनेत्र  
परब्रह्मलिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ५ ॥

किरीटोज्ज्वलत्सर्वदिकप्रान्तभाग  
सुरैरर्चित दिव्यरत्नैरनर्घै ।  
त्रिभङ्गाकृतिं बर्हमाल्यावतस  
परब्रह्मलिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ६ ॥

विभु वेणुनाद चरन्त दुरन्त  
स्वय लीलया गोपवेष दधानम् ।  
गवा वृन्दकानन्दद चारुहास  
परब्रह्मलिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ७ ॥

अज रुक्मिणीप्राणसजीवन त  
 पर धाम कैवल्यमेक तुरीयम् ।  
 प्रसन्न प्रपन्नार्तिह देवदेव  
 परब्रह्मलिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ८ ॥

स्तव पाण्डुरङ्गस्य वै पुण्यद ये  
 पठन्त्येकचित्तेन भक्त्या च नित्यम् ।  
 भवाम्भोनिधि ते वितीर्त्वान्तकाले  
 हरेरालयं शाश्वतं प्राप्नुवन्ति ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य  
 श्रीगोविंदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य  
 श्रीमच्छंकरभगवतः कृतौ  
 पाण्डुरङ्गाष्टकसंपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

## ॥ अच्युताष्टकम् ॥

---

अच्युत केशव रामनारायण  
कृष्णदामोदर वासुदेव हरिम् ।  
श्रीधर माधव गोपिकावल्लभ  
जानकीनायक रामचन्द्र भजे ॥ १ ॥

अच्युत केशव सत्यभामाधव  
माधव श्रीधर राधिकाराधितम् ।  
इन्दिरामन्दिर चेतसा सुन्दर  
देवकीनन्दन नन्दज सदधे ॥ २ ॥

विष्णवे जिष्णवे शङ्खिने चक्रिणे  
रुक्मणीरागिणे जानकीजानये ।  
वल्लवीवल्लभायार्चितायात्मने  
कसविध्वसिने वशिने ते नम ॥ ३ ॥

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण  
 श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे ।  
 अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज  
 द्वारकानायक द्रौपदीरक्षक ॥ ४ ॥

राक्षसक्षोभित सीतया शोभितो  
 दण्डकारण्यभूपुण्यताकारणम् ।  
 लक्ष्मणेनान्वितो वानरै सेवितो  
 ऽगस्त्यसपूजितो राघव पातु माम् ॥ ५ ॥

धेनुकारिष्टहानिष्टकृहेषिणा  
 केशिहा कसहद्वशिकावादक ।  
 पूतनाकापक सूरजाखलनो  
 बालगोपालक पातु मा सर्वदा ॥ ६ ॥

विद्युदुद्योतवत्प्रस्फुरद्वासस  
 प्रावृडम्भोदवत्प्रोल्लसद्दिग्महम् ।  
 वन्यथा मालया शोभितोर स्थल  
 लोहिताङ्घ्रिद्वय वारिजाक्ष भजे ॥ ७ ॥

कुञ्चितै कुन्तलैर्भ्राजमानानन  
रत्नमौलिं लसत्कुण्डल गण्डयो ।  
हारकेयूरक कङ्कणप्रोज्ज्वल  
किंकिणीमञ्जुल श्यामल त भजे ॥ ८ ॥

अच्युतस्याष्टक य पठेदिष्टद  
प्रेमत प्रत्यह पूरुष सस्पृहम् ।  
वृत्तत सुन्दर वेद्यविश्वभर  
तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्वरम् ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्रजकाचायस्य  
श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य  
श्रीमच्छंकरभगवत कृतौ  
अच्युताष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

## ॥ कृष्णाष्टकम् ॥

श्रियाश्लिष्टो विष्णु स्थिरचरगुरुर्वेदविषयो  
धिया साक्षी शुद्धो हरिसुरहन्ताब्जनयन ।  
गदी शङ्खी चक्री विमलवनमाली स्थिररुचि  
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय ॥१॥

यत् सर्वं जातं वियदनिलमुख्यं जगदिदं  
स्थितौ नि शेषं योऽवति निजसुखाशेन मधुहा ।  
लये सर्वं स्वस्मिन्हरति कलया यस्तु स विभु  
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय ॥२॥

असूनायम्यादौ यमनियमसुरयै सुकरणै  
निरुद्धथेदं चित्तं हृदि विलयमानीय सकलम् ।  
यमीड्यं पश्यन्ति प्रवरमतयो मायिनमसौ  
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय ॥

पृथिव्या तिष्ठन्त्यो यमयति महीं वेद न धरा  
 यमित्यादौ वेदो वदति जगतामीशममलम् ।  
 नियन्तार ध्येय मुनिसुरनृणा मोक्षदमसौ  
 शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय ॥

महेन्द्रादिर्देवो जयति दितिजान्यस्य बलतो  
 न कस्य स्वातन्त्र्य कचिदपि कृतौ यत्कृतिमृते ।  
 बलारातेर्गर्व परिहरति योऽसौ विजयिन  
 शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय ॥

विना यस्य ध्यान ब्रजति पशुता सूकरमुखा  
 विना यस्य ज्ञान जनिमृतिभय याति जनता ।  
 विना यस्य स्मृत्या कृमिशतजनिं याति स विभु  
 शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय ॥६॥

नरातङ्कोदृक्क शरणशरणो भ्रान्तिहरणो  
 घनश्यामो वामो ब्रजशिशुवयस्योऽर्जुनसख ।  
 स्वयभूर्भूताना जनक उचिताचारसुखद  
 शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय ॥७॥

यदा धर्मगलानिर्भवति जगता क्षोभकरणी  
 तदा लोकस्वामी प्रकटितवपु सेतुधृदज ।  
 सता घाता स्वच्छो निगमगणगीतो ब्रजपति  
 शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय ॥८॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य  
 श्रीगोविंदभगवत्पूज्यैश्वर्यादशिष्यस्य  
 श्रीमच्छंकरभगवत कृतौ  
 कृष्णाष्टक संपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

# ॥ हरिस्तुतिः ॥



स्तोष्ये भक्त्या विष्णुमनादिं जगदादिं  
यस्मिन्नेतत्सस्तुतिचक्र भ्रमतीत्यम् ।  
यस्मिन्दृष्टे नश्यति तत्सस्तुतिचक्र  
त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १ ॥

यस्यैकाशादित्थमशेष जगदेत-  
त्प्रादुर्भूत येन पिनद्ध पुनरित्थम् ।  
येन व्याप्त येन विबुद्ध सुखदु खै  
स्त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २ ॥

सर्वज्ञो यो यश्च हि सर्व सकलो यो  
यश्चानन्दोऽनन्तगुणो यो गुणधामा ।  
यश्चाव्यक्तो व्यक्तसमस्त सदसद्य  
स्त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ३ ॥

यस्मादन्यन्नास्त्यपि नैव परमार्थं  
 दृश्यादन्यो निर्विषयज्ञानमयत्वात् ।  
 ज्ञातृज्ञानज्ञेयविहीनाऽपि सदा ज्ञ  
 स्त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ४ ॥

आचार्येभ्यो लब्धसुसूक्ष्मान्युततत्त्वा  
 वैराग्येणाभ्यासबलाच्चैव द्रढिम्ना ।  
 भक्त्यैकाग्र्यध्यानपरा य विदुरीश  
 त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ५ ॥

प्राणानायम्योमिति चित्त हृदि रुध्वा  
 नान्यत्स्मृत्वा तत्पुनरत्रैव विलाप्य ।  
 क्षीणे चित्त भास्तिरस्मीति विदुर्य  
 त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ६ ॥

य ब्रह्माख्य देवमनन्य परिपूर्णं  
 हृत्स्थ भक्तैर्लभ्यमज सूक्ष्ममत्कर्षम् ।  
 ध्यात्वात्मस्थ ब्रह्मविदो य विदुरीश  
 त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ७ ॥

मात्रातीत स्वात्मविकासात्मविबोध  
 ज्ञेयातीत ज्ञानमय हृद्युपलभ्य ।  
 भावग्राह्यानन्दमनन्य च विदुर्यं  
 त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ८ ॥

यद्यद्वेद्य वस्तुसतत्त्व विषयाख्य  
 तत्तद्ब्रह्मैवेति विदित्वा तदह च ।  
 ध्यायन्त्येव य सनकाद्या मुनयोऽज  
 त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ९ ॥

यद्यद्वेद्य तत्तदह नेति विहाय  
 स्वात्मज्योतिर्ज्ञानमयानन्दमवाप्य ।  
 तस्मिन्नस्मीत्यात्मविदो य विदुरीश  
 त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १० ॥

हित्वाहित्वा दृश्यमशेष सविकल्प  
 मत्वा शिष्ट भादृशिमात्र गगनाभम् ।  
 त्यक्त्वा देह य प्रविशन्त्यच्युतभक्ता-  
 स्त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ११ ॥

सर्वत्रास्त सर्वशरीरी न च सर्व  
 सर्वं वेत्त्येवेह न य वेत्ति च सव ।  
 सर्वत्रान्तर्यामितयेत्थ यमयन्य-  
 न्त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १२ ॥

सर्वं हृष्ट्वा स्वात्मनि युक्त्या जगदेत-  
 दृष्ट्वात्मान चैवमज सर्वजनेषु ।  
 सर्वात्मैकोऽस्मीति विदुर्य जनहृत्स्थ  
 त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १३ ॥

सर्वत्रैक पश्यति जिघ्रत्यथ भुङ्क्ते  
 स्पृष्ट्वा श्रोता बुध्यति चेत्याहु रिम यम ।  
 साक्षी चास्ते कर्तृषु पश्यन्निति चान्ये  
 त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १४ ॥

पश्यन्मृण्वन्नल विजानन्रसयन्स  
 जिघ्रद्विभ्रहेहामिम जीवतयेत्थम् ।  
 इत्यात्मान य विदुरीश विषयज्ञ  
 त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १५ ॥

जाम्रहृद्वा स्थूलपदार्थानथ माया  
 दृष्ट्वा स्वप्नेऽथापि सुषुप्तौ सुखनिद्राम ।  
 इत्यात्मान वीक्ष्य मुदास्त च तुरीये  
 त मसारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १६ ॥

पश्यञ्छुद्धोऽप्यश्वर एका गुणभेदा  
 नानाकारान्स्फाटिकवद्भाति विचित्र ।  
 भिन्नशिल्लन्नश्रायमज कर्मफलैर्य  
 स्त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १७ ॥

ब्रह्मा विष्णु रुद्रहुताशौ रविचन्द्रा  
 विन्द्रो वायुर्यज्ञ इतीत्थ परिकल्प्य ।  
 एक मन्त य बहुधाहुर्मतिभेदा  
 त्त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १८ ॥

सत्य ज्ञान शुद्धमनन्त व्यतिरिक्त  
 शान्त गूढ निष्कलमानन्दमनन्यम् ।  
 इत्याहादौ य वरुणोऽसौ भृगवेऽज  
 त्त मसारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १९ ॥

कोशानेतान्पञ्च रसादीनतिहाय

ब्रह्मास्मीति स्वात्मनि निश्चित्य ऋशिस्थम ।

पित्रा शिष्टो वेद भृगुर्यं यजुरन्ते

त ममारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २० ॥

येनाविष्टो यस्य च शक्त्या यदधीन

क्षेत्रज्ञोऽय कारयिता जन्तुषु कर्तु ।

कर्ता भोक्तात्मात्र हि यच्छक्त्यधिरूढ

स्त मसारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २१ ॥

सृष्ट्वा सर्वं स्वात्मतथैवत्यमतर्क्यं

व्याप्याथान्त कृत्स्नमिदं स्रष्टमशेषम ।

मच्च त्यक्त्वाभूत्परमात्मा स य एक

स्त मसारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २२ ॥

वेदान्तैश्चाध्यात्मिकशास्त्रैश्च पुराणै

शास्त्रैश्चान्यै सात्त्वततन्त्रैश्च यमीशम ।

ब्रह्माथान्तश्चेतसि बुद्ध्वा विविशुर्यं

त मसारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २३ ॥

श्रद्धाभक्तिध्यानशमाद्यैर्यतमानै-

र्ज्ञातुं शक्यो देव इहैवाशु य ईश ।

दुर्विज्ञेयो जन्मशतैश्चापि विना तै-

स्त मसारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २४ ॥

यम्यातर्कर्यं स्वात्मविभूत परमार्थं

सर्वं खल्वित्यत्र निरुक्तं श्रुतिविद्धि ।

तज्जातित्वादधितरङ्गाभमभिन्नं

त मसारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २५ ॥

दृष्ट्वा गीतास्वक्षरतत्त्व विधिनाज

भक्त्या गुण्यो लभ्य हृदिस्थ दृशिमात्रम् ।

ध्यात्वा तस्मिन्नस्म्यहमित्यत्र विदुर्यं

त मसारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २६ ॥

क्षेत्रज्ञत्व प्राप्य विभु पञ्चमुखैर्यो

मुञ्क्तेऽजस्र भोग्यपदार्थान्प्रकृतिस्थ ।

क्षेत्रे क्षेत्रेऽपिस्विन्दुवदेको बहुधास्ते

त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २७ ॥

युक्त्यालोक्य व्याभवचास्यत्र हि लभ्य  
 शत्रुशत्रुज्ञान्तरावद्धि पुरुषारथ ।  
 याऽह माऽमौ माऽस्यहमवात विदुर्य  
 त समारध्वान्तविनाश हरिमीड ॥ २८ ॥

पक्राकृत्यानकशरीरस्थामम ज्ञ  
 य विज्ञायहैव म एराशु भवन्ति ।  
 यस्मिल्लीना नह पुनजन्म लभन्त  
 त समारध्वान्तावनाश हरिमीड ॥ २९ ॥

द्वन्द्वैकत्व यच्च मधुव्राह्मणवास्त्र्यै  
 क्रत्वा शक्रापामनमासाय विभूत्या ।  
 योऽमौ मोऽह माऽस्यहमेवेति विदुर्य  
 त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ३० ॥

याऽय दह चेष्टयितान्त करणस्थ  
 सूर्ये चासौ तापायता सोऽस्यहमेव ।  
 इत्यात्मैक्यापाभनया य विदुरीश  
 त समारध्वान्तावनाश हरिमीडे ॥ ३१ ॥

विज्ञानाशो यस्य सत शक्त्यधिरूढा  
 बुद्धिर्बुध्यत्यत्र बाहर्बोध्यपदार्थान् ।  
 नैवान्त स्थ बुध्यति य बोधयितार  
 त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ३२ ॥

कोऽय देह देव इतात्थ सुत्रिचार्य  
 ज्ञाता श्राता मन्तयिता चैष हि देव ।  
 इत्यालोच्य ज्ञाश इहास्मीति विदुर्य  
 त मसारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ३३ ॥

का ह्यवान्यादात्मनि न म्यादयमष  
 ह्येवानन्द प्राणिति चाषानिति चेति ।  
 इत्यस्तित्व वक्त्युपपत्त्या श्रुतिरषा  
 त मसारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ३४ ॥

प्राणो वाह वाक्छ्रवणादीनि मना वा  
 बुद्धिर्वाह व्यस्त उताहोऽपि समस्त ।  
 इत्यालोच्य ज्ञप्तिरिहास्मीति विदुर्य  
 त मसारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ३५ ॥

नाह प्राणो नैव शरीर न मनोऽह  
 नाह बुद्धिर्नाहमहकारधियौ च ।  
 योऽत्र ज्ञाश मोऽस्म्यहमेवेति विदुर्य  
 त ससारध्वान्तविनाश हरिमीड ॥ ३६ ॥

सत्तामात्र कवलविज्ञानमज म-  
 त्सूक्ष्म नित्य तत्त्वमसीत्यात्मसुताय ।  
 सास्नामन्ते प्राह पिता य विभुमाद्य  
 त ससारध्वान्तविनाश हरिमीड ॥ ३७ ॥

मूर्तामूर्ते पूर्वमपाह्याथ समाधौ  
 दृश्य सर्वं नेति च नतीति विहाय ।  
 चैतन्याशे म्वात्मानि सन्त च विदुर्य  
 त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ३८ ॥

ओत प्रोत यत्र च सर्वं गगनान्त  
 योऽस्थूलानण्वादिषु सिद्धोऽक्षरसङ्ग ।  
 ज्ञातातोऽन्यो नेत्युपलभ्यो न च वेद्य  
 स्त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ३९ ॥

तावत्सर्वं सत्यमिवाभाति यदेत-

द्यावत्सोऽस्मीत्यात्मनि यो ज्ञो न हि ऋष्ट ।

दृष्टे यस्मिन्सर्वमसत्यं भवतीद

तं ससारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ ४० ॥

रागामुक्तं लोहयुतं हेमं यथाम्रौ

योगाष्टाङ्गैरुज्ज्वलितज्ञानमयाम्रौ ।

दग्ध्वात्मानं ज्ञं परिशिष्टं च विदुर्यं

तं ससारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ ४१ ॥

यं विज्ञानज्योतिषमाद्यं सुविभान्तं

हृद्यकेंद्रग्न्योकसमीड्यं तटिदाभम् ।

भक्त्याराम्येहैव विशन्त्यात्मनि मन्तं

तं ससारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ ४२ ॥

पायाद्भक्तं स्वात्मनि सन्तं पुरुषं या

भक्त्या स्तौतीत्याङ्गिरमं विष्णुरिमं माम् ।

इत्यात्मानं स्वात्मनि महृत्यं सदैकं

स्तं ससारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ ४३ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोविन्दभग-

वत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छंकरभगवतः कुतौ

हरिस्तुतिं सपूर्णाम् ॥

॥ श्री ॥

# ॥ गोविन्दाष्टकम् ॥

❀

सत्य ज्ञानमनन्त नित्यमनाकाश परमाकाश  
गोष्ठप्राङ्गणरिङ्गणलालमनायाम परमायामम् ।  
मायाकल्पितनानाकारमनाकार भुवनाकार  
श्मामानाथमनाथ प्रणमत गोविन्द परमानन्दम् ॥ १ ॥

मृत्स्नामत्सीहोत यशोदाताडनशैशवमत्राम  
व्यादितवक्रालाकितलाकालोकचतुदशलोकालिम ।  
लोकत्रयपुरमूलस्तम्भ लोकालाकमनालोक  
लोकेश परमेश प्रणमत गोविन्द परमानन्दम् ॥ २ ॥

त्रैविष्टपरिपुर्वीरघ्न क्षितिभाग्न भवराग्न  
कैवल्य नवनीताहारमनाहार भुवनाहारम् ।  
वैमल्यस्फुटचेतोवृत्तिविशेषाभासमनाभाम  
शैव केवलशान्त प्रणमत गोविन्द परमानन्दम् ॥ ३ ॥

गोपाल प्रभुलीलाविग्रहगोपाल कुलगोपाल  
 गोपीखेलनगोवधनधृतिलीलालालितगोपालम् ।  
 गोभिर्निगदितगोविन्दस्फुटनामान बहुनामान  
 गोधीगोचरदूर प्रणमत गोविन्द परमानन्दम् ॥ ४ ॥

गोपीमण्डलगोष्ठीभेद भदावस्थमभेदाभ  
 शश्वद्गोखुरनिर्धूतोद्गतधूलीधूसरसौभाग्यम् ।  
 श्रद्धाभक्तिगृहीतानन्दमचिन्त्य चिन्तितसद्भाव  
 चिन्तामणिमहिमान प्रणमत गोविन्द परमानन्दम् ॥

ज्ञानव्याकुलयोषिद्वस्त्रमुपादायागमुपारूढ  
 व्यादित्सन्तीरथ दिग्बस्त्रा दातुमुपाकर्षन्त ता ।  
 निर्धूतद्वयशोकविमोह बुद्ध बुद्धेरन्त स्थ  
 सत्तामात्रशरीर प्रणमत गोविन्द परमानन्दम् ॥ ६ ॥

कान्त कारणकारणमादिमनादि कालघनाभास  
 कालिन्दीगतकालियशिरसि सुनृत्यन्त मुहुरत्यन्तम् ।  
 काल कालकलातीत कलिताशेष कलिदोषत्र  
 कालत्रयगतिहेतु प्रणमत गोविन्द परमानन्दम् ॥ ७ ॥

बृन्दावनभुवि बृन्दारकगणबृन्दाराधितवन्द्याया  
 कुन्दाभामलमन्दस्मेरसुधानन्द सुमहानन्दम् ।  
 वन्द्याशेषमहामुनिमानसवन्द्यानन्दपदद्वन्द्व  
 नन्द्याशेषगुणार्द्धि प्रणमन गोविन्द परमानन्दम् ॥८॥

गोविन्दाष्टकमेतदधीत गोविन्दार्पितचत्ता या  
 गोविन्दाच्युत माधव विष्णा गोकुलनायक कृष्णेति ।  
 गोविन्दाङ्गिसरोजध्यानसुधाजलधौतसमस्ताघा  
 गोविन्द परमानन्दासृतमन्तस्थ स तमभ्येति ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य  
 श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य  
 श्रीमच्छकरभगवत कृतौ  
 गाविन्दाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्रीः ॥

## ॥ भगवन्मानसपूजा ॥

—\*—

हृदम्भोजे कृष्ण सजलजलदश्यामलतनु  
सरोजाक्ष सखी मकुटकटकाद्याभरणवान् ।  
शरद्राकानाथप्रतिभवदन श्रीमुरलिका  
वहन्ध्येयो गोपीगणपरिवृत कुङ्कुमचित् ॥ १ ॥

पयोम्भोधेर्द्वीपान्मम हृदयमायाहि भगव  
न्मणित्रातभ्राजत्कनकवरपीठ भज हरे ।  
सुचिह्नौ ते पादौ यदुकुलज ननेजिम सुजलै  
र्गहाणेद दूर्वाफलजलवदर्यं मुररिपो ॥ २ ॥

त्वमाचामोपेन्द्र त्रिदशसरिदम्भोऽतिशिगिर  
भजस्वम पञ्चामृतफलरसाप्लावमघहन ।  
शुनद्या कालिन्दा अपि कनककुम्भस्थितमिद  
जल तेन स्नान कुरु कुरु कुरुष्वाचमनकम् ॥ ३ ॥

तदिद्वर्णे वस्त्र भज विजयकान्ताधहरण  
 प्रलम्बारिभ्रातमृदुलमुपवीत कुरु गल ।  
 ललाट पाटीर मृगमन्युन धारय हरे  
 गहाणेद माल्य शतदलतुलस्यादिरचितम् ॥ ४ ॥

दशाङ्ग धूप सद्वरद चरणाम्रऽपितामद  
 मुख दीपनेन्दुप्रभविरजस त्व कलय ।  
 इमौ पाणी वाणीपतिनुत मकपूररजमा  
 विशोऽध्याग्रे त्त सलिलमिदमाचाम नृहरे ॥ ५ ॥

सदा तृप्तान्न षड्रसवदखिलव्यञ्जनयुत  
 सुवर्णामत्रे गोघृतचषकयुक्त म्थतमिदम् ।  
 यशादासूना तत्परमदययाशान सखिभि  
 प्रमाद वाञ्छद्भि मह तदनु नाग अपबं विभा ॥ ६ ॥

मचूर्णं ताम्बूल मुग्धशुचिकर भक्षय हर  
 फल स्वादु प्रीत्या पागमलवदास्वादय ष्चरम् ।  
 सपर्यापर्याप्त्यै कनकमणिजात स्थितमिद  
 प्रदीपैरारार्ति जलधितनयाश्लिष्ट रचये ॥ ७ ॥

विजातीयै पुष्पैर्गतिसुरभिभिर्बिल्वतुलसी  
 युतैश्चेम पुष्पाञ्जालमजित त मूर्ध्नि निम्ध ।  
 तव प्रादक्षिण्यक्रमणमघविध्वमि रचित  
 चतुर्वार विष्णा जनिपथगतश्रान्तविदुषा ॥ ८ ॥

नमस्कारोऽष्टाङ्ग सकलद्वारतध्वसनपटु  
 कृत नृत्य गीत स्तुतगपि रमाक्रान्त त इयम् ।  
 तव प्रीत्यै भूयादहमपि च तामस्तव विभा  
 कृत छिद्र पूर्ण कुरु कुरु नमस्तऽस्तु भगवन् ॥ ९ ॥

सदा मेव्य कृष्ण सजलघननील कगतले  
 दधाना दध्यन्न तदनु नवनीत मुरलिकाम ।  
 कदाचित्कान्ताना कुचकलशपत्रालिरचना  
 समासक्त म्निगधै सह शिशुविहार विरचयन् ॥१०॥

इति श्रीमत्परमहंसपारब्राजकाचार्यस्य  
 श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य  
 श्रीमच्छकरभगवत कृतौ  
 भगवन्मानसपूजा सपूर्णा ॥

॥ श्री ॥

## ॥ मोहमुद्गरः ॥



भज गाविन्द भज गोविन्द

भज गोविन्द मूढमते ।

सप्राप्ते सनिहिते काले

न हि न हि गच्छति डुकुळकरण ॥ १ ॥

मूढ जहीहि धनागमतृष्णा

कुरु सद्बुद्धिं मनसि वितृष्णाम् ।

यत्कृत्वा निजकर्मोपात्त

वित्त तेन विनोदय चित्तम् ॥ २ ॥

नारीस्तनभरनाभीदेश

दृष्ट्वा मा गा माहावशम् ।

एतन्मासवसादिविकार

मनसि विचिन्तय वार वारम् ॥ ३ ॥

नलिनीदलगतजलमतितरल  
 तद्वज्जीवितमतिशयचपलम् ।  
 विद्धि व्याध्यभिमानग्रस्त  
 लाक शोकहत च समस्तम् ॥ ४ ॥

यावद्विक्तोपार्जनसक्त  
 स्तावन्निजपरिवारो रक्त ।  
 पश्चाज्जीवति जर्जरदेह  
 वार्त्ता कोऽपि न प्रच्छति गेहे ॥ ५ ॥

यावत्पवनो निवसति देहे  
 तावत्प्रच्छति कुशल गेहे ।  
 गतवति वायौ दहापाये  
 भार्या विभ्यति तस्मिन्काये ॥ ६ ॥

बालस्तावत्क्रीडासक्त  
 स्तरुणस्तावत्तरुणीसक्त ।  
 वृद्धस्तावन्विन्तासक्त  
 परे ब्रह्मणि कोऽपि न सक्त ॥ ७ ॥

का ते कान्ता कस्त पुत्र  
 मसार्गेऽयमतीव । प्राच ३ ।  
 रुस्य त्व रु कुत आयात  
 स्तत्त्व चिन्तय यत्तिद् भ्रान्त ॥ ८ ॥

मत्सङ्गत्वे नि मङ्गत्व  
 नि सङ्गत्व निर्मोहत्वम् ।  
 निर्मोहत्व निश्चलितत्व  
 निश्चलितत्व जीय मुक्ति ॥ ९ ॥

वयसि गते क कामावकार  
 शुष्क नीर रु कासार ।  
 क्षीणे वित्त रु परिवारो  
 ज्ञात तत्त्वे क समार ॥ १० ॥

मा कुरु धनजनयौवनगर्व  
 हरति निमेषात्काल सर्वम् ।  
 मायामयमिदमखिल हित्वा  
 ब्रह्मपद त्व प्रविश विदित्वा ॥ ११ ॥

दिनयामिन्यौ साय प्रात  
 शिशिरवसन्तौ पुनरायात ।  
 काल क्रीडति गच्छत्यायु  
 स्तदपि न मुञ्चत्याशावायु ॥ १२ ॥

का ते कान्ताधनगतचिन्ता  
 वातुल किं तव नास्ति नियन्ता ।  
 त्रिजगति सज्जनसगतिरेका  
 भवति भवार्णवतरणे नौका ॥ १३ ॥

जटिली मुण्डी लुञ्चितकेश  
 काषायाम्बरबहुकृतवेष ।  
 पश्यन्नपि च न पश्यति मूढो  
 ह्युदरनिमित्त बहुकृतवेष ॥ १४ ॥

अङ्ग गलित पलित मुण्ड  
 दशनविहीन जात तुण्डम् ।  
 वृद्धो याति गृहीत्वा दण्ड  
 तदपि न मुञ्चत्याशापिण्डम् ॥ १५ ॥

अग्ने वह्नि पृष्ठे भानू  
 रात्रौ चुबुकसमर्पितजानु ।  
 करतलभिक्षस्तहतलवास  
 स्तदपि न मुषत्याशापाश ॥ १६ ॥

कुरुत गङ्गासागरगमन  
 व्रतपरिपालनमथवा दानम् ।  
 ज्ञानविहीन सर्वमतेन  
 मुक्ति न भजति जन्मशतेन ॥ १७ ॥

सुरमन्दिरतरुमूलनिवास  
 शय्या भूतलमजिन वास ।  
 सर्वपरिग्रहभोगत्याग  
 कस्य सुख न करोति विराग ॥ १८ ॥

योगरतो वा भोगरतो वा  
 सगरतो वा सगविहीन ।  
 यस्य ब्रह्मणि रमते चित्त  
 नन्दति नन्दति नन्दत्येव ॥ १९ ॥

भगवद्गीता किञ्चिदधीता

गङ्गाजललवकणिका पीता ।

सकृदपि येन मुरारिसमर्चा

क्रियते तस्य यमेन न चर्चा ॥ २० ॥

पुनरपि जनन पुनरपि मरण

पुनरपि जननीजठरे शयनम् ।

इह ससारे बहुदुस्तारे

कृपयापारे पाहि मुरारे ॥ २१ ॥

रथ्याकर्षटविरचितकन्ध

पुण्यापुण्यविवर्जितपन्थ ।

योगी योगनियोजितचित्तो

रमते बालोन्मत्तवदेव ॥ २२ ॥

कस्त्व कोऽह कुत आयात

का मे जननी को मे तात ।

इति परिभावय सर्वमसार

विश्व त्यक्त्वा स्वप्नविचारम् ॥ २३ ॥

त्वयि मयि चान्यत्रैको विष्णु  
 व्यर्थं कुप्यसि मग्नसहिष्णु ।  
 सर्वस्मिन्नपि पश्यात्मान  
 सर्वत्रोत्सृज भेदाज्ञानम् ॥ २४ ॥

शत्रौ मित्रे पुत्रे बन्धौ  
 मा कुरु यत्न विग्रहसन्धौ ।  
 भव समचित्त सर्वत्र त्व  
 वाञ्छस्यचिराद्यदि विष्णुत्वम् ॥ २५ ॥

काम क्रोध लोभ मोह  
 त्यक्त्वात्मान भावय काऽहम् ।  
 आत्मज्ञानविहीना मूढा  
 स्ते पच्यन्ते नरकनिगूढा ॥ २६ ॥

गेय गीतानामसहस्र  
 ध्यय श्रीपतिरूपमजस्रम् ।  
 नेय सज्जनसङ्गे चित्त  
 देय दीनजनाय च वित्तम् ॥ २७ ॥

सुखत क्रियते रामाभोग  
 पश्चाद्धन्त शरीरे रोग ।  
 यद्यपि लोके मरण शरण  
 तदपि न मुञ्चति पापाचरणम् ॥ २८ ॥

अर्थमनर्थ भावय नित्य  
 नास्ति तत सुखलेश सत्यम् ।  
 पुत्रादपि धनभाजा भीति  
 सर्वत्रैषा विहिता रीति ॥ २९ ॥

प्राणायाम प्रत्याहार  
 नित्यानित्यविवेकविचारम् ।  
 जाप्यसमेतसमाधिविधान  
 कुर्वन्धान महदवधानम् ॥ ३० ॥

गुरुचरणास्तुजानिर्भरभक्त  
 ससारादचिराद्भव मुक्त ।  
 सेन्द्रियमानसनियमादेव  
 द्रक्ष्यसि निजहृदयस्थ देवम् ॥ ३१ ॥

इति मोहमुद्गर सपूर्ण ॥

॥ श्री ॥

## ॥ कनकधारास्तोत्रम् ॥

— —\*— —

अङ्ग हरे पुलकभूषणमाश्रयन्ती  
भृङ्गाङ्गनेव सुकुलाभरण तमालम् ।  
अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला  
माङ्गल्यदास्तु मम मङ्गलदवताया ॥ १ ॥

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने सुरारे  
प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि ।  
मालादृशोमधुकरीव महोत्पले या  
सा मे श्रिय दिशतु सागरसभवाया ॥ २ ॥

विश्वामरन्द्रपदविभ्रमदानदक्ष  
मानन्दहेतुरधिक मुरविद्विषोऽपि ।  
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्द्धं  
मिन्दीवरोदरसहादरमिन्दिराया ॥ ३ ॥

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्द  
 मानन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम् ।  
 आकेकरस्थितकनीनिकपक्षमनेत्र  
 भूयै भवेन्मम भुजगशयाङ्गनाया ॥ ४ ॥

बाह्वन्तरे मधुजित श्रितकौस्तुभेया  
 हारावलीव हरिनीलमयी विभाति ।  
 कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला  
 कल्याणमावहतु मे कमलालयाया ॥ ५ ॥

कालाम्बुदालिललितारसि कैटभार-  
 धाराधरे स्फुरति यत्तटिदङ्गनेव ।  
 मातु समस्तजगता महनीयमूर्ति  
 भद्राणि मे दिशतु भागवन दनाया ॥ ६ ॥

प्राप्त पद प्रथमत खलु यत्प्रभावा-  
 न्माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन ।  
 मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्ध  
 मन्दालस च मकरालयकन्यकाया ॥ ७ ॥

दद्याद्दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारा  
 मस्मिन्न किञ्चन विहगशिशौ विषण्णे ।  
 दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूर  
 नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाह ॥ ८ ॥

इष्टाविशिष्टमतयोऽपि यथा दयार्द्र-  
 दृष्ट्या त्रिविष्टपपद सुलभ लभन्ते ।  
 दृष्टि प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टा  
 पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टराया ॥ ९ ॥

गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति  
 शाकभरीति शशिशेखरवल्लभेति ।  
 सृष्टिस्थितिप्रलयकलिषु सस्थितायै  
 तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥ १० ॥

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै  
 रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै ।  
 शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै  
 पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै ॥ ११ ॥

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै  
 नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूम्यै ।  
 नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै  
 नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै ॥ १२ ॥

सप्तकराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि  
 साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि ।  
 त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि  
 मामेव मातरनिश कलयन्तु मान्ये ॥ १३ ॥

यत्कटाक्षसमुपासनाविधि  
 सेवकस्य सकलार्थसपद ।  
 सतनोति वचनाङ्गमानसै  
 स्त्वा मुरारिहृदयेश्वरीं भजे ॥ १४ ॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते  
 धवलतमाशुकगन्धमात्यशोभे ।  
 भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे  
 त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मङ्गम् ॥ १५ ॥

दिग्घस्तिभि कनककुम्भमुखावसृष्ट  
 स्वर्वाहिनीविमलचारुजलप्लुताङ्गीम् ।  
 प्रातर्नमामि जगता जननीमक्षय  
 लोकाधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम् ॥ १६ ॥

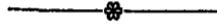
कमल कमलाक्षवल्लभ त्व  
 करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गै ।  
 अवलोकय मामकिंचनाना  
 प्रथम पात्रमकृत्रिम दयाया ॥ १७ ॥

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमीभिरन्वह  
 त्रयीमयीं त्रिभुवनमातर रमाम् ।  
 गुणाधिका गुरुतरभाग्यभाजिनो  
 भवन्ति त भुवि बुधभाविताशया ॥ १८ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभग-  
 वत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ  
 कनकधारास्तोत्र सपूर्णम् ॥

॥ श्री ॥

## ॥ अन्नपूर्णाष्टकम् ॥



नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी  
निर्धूताखिलदोषपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी ।  
प्रालयाचलवशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी  
भिक्षा देहि कृपावलम्बनकरी माताम्रपूर्नेश्वरी ॥ १ ॥

नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी  
मुक्ताहारविडम्बमानविलमद्वक्षोजकुम्भान्तरी ।  
काश्मीरागरुवासिताङ्गरुचिर काशीपुराधीश्वरी  
भिक्षा देह कृपावलम्बनकरी माताम्रपूर्नेश्वरी ॥ २ ॥

योगानन्दकरी रिपुभयकरी धर्मेकनिष्ठाकरी  
चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी ।  
सर्वेश्वर्यकरी तप फलकरी काशीपुराधीश्वरी  
भिक्षा देहि कृपावलम्बनकरी माताम्रपूर्नेश्वरी ॥ ३ ॥

कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी ह्युमाशाकरी  
 कौमारी निगमार्थगोचरकरी ह्योकारबीजाक्षरी ।  
 मोक्षद्वारकवाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी  
 भिक्षा देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥ ४ ॥

दृश्यादृश्यविभूतिवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी  
 लीलानाटकसूत्रखेलनकरी विज्ञानदीपाङ्कुरी ।  
 श्रीविश्वेशमन प्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी  
 भिक्षा देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥ ५ ॥

आदिक्षान्तसमस्तवर्णनकरी शशुप्रिया शाकरी  
 काश्मीरत्रिपुरेश्वरी त्रिनयनी विश्वेश्वरी शर्वरी ।  
 स्वर्गद्वारकवाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी  
 भिक्षा देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥ ६ ॥

सर्वीसर्वजनेश्वरी जयकरी माता कृपासागरी ।  
 नारीनीलसमानकुन्तलधरी नित्यान्नदानेश्वरी  
 साक्षान्मोक्षकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी  
 भिक्षा देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥ ७ ॥

देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी  
 वामा स्वादुपयाधरा प्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी ।  
 भक्ताभीष्टकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी  
 भिक्षा देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्नेश्वरी ॥ ८ ॥

चन्द्रार्कानलकोटिकोटिसदृशी चन्द्राशुबिम्बाधरी  
 चन्द्रार्काभिसमानकुण्डलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी ।  
 मालापुस्तकपाशसाङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी  
 भिक्षा देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्नेश्वरी ॥ ९ ॥

ध्वजत्राणकरी महाभयहरी माता कृपासागरी  
 सर्वानन्दकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी ।  
 दक्षक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी  
 भिक्षा देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्नेश्वरी ॥ १० ॥

अन्नपूर्णे सदापूर्णे  
 शकरप्राणवल्लभे ।  
 ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थ  
 भिक्षा देहि च पार्वति ॥ ११ ॥

माता च पार्वतीदेवी  
 पिता दत्ता महेश्वर ।  
 बान्धवा शिवभक्ताश्च  
 स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥ १२ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य  
 श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य  
 श्रीमच्छंकरभगवत कृतौ  
 अन्नपूर्णाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्रीः ॥

## ॥ मीनाक्षीपञ्चरत्नम् ॥

— ❁ —

उद्यद्भानुसहस्रकोटिसहशा केयूरहारोज्ज्वला  
बिम्बोष्ठीं स्मितदन्तपङ्क्तिरुचिरा पीताम्बरालकृताम् ।  
विष्णुब्रह्मासुरेन्द्रसेवितपदा तत्त्वस्वरूपा शिवा  
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सततमह कारुण्यवारानिधिम् ॥

मुक्ताहारलसतिकरीटरुचिरा पूर्णेन्दुवक्रप्रभा  
शिञ्जन्नूपुरकिंकिणीमणिधरा पद्मप्रभाभासुराम् ।  
सर्वाभीष्टफलप्रदा गिरिसुता वाणीरमासेविता  
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सततमह कारुण्यवारानिधिम् ॥

श्रीविद्या शिववामभागनिलया ह्रींकारमन्त्रोज्ज्वला  
श्रीचक्राङ्कितबिन्दुमध्यवसतिं श्रीमत्सभानायकीम् ।  
श्रीमत्षण्मुखविघ्नराजजननीं श्रीमल्लगन्मोहिनीं  
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सततमह कारुण्यवारानिधिम् ॥

श्रीमत्सुन्दरनायकीं भयहरा ज्ञानप्रदा निर्मला  
 श्यामाभा कमलासनार्चितपदा नारायणस्यानुजाम् ।  
 वीणावेणुमृदङ्गवाद्यरसिका नानाविधाडम्बिका  
 मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सततमह कारुण्यवारानिधिम् ॥

नानायोगिमुनीन्द्रहृत्प्रवसतीं नानार्थसिद्धिप्रदा  
 नानापुष्पविराजिताङ्घ्रियुगला नारायणेनार्चिताम् ।  
 नादब्रह्ममयीं परात्परतरा नानार्थतत्त्वात्मिका  
 मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सततमह कारुण्यवारानिधिम् ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य  
 श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य  
 श्रीमच्छंकरभगवत कृतौ  
 मीनाक्षीपञ्चरत्न सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

# ॥ मीनाक्षीस्तोत्रम् ॥

\*

श्रीविद्ये शिववामभागनिलये श्रीराजराजाचिते  
श्रीनाथादिगुरुस्वरूपविभवे चिन्तामणीपीठिके ।  
श्रीवाणीगिरिजानुताङ्गिकमले श्रीशाभवि श्रीशिवे  
मध्याह्ने मलयध्वजाधिपसुते मा पाहि मीनाम्बिके ॥ १ ॥

चक्रस्थेऽचपले चराचरजगन्नाथे जगत्पूजिते  
आर्तालीवरदे नताभयकर वक्षोजभारान्विते ।  
विद्ये वेदकलापमौलिविदिते विद्युल्लताविग्रहे  
मात पूर्णसुधारसाद्रहदये मा पाहि मीनाम्बिके ॥ २ ॥

कोटीराज्जदरत्नकुण्डलधरे कादण्डबाणाश्विते  
कोकाकारकुचद्वयापरिलसत्प्रालम्बहाराश्विते ।  
शिञ्जन्नूपुरपादसारसमणीश्रीपादुकालकृते  
महारिद्यभुजगगारुढखगे मा पाहि मीनाम्बिके ॥ ३ ॥

ब्रह्मेशान्द्युतगीयमानचरिते प्रतासनान्तस्थिते  
 पाशोदङ्कुशचापबाणकलित बालन्दुचूडाश्वित ।  
 बाले बालकुरङ्गलालनयन बालारुकाटशुज्ज्वल  
 मुद्राराधितदैवते मुनिसुते मा पाहि मीनाम्बिके ॥ ४ ॥

गन्धर्वामरयक्षपन्नगनुत गङ्गाधरालिङ्गित  
 गायत्रीगरुडासन कमलजे सुश्यामले सुस्थित ।  
 खातीते खलदारुपावकशिखे खद्यातकोटशुज्ज्वले  
 मन्त्राराधितदैवते मुनिसुते मा पाहि मीनाम्बिके ॥ ५ ॥

नादे नारदतुम्बुराद्यविनुते नादान्तनादात्मिक  
 नित्ये नीललतात्मिके निरुपम नीवारशूकोपम ।  
 कान्त कामकल कदम्बनिलय कामश्रराङ्कस्थित  
 मद्भिष्टकल्पलतिके मा पाहि मीनाम्बिके ॥ ६ ॥

वीणानादनिमीलिताधनयन विस्त्रस्तचूलीभर  
 ताम्बूलारुणपल्लवाधरयुते ताटङ्कहारान्वित ।  
 श्यामे चन्द्रकलावतसकलित कस्तूरिकाफालिक  
 पूर्णे पूर्णकलाभिरामवदने मा पाहि मीनाम्बिक ॥ ७ ॥

शब्दब्रह्ममयी चराचरमयी ज्योतिर्मयी वाङ्मयी  
नित्यानन्दमयी निरञ्जनमयी तत्त्वमयी चिन्मयी ।  
तत्त्वातीतमयी परात्परमयी मायामयी श्रीमयी  
सर्वेश्वरमयी सदाशिवमयी मा पाहि मीनाम्बिके ॥८॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोविन्दभग  
वत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ  
मीनाक्षीस्तोत्र सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

## ॥ दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम् ॥

— ❁ —

उपासकाना यदुपासनीय  
मुपात्तवास वटशास्त्रिमूले ।  
तद्धाम दाक्षिण्यजुषा स्वमूर्त्या  
जागर्तु चित्ते मम बोधरूपम् ॥ १ ॥

अद्राक्षमक्षीणदयानिधान-  
माचार्यमाद्य वटमूलभागे ।  
मौनेन मन्दस्मितभूषितन  
महाषलोकस्य तमो नुदन्तम् ॥ २ ॥

विद्राविताशषतभोगणन  
मुद्राविशेषण मुहुमुनीनाम् ।  
निरस्य माया दयया विषत्ते  
देवो महास्तत्त्वमसीति बोधम् ॥ ३ ॥

अपारकारुण्यसुधातरङ्गै

रपाङ्गपातैरवलोकयन्तम् ।

कठोरस्रसारनिदाघतप्ता

न्मुनीनह नौमि गुरु गुरुणाम् ॥ ४ ॥

ममाद्यदेवो बटमूलवासी

कृपाविशेषात्कृतसनिधान ।

ओंकाररूपामुपदिश्य विद्या

माविद्यकध्वान्तमपाकरोतु ॥ ५ ॥

कलाभिरिन्दोरिव कल्पिताङ्ग

मुक्ताकलापैरिव बद्धमूर्तिम् ।

आलोकये देशिकमप्रमेय

मनाद्यविद्यातिमिरप्रभातम् ॥ ६ ॥

स्वदक्षजानुस्थितवामपाद

पादोदरालकृतयोगपट्टम् ।

अपस्मृतेराहितपादमङ्गै

प्रणौमि देव प्रणिधानवन्तम् ॥ ७ ॥

तस्त्वार्थमन्तेवसतामृषीणा  
 युवापि य सन्नपदेष्टुमीष्ट्रे ।  
 प्रणौमि त प्राक्त्वनपुण्यजालै  
 राचार्यमाश्चर्यगुणाधिवासम् ॥ ८ ॥

एकेन मुद्रा परशु करेण  
 करेण चान्येन मृग इधान ।  
 स्वजानुविन्यस्तकर पुरस्ता  
 दाशायचूडामणिराविरस्तु ॥ ९ ॥

आलेपवन्त मदनाङ्गभूत्या  
 शार्दूलकृत्या परिधानवन्तम् ।  
 आलोकये कचन देशिकेन्द्र  
 मङ्गानवाराकरबाहवाग्निम् ॥ १० ॥

चारुस्थित सोमकलावतस  
 वीणाधर व्यक्तजटाकलापम् ।  
 उपासते केचन योगिनस्त्व  
 सुपात्तनादानुभवप्रभोदम् ॥ ११ ॥

उपासते य मुनय शुकाद्या  
 निराशिषो निर्भमताधिवासा ।  
 त दक्षिणामूर्तितनु महेश  
 सुपास्मह मोहमहार्तिशान्त्यै ॥ १२ ॥

कान्त्या निन्दितकुन्दकदलवपुन्यप्रोधमूले वस  
 न्कारुण्यामृतवारिभिमुनिजन सभावयन्वीक्षितै ।  
 मोहध्वान्तविभेदन विरचयन्बोधेन तत्तादृशा  
 देवस्तत्त्वमसीति बोधयतु मा मुद्रावता पाणिना ॥ १३ ॥

अगौरनेत्रैरललाटनेत्रै  
 रशान्तवेषैरभुजगभूषै ।  
 अबोधमुद्रैरनपास्तनिद्रै  
 रपूरकामैरमरैरल न ॥ १४ ॥

दैवतानि कति सन्ति चावनौ  
 नैव तानि मनसो मतानि मे ।  
 दीक्षित जडधियामनुग्रहे  
 दक्षिणाभिमुखमव दैवतम् ॥ १५ ॥

मुदिताय मुग्धशशिनावतसिने  
 भसितावलेपरमणीयमूर्तये ।  
 जगदिन्द्रजालरचनापटीयसे  
 महसे नमोऽस्तु वटमूलवासिने ॥ १६ ॥

व्यालम्बिनीभि परितो जटाभि  
 कलावशेषेण कलाधरेण ।  
 पश्यल्ललाटेन मुखेन्दुना च  
 प्रकाशसे चेतसि निर्मलानाम् ॥ १७ ॥

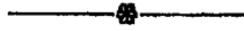
उपासकाना त्वमुमासहाय  
 पूर्णेन्दुभाव प्रकटीकरोषि ।  
 यदद्य ते दर्शनमात्रता मे  
 द्रवत्यहो मानसचन्द्रकान्त ॥ १८ ॥

यस्त प्रसन्नामनुसदधानो  
 मूर्ति मुदा मुग्धशशाङ्कमौले ।  
 ऐश्वर्यमायुलभत च विद्या  
 मन्त च वेदान्तमहारहस्यम् ॥ १९ ॥

इति दक्षिणामूर्तिस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ श्री ॥

## ॥ कालभैरवाष्टकम् ॥



देवराजसेव्यमानपावनाङ्घ्रिपङ्कज

व्यालयज्ञसूत्रविन्दुशेखर कृपाकरम् ।

नारदादियोगिवृन्दवन्दित दिगम्बर

काशिकापुराधिनाथकालभैरव भजे ॥ १ ॥

भानुकोटिभास्वर भवान्धितारक पर

नीलकण्ठमीप्सिताथदायक त्रिलोचनम् ।

कालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षर

काशिकापुराधिनाथकालभैरव भजे ॥ २ ॥

शूलटङ्कपाशदण्डपाणिमादिकारण

श्यामकायमादिदेवमक्षर निरामयम् ।

भीमविक्रम प्रभु विचित्रताण्डवप्रिय

काशिकापुराधिनाथकालभैरव भजे ॥ ३ ॥

भुक्तिमुक्तिदायक प्रशस्तचारुविग्रह  
 भक्तवत्सल स्थिर समस्तलाकविग्रहम् ।  
 निकणन्मनोज्ञहेमकिङ्किणीलसत्कर्ति  
 काशिकापुराधिनाथकालभैरव भज ॥ ४ ॥

धर्मसेतुपालक त्वधममागनाशक  
 कर्मपाशमोचक सुशर्मदायक विभुम् ।  
 स्वर्णवर्णकशपाशशोभिताङ्गनिर्मल  
 काशिकापुराधिनाथकालभैरव भजे ॥ ५ ॥

रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मक  
 नित्यमद्वितीयमिष्टदैवत निरञ्जनम् ।  
 मृत्युदपनाशन करालदष्टभूषण  
 काशिकापुराधिनाथकालभैरव भज ॥ ६ ॥

अट्टहासभिन्नपद्मजाण्डकोशसर्तिति  
 दृष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम् ।  
 अष्टसिद्धिदायक कपालमालिकाधर  
 काशिकापुराधिनाथकालभैरव भजे ॥ ७ ॥

भूतसङ्घनायक विशालकीर्तिदायक  
काशिवासिलोकपुण्यपापशोधक विभुम् ।  
नीतिमार्गकोविद पुरातन जगत्पतिं  
काशिकापुराधिनाथकालभैरव भजे ॥ ८ ॥

कालभैरवाष्टक पठन्ति ये मनोहर  
ज्ञानमुक्तिसाधक विचित्रपुण्यवर्धनम् ।  
शोकमोहलोभदैन्यकोपतापनाशन  
ते प्रयान्ति कालभैरवाङ्घ्रिसनिधि ध्रुवम् ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यस्य  
श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य  
श्रीमच्छकरभगवत कृतौ  
कालभैरवाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

## ॥ नर्मदाष्टकम् ॥



सविन्दुसिन्धुसुखलत्तरङ्गभङ्गरञ्जित  
द्विषत्सु पापजातजातकादिवारिसयुतम् ।  
कृतान्तदूतकालभूतभीतिहारिवर्मदे  
त्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नर्मदे ॥ १ ॥

त्वदम्बुलीनदीनमीनदिव्यसप्रदायक  
कलौ मलौघभारहारिभवतीर्थनायकम् ।  
सुमच्छकच्छनक्रचक्रवाकचक्रशर्मदे  
त्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नर्मदे ॥ २ ॥

महागभीरनीरपूरपापधूतभूतल  
ध्वनस्त्रमस्तपातकारिदारितापदाचलम् ।  
जगत्त्रये महाभये मृकण्डुसूनुहर्म्यदे  
त्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नर्मदे ॥ ३ ॥

गत तदैव मे भय त्वदम्बु वीक्षित यदा  
 मृकण्डसूनुशौनकासुरारिसेवित सदा ।  
 पुनर्भवाब्धिजन्मज भवाब्धिदु खवर्मदे  
 त्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नर्मदे ॥ ४ ॥

अलक्ष्यलक्षकिन्नरामरासुरादिपूजित  
 सुलक्षनीरतीरधीरपक्षिलक्षकूजितम् ।  
 वसिष्ठशिष्टपिप्पलादिकर्दमादिशर्मद  
 त्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नर्मदे ॥ ५ ॥

सनत्कुमारनाचिकेतकश्यपात्रिषट्पदै  
 धृत स्वकीयमानसेषु नारदादिषट्पदै ।  
 रवीन्दुरन्तिदेवदेवराजकर्मशर्मदे  
 त्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नर्मदे ॥ ६ ॥

अलक्षलक्षलक्षपापलक्षसारसायुध  
 ततस्तु जीवजन्तुतन्तुभुक्तिमुक्तिदायकम् ।  
 विरिञ्चिविष्णुशकरस्वकीयधामवर्मदे  
 त्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नर्मदे ॥ ७ ॥

अहो धृत स्वन श्रुत महेशिकेशजातट  
 किरातसूतबाडबेषु पण्डित शठ नटे ।  
 दुरन्तपापतापहारि सर्वजन्तुशर्मद  
 त्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नमद ॥ ८ ॥

इदं तु नर्मदाष्टक त्रिकालमेव ये सदा  
 पठन्ति ते निरन्तर न यन्ति दुर्गतिं कदा ।  
 सुलभ्यदेहदुर्लभ महशधामगौरव  
 पुनर्भवा नरा न वै विलोकयन्ति रौरवम् ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य  
 श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादाशिष्यस्य  
 श्रीमच्छंकरभगवत क्रतौ  
 नर्मदाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

## ॥ यमुनाष्टकम् ॥

—❀—

मुरारिकायकालिमाललामवारिधारिणी  
तृणीकृतत्रिविष्टपा त्रिलोकशोकहारिणी ।  
मनोनुकूलकूलकुञ्जपुञ्जधूतदुर्मदा  
धुनोतु नो मनोमल कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ १ ॥

मलापहारिवारिपूरिभूरिमण्डितामृता  
भृश प्रवातकप्रपञ्चनातिपण्डितानिशा ।  
सुनन्दनन्दिनाङ्गसङ्गरागरञ्जिता हिता  
धुनोतु नो मनोमल कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ २ ॥

लसत्तरङ्गसङ्गधूतभूतजातपातका  
नवीनमाधुरीधुरीणभक्तिजातचातका ।  
तटान्तवासदासहससवृताह्निकामदा  
धुनोतु नो मनोमल कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ३ ॥

विहाररासखेदभदधीरतीरमारुता

गता गिरामगोचरे यदीयनीरचारुता ।

प्रवाहसाहचर्यपूतभेदिनीनदीनदा

धुनोतु नो मनोमल कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ४ ॥

तरङ्गसङ्गसैकतान्तरातित सदासिता

शरन्निशाकराशुमञ्जुमञ्जरी सभाजिता ।

भवार्चनाप्रचारुणाम्बुनाधुना विशारदा

धुनातु नो मनोमल कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ५ ॥

जलान्तकेलिकारिचारुराधिकाङ्गरागिणी

स्वभर्तुरन्यदुलभाङ्गताङ्गतागभागिनी

स्वदत्तसुप्तसप्तसिन्धुभेदिनातकोविदा

धुनोतु नो मनोमल कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ६ ॥

जलच्युताच्युताङ्गरागलम्पटालिशालिनी

विलोलराधिकाकचान्तचम्पकालिमालिनी ।

सदावगाहनावतीर्णभर्तृभृत्यनारदा

धुनोतु नो मनोमल कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ७ ॥

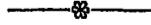
सदैव नन्दिनन्दकेलिशालिकुञ्जमञ्जुला  
तटोत्थफुल्लमल्लिकाकदम्बरेणुसूज्ज्वला ।  
जलावगाहिना नृणा भवाब्धिसिन्धुपारदा  
धुनोतु नो मनोमल कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ८ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य  
श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य  
श्रीमच्छंकरभगवत् कृतौ  
यमुनाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

## ॥ यमुनाष्टकम् ॥



कृपापारावारा तपनतनया तापशमना

मुरारिप्रेयस्या भवभयदवा भक्तिवरदाम् ।

वियञ्ज्वालान्मुक्ता श्रियमपि सुखाप्ते परिदिन

सदा धीरो नून भजति यमुना नित्यफलदाम् ॥ १ ॥

मधुवनचारिणि भास्करवाहिनि जाह्नविसङ्गिनि सिन्धुसुते

मधुरिपुभूषणि माधवतोषिणि गोकुलभीतिविनाशकृते ।

जगदघमोचिनि मानसदायिनि केशवकलिनिदानगते

जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम् ॥

अयि मधुरे मधुमोदविलासिनि शैलत्रिदारिणि वेगपरे

परिजनपालिनि दुष्टनिषूदिनि वाञ्छितकामविलासधरे ।

व्रजपुरवासिजनार्जितपातकहारिणि विश्वजनोद्धरिके

जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम् ॥

अतिविपदान्बुधिमग्नजन भवतापशताकुलमानसक  
 गतिमतिहीनमशेषभयाकुलमागतपादसरोजयुगम् ।  
 ऋणभयभीतिमनिष्कृतिपातककोटिशतायुतपुञ्जतर  
 जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम् ॥

नवजलदद्युतिकोटिलसत्तनुहेमभयाभररञ्जितके  
 तडिदवहेलिपदाञ्चलचञ्चलशोभितपीतसुचेलधर ।  
 मणिमयभूषणचित्रपटासनरञ्जितगञ्जितभानुकरे  
 जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम् ॥

शुभपुलिने मधुमत्तयदूङ्गवरासमहोःसवकेलिभरें  
 चञ्चकुलाचलराजितमौक्तिकहारमयाभररोदसिकै ।  
 नवमणिकोटिकभास्करकञ्चुकिशोभिततारकहारयुते  
 जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम् ॥

करिवरमौक्तिकनासिकभूषणवातचमत्कृतचञ्चलके  
 मुखकमलामलसौरभचञ्चलमत्तमधुव्रतलोचनिक ।  
 मणिगणकुण्डललोलपरिस्फुरदाकुलगण्डयुगामलके  
 जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम् ॥

कलरवनूपुरहेममयाचितपादसरोरुहसारुणिके  
 धिमिधिमिधिमिधिमितालविनोदितमानसमञ्जुलपादगते ।  
 तव पदपङ्कजमाश्रितमानवचित्तसदाखिलतापहर  
 जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम् ॥

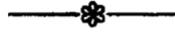
भवोत्तापान्भोधौ निपतितजनो दुर्गतियुता  
 यदि स्तौति प्रातः प्रतिदिनमनन्याश्रयतया ।  
 हयाद्वेषैः कामकरकुसुमपुञ्जै रविसुता  
 सदा भोक्ता भोगान्मरणसमये याति हरिताम् ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचायस्य  
 आगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य  
 श्रीमच्छंकरभगवत कृतौ  
 यमुनाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

## ॥ गङ्गाष्टकम् ॥



भगवति भवलीलामौलिमाल तवाम्भ  
कणमणुपरिमाण प्राणिनो य स्पृशन्ति ।  
अमरनगरनारीचामरप्राहिणीना  
विगतकलिकलङ्कातङ्कमङ्के लुठन्ति ॥ १ ॥

ब्रह्माण्ड खण्डयन्ती हरशिरसि जटावलिमुल्लासयन्ती  
स्वर्लोकादापतन्ती कनकगिरिगुहागण्डशैलात्स्खलन्ती ।  
क्षोणीपृष्ठे लुठन्ती दुरितचयचमूनिर्भर भर्त्सयन्ती  
पाथोर्धि पूरयन्ती सुरनगरसरिपावनी न पुनातु ॥२॥

मज्जन्मातङ्गकुम्भच्युतमदमदिरामादमत्तालिजाल  
स्नानै सिद्धाङ्गनाना कुचयुगविगलत्कुङ्कुमासङ्गपिङ्गम् ।  
साय प्रातर्मुनीना कुशकुसुमचयैश्छिन्नतीरस्थनीर  
पायान्नो गाङ्गमम्भ करिकरमकराक्रान्तरहस्तरङ्गम् ॥

पार वदन स १० ३६० ...  
ग्रन्थालय, क उ ति शि संस्कृत  
सरिनाथ, बाराणसी

आदावादिपितामहस्य नियमन्यापारपात्ने जल  
 पश्चात्पन्नगशायिनो भगवत पादोदक पावनम् ।  
 भूय शभुजटाविभूषणमणिर्जहोर्महर्षेरिय  
 कन्या कल्मषनाशिनी भगवती भागीरथी पातु माम् ॥

शैलन्द्राद्वतारिणी निजजल मज्जजनोत्तारिणी  
 पारावारविहारिणी भवभयश्रणीसमुत्सारिणी ।  
 शषाङ्गेरनुकारिणी हरशिरोवर्लीदलाकारिणी  
 काशीप्रान्तविहारिणी विजयत गङ्गा मनोहारिणी ॥५॥

कुतो वीची वीचिस्तव यदि गता लोचनपथ  
 त्वमापीता पीताम्बरपुरनिवास वितरसि ।  
 त्वदुत्सङ्गे गङ्गे पतति यदि कायस्तनुभृता  
 तदा मात शान्तकृतवपदलाभाऽप्यतिलघु ॥ ६ ॥

भगवति तव तीरे नीरमात्राशनोऽह  
 विगतविषयतृष्ण कृष्णमाराधयामि ।  
 सकलकलुषभङ्गे स्वर्गसोपानसङ्गे  
 तरलतरतरङ्गे देवि गङ्गे प्रसीद ॥ ७ ॥

मातर्जाह्ववि शभुसङ्गमिलिते मौलौ निधायाञ्जलिं  
 त्वत्तीरे वपुषोऽवमानसमये नारायणाङ्घ्रिद्वयम् ।  
 सानन्द स्मरतो भविष्यति भम प्राणप्रयाणोत्सवे  
 भूयाद्भक्तिरविच्युता हरिहराद्वैतात्मिका शाश्वती ॥ ८ ॥

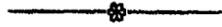
गङ्गाष्टकमिदं पुण्य  
 य पठेत्प्रयतो नर ।  
 सर्वपापविनिर्मुक्तो  
 विष्णुलोकं स गच्छति ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य  
 श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य  
 श्रामच्छकरभगवत कृतौ  
 गङ्गाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

## ॥ मणिकर्णिकाष्टकम् ॥



त्वत्तीरे मणिकर्णिके हरिहरौ सायुज्यमुक्तिप्रदौ  
वादन्तौ कुरुत परस्परमुभौ जन्तो प्रयाणोत्सवे ।  
मद्रूपो मनुजोऽयमस्तु हरिणा प्रोक्त शिवस्तत्क्षणा  
त्तन्मध्याद्गुलाञ्छनो गरुडग पीताम्बरो निगत ॥

इन्द्राद्यास्त्रिदशा पतन्ति नियत भोगक्षये ये पुन  
र्जायन्त मनुजास्ततोपि पशव कीटा पतङ्गादय ।  
ये मातर्मणिकर्णिके तव जले मज्जन्ति निष्कलमघा  
सायुज्यऽपि किरीटकौस्तुभधरा नारायणा स्युनरा ॥

काशी धन्यतमा विमुक्तनगरी सालकृता गङ्गाया  
तत्रेय मणिकर्णिका सुखकरी मुक्तिर्हि तत्तिकरी ।  
स्वर्लोकस्तुलित सहैव विबुधै काश्या सम ब्रह्मणा  
काशी क्षोणितल स्थिता गुरुतरा स्वर्गो लघुत्व गत ॥

गङ्गातीरमनुत्तम हि सकल तत्रापि काश्युत्तमा  
 तस्या सा मणिकर्णिकोत्तमतमा यत्रेश्वरो मुक्तिद ।  
 देवानामपि दुर्लभ स्थलमिद पापौघनाशक्षम  
 पूर्वोपार्जितपुण्यपुञ्जगमक पुण्यैर्जनै प्राप्यते ॥ ४ ॥

दु खाम्भोधिगतो हि जन्तुनिवहस्तेषा कथ निष्कृति  
 ज्ञात्वा तद्धि विरिञ्चिना विरचिता वाराणसी शर्मदा ।  
 लोका स्वगसुखास्ततोऽपि लघवो भोगान्तपातप्रदा  
 काशी मुक्तिपुरी सदा शिवकरी धर्माथमोक्षप्रदा ॥ ५ ॥

एको वेणुधरो धराधरधर श्रीवत्सभूषाधर  
 योऽयेक किल शकरो विषधरो गङ्गाधरो माधव ।  
 ये मातर्मणिकर्णिके तव जले मज्जन्ति ते मानवा  
 रुद्रा वा हरयो भवन्ति बहवस्तेषा बहुत्व कथम् ॥ ६ ॥

त्वत्तीरे मरण तु मङ्गलकर देवैरपि श्लाघ्यते  
 शक्रस्त मनुज सहस्रनयनैर्द्रष्टु सदा तत्पर ।  
 आयान्त सविता सहस्रकिरणै प्रत्युद्रतोऽभूत्सदा  
 पुण्योऽसौ वृषगोऽथवा गरुडग किं मन्दिर थास्यति ॥

मध्याह्ने मणिकर्णिकास्तपनज पुण्य न वक्तु क्षम  
 स्वीयैरब्धशतैश्चतुर्मुखधरो वेदाथदीक्षागुरु ।  
 योगाभ्यासबलेन चन्द्रशिखरस्तत्पुण्यपारगत  
 स्वत्तीरे प्रकराति सुप्रपुरुष नारायण वा शिवम् ॥ ८ ॥

कुच्छ्रै कोटिशतै स्वपापनिधन यन्नाश्रमेधै फल  
 तत्सर्वं मणिकर्णिकास्तपनजे पुण्ये प्रविष्ट भवेत् ।  
 स्नात्वा स्तोत्रमिदं नर पठति चेत्ससारपाथोनिधिं  
 तीर्त्वा पल्लवत्प्रयाति सदन तेजोमय ब्रह्मण ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचायस्य

श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य

श्रीमच्छंकरभगवत कृतौ

मणिकर्णिकाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

## ॥ निर्गुणमानसपूजा ॥



शिष्य उवाच—

अखण्डे सच्चिदानन्दे निर्विकल्पैकरूपिणि ।  
स्थितेऽद्वितीयभावेऽपि कथं पूजा विधीयते ॥ १ ॥

पूर्णस्यावाहनं कुत्र सर्वाधारस्य चासनम् ।  
स्वच्छस्य पाद्यमर्घ्यं च शुद्धस्याश्चमनं कुत ॥ २ ॥

निर्मलस्य कुत स्नानं वासो विश्वोदरस्य च ।  
अगोत्रस्य त्ववर्णस्य कुतस्तस्योपवीतकम् ॥ ३ ॥

निर्लेपस्य कुत गन्धं पुष्पनिर्वासनस्य च ।  
निर्विशेषस्य का भूषा कोऽलकारो निराकृते ॥ ४ ॥

निरञ्जनस्य किं धूपैर्दीपैर्वा सर्वसाक्षिणं  
निजानन्दैकवृत्तस्य नैवेद्यं किं भवेदिह ॥ ५ ॥

विश्वानन्दयितुस्तस्य किं ताम्बूलप्रकल्पते ।  
स्वयंप्रकाशचिद्रूपा योऽसावर्कादिभासक ॥ ६ ॥

गीयते श्रुतिभिस्तस्य नीराजनविधि कुत ।  
प्रदक्षिणमनन्तस्य प्रमाणोऽद्वयवस्तुन ॥ ७ ॥

वेदवाचामवेद्यस्य किं वा स्तोत्र विधीयते ।  
अन्तर्बहि सस्थितस्योद्भासनविधि कुत ॥ ८ ॥

श्रीगुरुर्वाच—

आराधयामि मणिसनिभमात्मलिङ्ग  
मायापुरीहृदयपङ्कजसनिविष्टम् ।  
श्रद्धानदीविमलाचित्तजलाभिषेकै  
र्नित्य समाधिकुसुमैरपुनर्भवाय ॥ ९ ॥

अयमेकोऽवशिष्टोऽस्मीत्येवमावाहयेच्छिवम् ।  
आसन कल्पयेत्पश्चात्स्वप्रतिष्ठात्मचिन्तनम् ॥ १० ॥

पुण्यपापरज सङ्गो मम नास्तीति वेदनम् ।  
पाद्य समर्पयेद्विद्वान्सवकल्मषनाशनम् ॥ ११ ॥

अनादिकल्पविधृतमूलाज्ञानजलाञ्जलिम् ।  
विसृजेदात्मलिङ्गस्य तदेवाध्व्यसमर्पणम् ॥ १२ ॥

ब्रह्मानन्दाब्धिकल्लोलकणकोट्यश्लेषकम् ।  
पिबन्तीन्द्रादय इति ध्यानमाचमन मतम् ॥ १३ ॥

ब्रह्मानन्दजलेनैव लोका सर्वे परिप्लुता ।

अच्छेद्योऽयमिति ध्यानमभिषचनमात्मन ॥ १४ ॥

निरावरणचैतन्य प्रकाशाऽस्मीति चिन्तनम् ।

आत्मलिङ्गस्य सत्त्वस्वमित्येव चिन्तयेन्मुनि ॥ १५ ॥

त्रिगुणात्माशेषलोकमालिकासूत्रमस्म्यहम् ।

इति निश्चयमेवात्र ह्युपवीत पर मतम् ॥ १६ ॥

अनेकवासनाभिश्चप्रपञ्चोऽय धृतो मया ।

नान्येनेत्यनुसधानमात्मनश्चन्दन भवेत् ॥ १७ ॥

रज सत्त्वतमोवृत्तित्यागरूपैस्तिळाक्षतै ।

आत्मलिङ्ग यजेन्नित्यं जीवन्मुक्तिप्रसिद्धये ॥ १८ ॥

ईश्वरो गुरुरात्मेति भेदत्रयविवर्जितै ।

बिल्बपत्रैरद्वितीयैरात्मलिङ्गं यजेच्छिवम् ॥ १९ ॥

समस्तवासनात्याग धूप तस्य विचिन्तयेत् ।

उद्योतिर्मयात्मविज्ञान दीप सदृश्येद्बुध ॥ २० ॥

नैवेद्यमात्मलिङ्गस्य ब्रह्माण्डारय महोदनम् ।

पिबानन्दरस स्वादु मृत्युरस्यापसचनम् ॥ २१ ॥

अज्ञानोच्छिष्टकरस्य क्षालन ज्ञानवारिणा ।  
 विशुद्धस्यात्मलिङ्गस्य हस्तप्रक्षालन मरेत् ॥ २२ ॥  
 रागादिगुणशून्यस्य शिवस्य परमात्मन ।  
 सरागविषयाभ्यासत्यागस्ताम्बूलचवणम् ॥ २३ ॥  
 अज्ञानध्वान्तविध्वंसप्रचण्डमतिभास्करम् ।  
 आत्मनो ब्रह्मताज्ञान नीराजनमिहात्मन ॥ २४ ॥  
 विविधब्रह्मसदृष्टिर्मालिकाभिरलकृतम् ।  
 पूर्णानन्दात्मतादृष्टिं पुष्पाञ्जलिमनुस्मरेत् ॥ २५ ॥  
 परिभ्रमन्ति ब्रह्माण्डसहस्राणि मयीश्वरे ।  
 कूटस्थाचलरूपोऽहमिति ध्यान प्रदक्षिणम् ॥ २६ ॥  
 विश्ववन्धोऽहमेवास्मि नास्ति बन्धो मदन्यत ।  
 इत्यालोचनमेवात्र स्वात्मलिङ्गस्य वन्दनम् ॥ २७ ॥  
 आत्मन सत्क्रिया प्रोक्ता कर्तव्याभावभावना ।  
 नामरूपव्यतीतात्मचिन्तन नामकीर्तनम् ॥ २८ ॥  
 श्रवण तस्य द्रवस्य श्रोतव्याभावचिन्तनम् ।  
 मनन त्वात्मलिङ्गस्य मन्तव्याभावचिन्तनम् ॥ २९ ॥

ध्यातव्याभावविज्ञान निदिध्यासनमात्मन ।  
समस्तभ्रान्तिविक्षेपराहित्येनात्मनिष्ठता ॥ ३० ॥

समाधिरात्मनो नाम नान्यच्चित्तस्य विभ्रम ।  
तत्रैव ब्रह्मणि सदा चित्तविश्रान्तिरिष्यते ॥ ३१ ॥

एव वेदान्तकल्पोक्तस्वात्मलिङ्गप्रपूजनम् ।  
कुर्वन्ना मरण वापि क्षण वा सुसमाहित ॥ ३२ ॥

सर्वदुर्वासनाजाल पदपासुमिव त्यजेत् ।  
विधूयाद्ज्ञानदु खौघ मोक्षानन्द समश्नुते ॥ ३३ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य  
श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य  
श्रीमच्छंकरभगवत कृतौ  
निर्गुणमानसपूजा संपूर्णो ॥



॥ श्री ॥

## ॥ प्रातःस्मरणस्तोत्रम् ॥

—\*—

प्रात स्मरामि हृदि सस्फुरदात्मतत्त्वं  
सच्चित्सुख परमहसगतिं तुरीयम् ।  
यस्तु प्रजागरसुषुप्तमवैति नित्य  
तद्ब्रह्म निष्कलमह न च भूतसङ्घ ॥ १ ॥

प्रातभजामि मनसा वचसामगम्य  
वाचो विभान्ति निखिला यदनुग्रहेण ।  
यन्नेति नेति वचनैर्निगमा अवोच  
स्त देवदेवमजमच्युतमाहुरग्र्यम् ॥ २ ॥

प्रातर्नमामि तमस परमर्कवर्णं  
पूर्णं सनातनपद् पुरुषोत्तमारयम् ।  
यस्मिन्निद् जगदशेषमशेषमूर्तौ  
रञ्ज्वा भुजगम इव प्रतिभासित वै ॥ ३ ॥

श्लोकत्रयमिदं पुण्यं

श्लोकत्रयविभूषणम् ।

प्रातः काले पठेद्यस्तु

स गच्छेत्परमं पदम् ॥ ४ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य

श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य

श्रीमच्छंकरभगवतः कृतौ

प्रातः स्मरणस्तोत्रं संपूर्णम् ॥



॥ श्रीः ॥

## ॥ जगन्नाथाष्टकम् ॥



कदाचित्कालिन्दीतटविपिनसगीतकवरो  
मुदा गापीनारीवदनकमलास्वादमधुप ।  
रमाशुभ्रह्यामरपतिगणशार्चितपदो  
जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामा भवतु मे ॥ १ ॥

भुजे सव्ये वेणु शिरसि शिखिपिच्छ कटितटे  
दुकूल नेत्रान्त सहचरकटाक्ष विदधत् ।  
सदा श्रीमद्वृन्दावनवसतिलीलापरिचयो  
जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ २ ॥

महाम्भोधेस्तीरे कनकरुचिर नीलशिखरे  
वसन्प्रासादान्त सहजबलभद्रेण बलिना ।  
सुभद्रामध्यस्थ सकलसुरसेवावसरदो  
जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ३ ॥

कृपापारावार सजलजलदश्रेणिरुचिरो  
 रमावाणीसोमस्फुरदमलपद्मोद्भवमुखै ।  
 सुरेन्द्रैराराध्य श्रुतिगणशिखागीतचरितो  
 जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ४ ॥

रथारूढो गच्छन्पथि मिलितभूदेवपटलै  
 स्तुतिप्रादुर्भाव प्रतिपदमुपाकर्ण्य सदय ।  
 दयासिन्धुर्बन्धु सकलजगता सिन्धुसुतया  
 जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ५ ॥

परब्रह्मापीड कुवलयदलोत्फुल्लनयनो  
 निवासी नीलाद्रौ निहितचरणोऽनन्तशिरसि ।  
 रसानन्दो राधासरसवपुरालिङ्गनसुखो  
 जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ६ ॥

न वै प्रार्थ्यं राज्य न च कनकता भोगविभवे  
 न याचेऽह रम्या निखिलजनकाम्या वरवधूम् ।  
 सदा काले काले प्रमथपतिना गीतचरितो  
 जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ७ ॥

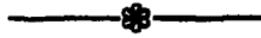
हर त्व ससार द्रुततरमसार सुरपते  
 हर त्व पापाना विततिमपरा यादवपते ।  
 अहो दीनानाथ निहितमचल पातुमनिश  
 जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ८ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिज्जाजकाचार्यस्य  
 श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य  
 श्रीमच्छकरभगवत् कृतौ  
 जगन्नाथाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

# ॥ षट्पदीस्तोत्रम् ॥



अविनयमपनय विष्णो

दमय मन शमय विषयमृगतृष्णाम् ।

भूतदया विस्तारय

तारय ससारसागरत ॥ १ ॥

दिव्यधुनीमकरन्दे

परिमलपरिभोगसञ्चिदानन्द ।

श्रीपतिपदारविन्दे

भवभयखेदच्छिदे वन्दे ॥ २ ॥

सत्यपि भेदापगमे

नाथ तवाह न मामकीनस्त्वम् ।

सामुद्रो हि तरङ्ग

कचन समुद्रो न तारङ्ग ॥ ३ ॥

उद्धृतनग नगभिदनुज  
 दनुजकुलामित्र मित्रशशिदृष्टे ।  
 दृष्टे भवति प्रभवति  
 न भवति किं भवतिरस्कार ॥ ४ ॥

मत्स्यादिभिरवतारै-  
 रवतारवतावता सदा वसुधाम् ।  
 परमेश्वर परिपाल्यो  
 भवता भवतापभीतोऽहम् ॥ ५ ॥

दामोदर गुणमन्दिर  
 सुन्दरवदनारविन्द गोविन्द ।  
 भवजलधिमथनमन्दर  
 परम दरमपन्नय त्व मे ॥ ६ ॥

नारायण करुणामय  
 शरण करवाणि तावकौ चरणौ ।  
 इति षट्पदी मदीये  
 वदनसरोजे सदा वसतु ॥ ७ ॥

इति षट्पदीस्तोत्र सपूर्णम् ॥

॥ श्री ॥

## ॥ भ्रमराम्बाष्टकम् ॥

—\*—

चाञ्चल्यारुणलोचनाञ्चितकृपाचन्द्राकचूडामणिं  
चारुस्मेरमुखा चराचरजगत्सरक्षणीं तत्पदाम् ।  
चञ्चम्पकनासिकाप्रविलसन्मुक्तामणीरञ्जिता  
श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ १ ॥

कस्तूरीतिलकाञ्चितेन्दुविलसत्प्रोद्भासिफालस्थली  
कर्पूरद्रवमिश्रचूर्णखदिरामोदोल्लसद्वीटिकाम् ।  
लोलापाङ्गतरङ्गितैरधिकृपासारैर्नतानन्दिनीं  
श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ २ ॥

राजन्मत्तमरालमन्दगमना राजीवपत्रेक्षणा  
राजीवप्रभवादिदेवमकुटै राजत्पदाम्भोरुहाम् ।  
राजीवायतमन्दमण्डितकुचा राजाधिराजेश्वरीं  
श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ३ ॥

षट्पारा गणदीपिका शिवसती षड्वैरिवर्गापहा  
 षट्चक्रान्तरसस्थिता वरसुधा षड्योगिनीवेष्टिताम् ।  
 षट्चक्राञ्चितपादुकाञ्चितपदा षड्भावगा षोडशीं  
 श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ४ ॥

श्रीनाथादृतपालितत्रिभुवना श्रीचक्रसचारिणीं  
 ज्ञानासक्तमनोजयौवनलसद्गन्धर्वकन्यादृताम् ।  
 दीनानामतिवेल्लभाग्यजननीं दिव्याम्बरालकृता  
 श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ५ ॥

लावण्याधिकभूषिताङ्गलतिका लाक्षालसद्रागिणीं  
 सेवायातसमस्तदेवनिता सीमन्तभूषान्विताम् ।  
 भावोल्लासवशीकृतप्रियतमा भण्डासुरच्छेदिनी  
 श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ६ ॥

घन्या सोमविभावनीयचरिता धाराधरश्यामला  
 मुन्याराधनमेधिनीं सुमवता मुक्तिप्रदानव्रताम् ।  
 कन्यापूजनसुप्रसन्नहृदया काञ्चीलसन्मध्यमा  
 श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ७ ॥

कपूर्वागरकुङ्कुमाङ्कितकुचा कपूर्ववर्णस्थिता  
कृष्टोत्कृष्टसुकृष्टकमदहना कामेश्वरीं कामिनीम् ।  
कामार्क्षीं करुणारसार्द्रहृदया कल्पान्तरस्थाधिनीं  
श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ८ ॥

गायत्रीं गरुडध्वजा गगनगा गान्धर्वगानप्रिया  
गम्भीरा गजगामिनीं गिरिसुता गन्धाक्षतालकृताम् ।  
गङ्गागौतमगर्गसनुतपदा गा गौतमीं गोमतीं  
श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य  
श्रागोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य  
श्रीमच्छकरभगवत् कृतौ  
अमराम्बाष्टकं सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

## ॥ शिवपञ्चाक्षरनक्षत्रमालास्तोत्रम् ॥

—\*—

श्रीमदात्मने गुणैकसिन्धवे नम शिवाय  
धामलेशधूतकोकबन्धवे नम शिवाय ।  
नामशेषितानमद्भवान्धवे नम शिवाय  
पामरेतरप्रधानबन्धवे नम शिवाय ॥ १ ॥

कालभीतविप्रबालपाल ते नम शिवाय  
शूलभिन्नदुष्टदक्षफाल ते नम शिवाय ।  
मूलकारणाय कालकाल ते नम शिवाय  
पालयाधुना दयालवाल ते नम शिवाय ॥ २ ॥

इष्टवस्तुमुख्यदानहेतवे नम शिवाय  
दुष्टदैत्यवशधूमकेतवे नम शिवाय ।  
सृष्टिरक्षणाय धर्मसेतवे नम शिवाय  
अष्टमूर्तये वृषेन्द्रकेतवे नम शिवाय ॥ ३ ॥

आपदद्रिभेदटङ्कहस्त ते नम शिवाय  
पापहारिदिव्यसिन्धुमस्त ते नम शिवाय ।  
पापदारिणे लसन्नमस्तते नम शिवाय  
शापदोषखण्डनप्रशस्त ते नम शिवाय ॥ ४ ॥

व्योमकेश दिव्यभव्यरूप ते नम शिवाय  
हेममेदिनीधरेन्द्रचाप ते नम शिवाय ।  
नाममात्रदग्धसर्वपाप ते नम शिवाय  
कामनैकतानहृदुराप ते नम शिवाय ॥ ५ ॥

ब्रह्ममस्तकावलीनिबद्ध ते नम शिवाय  
जिह्मगेन्द्रकुण्डलप्रसिद्ध ते नम शिवाय ।  
ब्रह्मणे प्रणीतवेदपद्धते नम शिवाय  
जिह्मकालदेहदत्तपद्धते नम शिवाय ॥ ६ ॥

कामनाशनाय शुद्धकर्मणे नम शिवाय  
सामगानजायमानशर्मणे नम शिवाय ।  
हेमकान्तिचाकचक्र्यवर्मणे नम शिवाय  
सामजासुराङ्गलब्धचर्मणे नम शिवाय ॥ ७ ॥

जन्ममृत्युघोरदुःखहारिणे नम शिवाय  
 चिन्मयैकरूपदेहधारिणे नम शिवाय ।  
 मन्मनोरथावपूर्तिकारिणे नम शिवाय  
 सन्मनोगताय कामत्रैरिणे नम शिवाय ॥ ८ ॥

यक्षराजबन्धवे दयालवे नम शिवाय  
 दक्षपाणिशोभिकाञ्चनालवे नम शिवाय ।  
 पक्षिराजवाहद्वच्छयालवे नम शिवाय  
 अक्षिफाल वेदपूततालवे नम शिवाय ॥ ९ ॥

दक्षहस्तनिष्ठजातवेदसे नम शिवाय  
 अक्षरात्मने नमद्विडौजसे नम शिवाय ।  
 दीक्षितप्रकाशितात्मतेजसे नम शिवाय  
 उक्षराजवाह ते सता गते नम शिवाय ॥ १० ॥

राजताचलेन्द्रसानुवासिने नम शिवाय  
 राजमाननित्यमन्दहासिने नम शिवाय ।  
 राजकोरकावतसभासिने नम शिवाय  
 राजराजमित्रताप्रकाशिने नम शिवाय ॥ ११ ॥

दीनमानवालिकामधेनवे नम शिवाय  
सूनवाणदाहकृत्कृशानवे नम शिवाय ।  
स्वानुरागभक्तरत्नसानवे नम शिवाय  
दानवान्धकारचण्डभानवे नम शिवाय ॥ १२ ॥

सर्वमङ्गलाकुचाग्रशायिने नम शिवाय  
स्रवदेवतागणातिशायिन नम शिवाय  
पूर्वदेवनाशस्रविधायिने नम शिवाय  
सर्वमन्मनोजभङ्गदायिने नम शिवाय ॥ १३ ॥

स्तोकभक्तितोऽपि भक्तपोषिणे नम शिवाय  
माकरन्दसारवर्षिभाषिणे नम शिवाय ।  
एकबिल्वदानतोऽपि तोषिणे नम शिवाय  
नैकजन्मपापजालशोषिणे नम शिवाय ॥ १४ ॥

सर्वजीवरक्षणैकशीलिने नम शिवाय  
पार्वतीप्रियाय भक्तपालिने नम शिवाय ।  
दुर्विदग्धदैत्यसैन्यदारिण नम शिवाय  
शर्वरीशधारिणे कपालिने नम शिवाय ॥ १५ ॥

पाहि मामुमामनोज्ञदेह ते नम शिवाय  
 देहि मे वर सिताद्रिगेह ते नम शिवाय ।  
 मोहितर्षिकामिनीसमूह ते नम शिवाय  
 स्वेहितप्रसन्न कामदोह ते नम शिवाय ॥ १६ ॥

मङ्गलप्रदाय गोतुरग ते नम शिवाय  
 गङ्गया तरङ्गितोत्तमाङ्ग ते नम शिवाय ।  
 सङ्गरप्रवृत्तवैरिभङ्ग त नम शिवाय  
 अङ्गजारय करेकुरङ्ग त नम शिवाय ॥ १७ ॥

ईहितक्षणप्रदानहेतवे नम शिवाय  
 आहिताग्निपालकोक्षकेतवे नम शिवाय ।  
 देहकान्तिधूतरौप्यघातवे नम शिवाय  
 गेहदुःखपुञ्जधूमकेतवे नम शिवाय ॥ १८ ॥

त्र्यक्ष दीनसत्कृपाकटाक्ष ते नम शिवाय  
 दक्षसप्ततन्तुनाशदक्ष ते नम शिवाय ।  
 ऋक्षराजभानुपावकाक्ष त नम शिवाय  
 रक्ष मा प्रपन्नमात्ररक्ष ते नम शिवाय ॥ १९ ॥

न्यङ्कुपाणये शिवकराय ते नम शिवाय  
सकटाब्धितीर्णिकिकराय ते नम शिवाय ।  
पङ्कभीषिताभयकराय ते नम शिवाय  
पङ्कजाननाय शकराय ते नम शिवाय ॥ २० ॥

कर्मपाशनाश नीलकण्ठ ते नम शिवाय  
शर्मदाय नर्यभस्मकण्ठ ते नम शिवाय ।  
निर्ममर्षिस्रोवितोपकण्ठ ते नम शिवाय  
कुर्महे नतीर्नमद्विकुण्ठ ते नम शिवाय ॥ २१ ॥

विष्टपाधिपाय नम्रविष्णवे नम शिवाय  
शिष्टविप्रहृद्गुहाचरिष्णवे नम शिवाय ।  
इष्टवस्तुनित्यतुष्टजिष्णवे नम शिवाय  
कष्टनाशनाय लोकजिष्णवे नम शिवाय ॥ २२ ॥

अप्रमेयदिव्यसुप्रभाव ते नम शिवाय  
सत्प्रपन्नरक्षणस्वभाव ते नम शिवाय ।  
स्वप्रकाश निस्तुलानुभाव ते नम शिवाय  
विप्रडिम्भदर्शितार्द्रभाव ते नम शिवाय ॥ २३ ॥

सेवकाय मे मृड प्रसीद ते नम शिवाय  
 भावलभ्य तावकप्रसाद ते नम शिवाय ।  
 पावकाक्ष देवपूज्यपाद ते नम शिवाय  
 तावकाङ्घ्रिभक्तदत्तमोद ते नम शिवाय ॥ २४ ॥

भुक्तिमुक्तिदिव्यभोगदायिने नम शिवाय  
 शक्तिकल्पितप्रपञ्चभागिने नम शिवाय ।  
 भक्तसकटापहारयोगिने नम शिवाय  
 युक्तसन्मन सरोजयोगिने नम शिवाय ॥ २५ ॥

अन्तकान्तकाय पापहारिण नम शिवाय  
 शान्तभायदन्तिचर्मधारिणे नम शिवाय ।  
 सतताश्रितव्यथाविदारिणे नम शिवाय  
 जन्तुजातनित्यसौख्यकारिणे नम शिवाय ॥ २६ ॥

शूलिने नमो नम कपालिने नम शिवाय  
 पालिने विरिञ्चितुण्डमालिने नम शिवाय ।  
 लीलिने विशेषरुण्डमालिने नम शिवाय  
 शीलिने नम प्रपुण्यशालिने नम शिवाय ॥ २७ ॥

शिवपञ्चाक्षरनक्षत्रमालास्तोत्रम् ।

१२९

शिवपञ्चाक्षरमुद्रा

चतुष्पदोल्लासपद्यमणिघटिताम् ।

नक्षत्रमालिकामिह

दधदुपकण्ठ नरो भवेत्सोम ॥ २८ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचायस्य

श्रीगोविदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य

श्रीमच्छकरभगवत कृतौ

शिवपञ्चाक्षरनक्षत्रमालास्तोत्र सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

## ॥ द्वादशलिङ्गस्तोत्रम् ॥



सौराष्ट्रदेशे वसुधावकाशे  
ज्योतिमय चन्द्रकलावतसम् ।  
भक्तिप्रदानाय कृतावतार  
त सोमनाथ शरण प्रपद्ये ॥ १ ॥

श्रीशैलशृङ्गे विविधप्रसङ्गे  
शेषाद्रिशृङ्गेऽपि सदा वसन्तम् ।  
तमर्जुन मल्लिकपूर्वमेन  
नमामि ससारसमुद्रसेतुम् ॥ २ ॥

अवन्तिकाया विहितावतार  
मुक्तिप्रदानाय च सज्जनानाम् ।  
अकालमृत्यो परिरक्षणार्थं  
वन्दे महाकालमह सुरेशम् ॥ ३ ॥

कावेरिकानर्मदयो पवित्रे  
 सभागभे सज्जनतारणाय ।  
 सदैव मान्धातृपुरे वसन्त  
 मोंकारमीश शिवमेकमीढे ॥ ४ ॥

पूर्वोत्तरे पारलिकाभिधाने  
 सदाशिव त गिरिजासमेतम् ।  
 सुरासुराराधितपादपङ्क  
 श्रीवैद्यनाथ सतत नमामि ॥ ५ ॥

आमर्दसङ्गे नगरे च रम्ये  
 विभूषिताङ्ग विविधैश्च भोगै ।  
 सद्भुक्तिमुक्तिप्रदमीशमेक  
 श्रीनागनाथ शरण प्रपद्ये ॥ ६ ॥

सानन्दमानन्दवने वसन्त  
 मानन्दकन्द हर्तपापवृन्दम् ।  
 वाराणसीनाथमनाथनाथ  
 श्रीविश्वनाथ शरणं प्रपद्ये ॥ ७ ॥

यो डाकिनीशाकिनिकासमाजे  
 निषेव्यमाण पिशिताशनैश्च ।  
 सदैव भीमादिपद्मसिद्ध  
 त शकर भक्तहित नमामि ॥ ८ ॥

श्रीताम्रपर्णीजलराशियोगे  
 निबद्धय सेतु निशि बिल्वपत्रै ।  
 श्रीरामचन्द्रेण समर्पित त  
 रामेश्वराख्य सतत नमामि ॥ ९ ॥

सिंहाद्रिपार्श्वेऽपि तट रमन्त  
 गोदावरीतीरपवित्रदेशे ।  
 यद्दर्शनात्पातकजातनाश  
 प्रजायते त्र्यम्बकमीशमीडे ॥ १० ॥

हिमाद्रिपार्श्वेऽपि तटे रमन्त  
 स्रपूज्यमान सतत मुनीन्द्रै ।  
 सुरासुरैर्यक्षमहोरगाद्यै  
 केदारसङ्ग शिवमीशमीडे ॥ ११ ॥

पलापुरीरम्यशिवालयेऽस्मि

न्धमुल्लसन्त त्रिजगद्वरेण्यम् ।

वन्दे महोदारतरस्वभाव

सदाशिव त धिषणेश्वराख्यम् ॥ १२ ॥

एतानि लिङ्गानि सदैव मर्त्या

प्रातः पठन्तोऽमलमानसाश्च ।

ते पुत्रपौत्रैश्च धनैरुदारै

सत्कीर्तिभाज सुखिनो भवन्ति ॥ १३ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य

श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य

श्रीमच्छकरभगवत कृतौ

द्वादशलिङ्गस्तोत्र सपूर्णम् ।



॥ श्रा ॥

## ॥ अर्धनारीश्वरस्तोत्रम् ॥



चाम्पेयगौरार्धशरीरकायै  
कर्पूरगौराधशरीरकाय ।  
धम्मिल्लकायै च जटाधराय  
नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ १ ॥

कस्तूरिकाकुङ्कुमचर्चितायै  
चितारज पुञ्जविचर्चिताय ।  
कृतस्मरायै विकृतस्मराय  
नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ २ ॥

झणत्कणत्कङ्कणनूपुरायै  
पादाब्जराजत्फणिनूपुराय ।  
हेमाङ्गदायै भुजगाङ्गदाय  
नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ ३ ॥

विशालनीलोत्पललोचनायै  
विकासिपङ्केरुहलोचनाय ।  
समेक्षणायै विषमेक्षणाय  
नम शिवायै च नम शिवाय ॥ ४ ॥

मन्दारमालाकलितालकायै  
कपालमालाङ्कितकन्धराय ।  
दिव्याम्बरायै च दिग्म्बराय  
नम शिवायै च नम शिवाय ॥ ५ ॥

अम्भोधरश्यामलकुन्तलायै  
तटित्प्रभाताम्रजटाधराय ।  
निरीश्वरायै निखिलेश्वराय  
नम शिवायै च नम शिवाय ॥ ६ ॥

प्रपञ्चसृष्ट्युन्मुखलास्यकायै  
समस्तसहारकताण्डवाय ।  
जगज्जनन्यै जगदेकपित्रे  
नम शिवायै च नम शिवाय ॥ ७ ॥

प्रदीपतरन्नोज्ज्वलकुण्डलायै

स्फुरन्महापन्नगभूषणाय ।

शिवान्वितायै च शिवान्विताय

नम शिवायै च नम शिवाय ॥ ८ ॥

एतत्पठेदष्टकमिष्टद या

भक्त्या स मान्यो भुवि दीघजीवी ।

प्राप्नोति सौभाग्यमनन्तकाल

भूयात्सदा तस्य समस्तसिद्धि ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य

श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य

श्रीमच्छकरभगवत कृतौ

अर्धनारीश्वरस्तोत्रम् सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

## ॥ शारदाभुजंगप्रयाताष्टकम् ॥



सुवक्षोजकुम्भा सुधापूर्णकुम्भा

प्रसादावलम्बा प्रपुण्यावलम्बाम् ।

सदास्येन्दुबिम्बा सदानोष्ठबिम्बा

भजे शारदाम्बामजस्र मदम्बाम् ॥ १ ॥

कटाक्षे दयार्त्री करे ज्ञानमुद्रा

कलाभिर्विनिद्रा कलापै सुभद्राम् ।

पुरर्णी विनिद्रा पुरस्तुङ्गभद्रा

भजे शारदाम्बामजस्र मदम्बाम् ॥ २ ॥

ललामाङ्गफाला लसद्दानलोला

स्वभक्तैकपाला यश श्रीकपोलाम् ।

करे त्वक्षमाला कनत्प्रन्नलोला

भजे शारदाम्बामजस्र मदम्बाम् ॥ ३ ॥

सुसीमन्तवेर्णी दृशा निर्जितैर्णी  
 रमत्कीरवार्णी नमद्वज्रपाणीम् ।  
 सुधामन्थरास्या मुदा चिन्त्यवेर्णी  
 भजे शारदाम्बामजस्र मदम्बाम् ॥ ४ ॥

सुशान्ता सुदेहा दृगन्ते कचान्ता  
 लसत्सल्लताङ्गीमनन्तामचिन्त्याम् ।  
 स्मरेत्तापसै सङ्गपूर्वस्थिता ता  
 भजे शारदाम्बामजस्र मदम्बाम् ॥ ५ ॥

कुरङ्गे तुरगे मृगेन्द्रे खगेन्द्रे  
 मराले मदेभे महोक्षेऽधिरूढाम् ।  
 महत्या नवम्या सदा सामरूपा  
 भजे शारदाम्बामजस्र मदम्बाम् ॥ ६ ॥

ञ्जलत्कान्तिवह्निं जगन्मोहनाङ्गी  
 भजे मानसाम्भोजसुध्रान्तभृङ्गीम् ।  
 निजस्तोत्रसगीतनृत्यप्रभाङ्गी  
 भजे शारदाम्बामजस्र मदम्बाम् ॥ ७ ॥

शारदाभुजगप्रयाताष्टकम् ।

१३९

भवाम्भोजनेत्राजसपूज्यमाना

लसन्मन्दहासप्रभावक्त्रचिह्नम् ।

चञ्चलश्वलाचारुताटङ्ककणी

भजे शारदाम्बामजस्र मदम्बाम् ॥ ८ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य

श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य

श्रीमच्छंकरभगवत कृतौ

शारदाभुजगप्रयाताष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

## ॥ गुर्वष्टकम् ॥

—\*—

शरीर सुरूप तथा वा कलत्र

यशश्चारु चित्र धन मेरुतुल्यम् ।

मनश्चेन्न लग्न गुरोरङ्घ्रिपद्मे

तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ १ ॥

कलत्र धन पुत्रपौत्रादि सर्वं

गृह बान्धवा सर्वमेतद्धि जातम् ।

मनश्चेन्न लग्न गुरोरङ्घ्रिपद्मे

तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ २ ॥

षडङ्गादिवेदो मुखे शास्त्रविद्या

कवित्वादि गद्य सुपद्य करोति ।

मनश्चेन्न लग्न गुरोरङ्घ्रिपद्मे

तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ ३ ॥

विदेशेषु मान्य स्वदेशेषु धन्य

सदाचारवृत्तेषु मत्तो न चान्य ।

मनश्चेन्न लग्न गुरोरङ्घ्रिपद्मे

तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ ४ ॥

क्षमामण्डले भूपभूपालवृन्दै

सदा सेवित यस्य पादारविन्दम् ।

मनश्चेन्न लग्न गुरोरङ्घ्रिपद्मे

तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ ५ ॥

यशो मे गत दिक्षु दानप्रतापा

जगद्वस्तु सर्वं करे यत्प्रसादात् ।

मनश्चेन्न लग्न गुरोरङ्घ्रिपद्मे

तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ ६ ॥

न भोगे न योगे न वा वाजिराजौ

न कान्तामुखे नैव वित्तेषु वित्तम् ।

मनश्चेन्न लग्न गुरोरङ्घ्रिपद्मे

तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ ७ ॥

भरण्ये न वा स्वस्य गोहे न कार्ये  
 न देहे मनो वर्तते मे त्वनर्थ्ये ।  
 मनश्चेन्न लग्न गुरोरङ्घ्रिपद्मे  
 तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ ८ ॥

गुरोरष्टकं य पठेत्पुण्यदेही  
 यतिर्भूपतिर्ब्रह्मचारी च गोही ।  
 लभेद्वाञ्छितार्थं पदं ब्रह्मसङ्ग  
 गुरोरुक्तवाक्ये मनो यस्य लग्नम् ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य  
 श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य  
 श्रीमच्छंकरभगवत कृतौ  
 गुर्वष्टकं सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

## ॥ काशीपञ्चकम् ॥



मनो निवृत्ति परमोपशान्ति  
सा तीर्थवर्या मणिकर्णिका च ।  
ज्ञानप्रवाहा विमलादिगङ्गा  
सा काशिकाह निजबोधरूपा ॥ १ ॥

यस्यामिद् कल्पितमिन्द्रजाल  
चराचर भाति मनोविलासम् ।  
सच्चित्सुखैका परमात्मरूपा  
सा काशिकाह निजबोधरूपा ॥ २ ॥

कोशेषु पञ्चस्वधिराजमाना  
बुद्धिर्भवानी प्रतिदेहगेहम् ।  
साक्षी शिव सर्वगतोऽन्तरात्मा  
सा काशिकाह निजबोधरूपा ॥ ३ ॥

काश्या हि काशत काशी  
 काशी सर्वप्रकाशिका ।  
 सा काशी विदिता येन  
 तेन प्राप्ता हि काशिका ॥ ४ ॥

काशीक्षेत्र शरीर त्रिभुवनजननी व्यापिनी ज्ञानगङ्गा  
 भक्ति श्रद्धा गयेय निजगुरुचरणध्यानयोग प्रयाग ।  
 विश्वेशोऽयं तुरीय सकलजनमन साक्षिभूतोऽन्तरात्मा  
 देहे सर्वं मदीये यदि वसति पुनस्तीर्थमन्यत्किमस्ति ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य  
 श्रागोविन्दभगवत्पूज्यपादाशिष्यस्य  
 श्रीमच्छकरभगवत कृतौ  
 काशीपञ्चक संपूर्णम् ॥

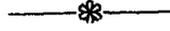






॥ श्रीः ॥

## ॥ श्लोकानुक्रमणिका ॥



	पृष्ठम्		पृष्ठम्
अ		अनादिकल्प	१०८
अखण्डे सच्चिदानं दे	१०७	अनेकवासनामिश्र	१०९
अगौरनेत्रै	८७	अतकातकाय	१२८
अग्रे वह्नि	६६	अधस्य मे हृतविवेक	१६
अङ्ग गलित	६५	अन्नपूर्णे सदापूर्णे	७७
अङ्ग हरे पुलक	७०	अपारकारुण्य	८५
अच्युत केशव राम	३९	अप्रमेयादि य	१२७
अच्युत केशव सत्य	३९	अम्भोधरश्यामल	१३५
अच्युतस्याष्टक य	४१	अयमेकोऽवशिष्टो	१०८
अज रुक्मिणीप्राण	३८	अयि मधुरे	९८
अज्ञानध्वान्त	११	अरण्ये न वा स्वस्य	१४२
अज्ञानोच्छिष्टकरस्थ	११०	अर्थमनर्थ	६९
अट्टहासभिन्न	९०	अलक्षलक्ष	९३
अतिविपदाम्बुधि	९९	अलक्ष्यलक्ष	९३
अद्राक्षमक्षीण	८४	अवन्तिकाया	१४३

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
अविनयमपनय	११७	आहुयस्य स्वरूप	२२
अवीरासनस्थै०	९	इ	
अव्यान्निर्घात	२२	इदं तु नमदाष्टक	९४
असिधुप्रकोपै०	९	इन्द्राद्यास्त्रिदशा	१०४
असीतासमेतै०	८	इष्टवस्तुसुरय	१२२
असूनायम्यादौ	४२	इष्टाविशिष्टमतयो०	७२
अहो धृतं स्वन	९४	ई	
आ		ईश्वरो गुरुरात्मेति	१०९
आकृतिसाम्याच्छात्म०	११	ईहितक्षणप्रदान	१२६
आक्रामन्द्रया त्रिलोकी	२५	उ	
आचार्यैर्म्यो लब्ध	४६	उद्धृतनग	११८
आत्मन सत्क्रिया	११०	उद्यन्द्रानुसहस्र	७९
आदावादिपितामहस्य	१०२	उन्नम्र कम्प्रमुच्चै०	२७
आदिक्षान्त	७६	उपासकानां त्व०	८८
आदौ कल्पस्य	२८	उपासकानां य०	८४
आपदद्रिभेद	१२३	उपासते य	८७
आपादादा च शीर्षात्	३४	उर्वीसर्वजनेश्वरी	७६
आमर्दसत्रे	१३१	ए	
आमीलिताक्ष०	७१	एकीकृत्यानेक	५२
आराधयामि	१०८	एकेन चक्रमपरेण	१६
आखेपन्नन्त	८६	एकेन मुद्रा	८६

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
एको वेणुधरो	१०५	कलाभिरिदो०	८५
एतत्पठेदष्टकमिष्टद	१३६	कस्तूरिकाकुङ्कुम	१३४
एतत्पवनसुतस्य	२	कस्तूरीतिलका०	११९
एतानि लिङ्गानि	१३३	कस्व कोऽह	६७
एलापुरीरम्य	१३३	का ते कान्ता क०	६४
एव वेदान्त०	१११	का ते काताघ०	६५
ओ		कात कारणकारण	५७
ओत प्रोत	५४	का त वक्षो नितान्त	२९
क		कान्त्यम्भ पूरपूर्णे	२८
कटाक्षे दयाद्रौ	१३७	कान्त्या निदित	८७
कण्ठाकल्पोद्गतैर्य	३०	काम क्रोध	६८
कदाचित्कालिदी	११४	कामनाशनाय	१२३
कफव्याहृतोष्ण	२१	कालभीतविप्र	१२२
कमले कमलाक्ष	७४	कालभैरवाष्टक	९१
कम्पाकारा	२३	कालाम्बुदालिललितो०	७१
करिवरभौक्तिक	९९	कावेरिकानर्मदयो	१३१
कर्णस्थस्वर्णकम्पो	३१	काशीक्षेत्र शरीर	१४४
कर्पूरागरुकुङ्कुमा०	१२१	काशी धन्यतमा	१०४
कर्मपाशानाश	१२७	काश्या हि काशते	१४४
कलत्र धन	१४०	किरीटोज्ज्वलत्सर्व	३७
कलरवनूपुर	१००	कुञ्चितै कुन्तलै	४१

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
कुतो वीची	१०२	ग-धवामर	८२
कुरङ्गे तुरगे	१३८	गायत्री गरुडध्वजा	१२१
कुरुते गङ्गा	६६	गायते श्रुतिभि	१०८
कृच्छ्रै कोटिशतै	१०६	गीदेवतति	७२
कृपापारावार	११५	गुरुचरणाम्बुज	६९
कृपापारावारा	९८	गुरोरष्टक य	१४२
कृष्ण गोवि द हे	४०	गेय गीतानाम	६८
कैलासाचल	७६	गोपाल प्रमुलाला	५७
कोटीराजदरल	८१	गोपीमण्डलगोष्ठी	५७
कोऽय देहे देव	५३	गोवि दाष्टकमेतत्	५८
कोशानेता पञ्च	५०	च	
कोशेषु पञ्चस्वधि०	१४३	चक्रस्थेऽचपले	८१
को ह्येवायादात्मनि	५३	च द्राकार्कानल	७७
कणद्रलमञ्जीर	४	चाञ्चल्यारुण	११९
क्षत्रत्राणकरी	७७	चाम्पेयगौरार्ध	१३४
क्षमामण्डले	१४१	चारस्थित सोम	८६
क्षेत्रज्ञत्व प्राप्य	५१	चिदशे विभु	१८
ग		ज	
गङ्गातीरमनुत्तम	१०५	जटिली मुण्डी	६५
गङ्गाष्टकमिद पुण्य	१०३	जन्ममृत्युघोर	१२४
गत तदैव	९३	जरेय पिशाचविव	२०

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
जलच्युताच्युता०	९६	त्वदम्बुलीन	९२
जलान्तकेलि	९६	त्वमाचामोपेन्द्र	५९
जाग्रदुष्टा स्थूल	४९	त्वमेवासि दैव पर	५
जीमूतश्यामभासा	२३	त्वयि मयि चा०	६१
ज्वलत्कान्तिवह्निं	१३८	दृ	
ज्ञ		दद्याद्दयानुपवनो	७२
ज्ञानत्कणत्कङ्कण	१३४	दशग्रीवमुग्र	८
त		दशाङ्ग धूप	६०
तटिद्वर्णे वस्त्रे	६०	दक्षहस्तनिष्ठ	१२४
तटिद्वासस नील	३६	दामोदर गुणमन्दिर	११८
तत्त्वार्थम तेवस०	८६	दिक्कालौ वेदय तौ	३२
तरङ्गसङ्ग	९६	दिग्घस्तिभि	७४
तरुणारुणमुखकमल	१	दिनयामि यौ	६५
तव हितमेक वचन	१२	दि यधुनीमकरद	११७
तावत्सव सत्य	५५	दीनमानवालि०	१२५
त्रिगुणात्माशेष	१०९	दु खाम्भोधिगतो	१०५
त्रैविष्टपरिपुवीरघ्न	५६	दूरीकृतसीतार्ति	२
त्र्यक्ष दीनसत्कृपा०	१२६	दृश्यादृश्य०	७६
त्वत्तीरे मणिकर्णिके	१०४	दृष्टा गीतास्वक्षरतत्त्व	५१
त्वत्तीरे मरण	१०५	देवराजसे यमान	८९
त्वत्प्रभुजीवप्रिय०	११	देवी सर्वविचित्र	७७

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
देवो भीतिं विधातु	२७	नादे नारद०	८२
दैवतानि कति	८७	नानायोगिमुनींश्च	८०
द्वैतैकत्व यच्च	५२	नानारत्नविचित्र	७५
घ		नाभीनालीकमूलात्	२८
घन्या सोमविभाषनीय	१२०	नारायण कवणामय	११८
घर्मसेतुपालक	९०	नारीस्तनभर	६२
घेनुकारिष्ठहा०	४०	नाह प्राणो नैव	५४
ध्यातयाभाव	१११	निजे मानसे मदिरे	५
न		नित्य स्नेहातिरेकात्	३१
न भोगे न योगे	१४१	नित्यान दकरी	७५
नम सच्चिदानन्द	६	निरञ्जनस्य किं	१०७
नमस्कारोऽष्टाङ्ग	६१	निरावरणचैतय	१०९
नमस्ते नमस्ते	६	निर्मलस्य कुत	१०७
नमस्ते सुमित्रासुपुत्रा०	९	निलैपस्य कुतो	१०७
नमो भक्तियुक्तानुरक्ताय	६	नैवेद्यमात्मलिङ्गस्य	१०९
नमो विश्वकर्त्रे	६	न्यङ्कुपाणये	१२७
नमोऽस्तु नालीक	७३	प	
नरातङ्कोदृङ्क	४३	पद्मानन्दप्रदाता	३०
नलिनीदलगत	६३	पयोम्भोधेर्दीपात्	५९
नवजलदधुति	९९	परब्रह्मापीड	११५
न वै प्रार्थ्ये	११५	परिभ्रमन्ति ब्रह्मा०	११०

श्लोकानुक्रमणिका ।

१५३

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
पवित्र चरित्र	७	प्रह्लादनारदपराशर	१७
पश्यञ्शुद्धोऽप्यक्षर	४९	प्राणानायम्योमिति	४६
पश्यञ्शृण्वन्नत्र	४८	प्राणायाम	६९
पातात्पातालपातात्	३२	प्राणो वाह वाक्	५३
पाताल यस्य नाल	२८	प्रात स्मरामि	११२
पादाम्भोज मसेवा	२६	प्रातर्नमामि	११२
पायान्द्रक्त स्वात्मनि	५५	प्रातर्भजामि	११२
पाहि मामुमामनोज्ञ	१२६	प्राप्त पद प्रथमत	७१
पीठीभूतालकान्त	३३	ब	
पीतेन द्योतते	२७	बद्धा गले यमभटा	१६
पुण्यपापरज सङ्गो	१०८	बालस्तावत्	६३
पुनरपि जनन	६७	बाह्वतरे मधुजित	७१
पुर प्राञ्जलीनाञ्जनेया०	४	बृदावनभुवि	५८
पूर्णस्यावाहन	१०७	ब्रह्मन्ब्रह्मण्यजिह्वा	३१
पूर्वोत्तरे पारलिका०	१३१	ब्रह्ममस्तकावली	१२३
पृथि-या तिष्ठ-यो	४३	ब्रह्माण्ड खण्डयन्ती	१०१
प्रचण्डप्रतापप्रभावा०	७	ब्रह्मान दजलेनैव	१०९
प्रदीप्तरत्नोज्ज्वल	१३६	ब्रह्मान दाब्धि	१०८
प्रमञ्चस्त्रुष्टुन्मुख	१३५	ब्रह्मा विष्णु रुद्र	४९
प्रमाण भवाब्धे०	३६	ब्रह्मेन्द्ररुद्रमरुदक	१३
प्रसीद प्रसीद प्रचण्ड	१०	ब्रह्मेशान्युत	८२

	पृष्ठम्	पृष्ठम्
भ		
भगवति तव	१०२	१०६
भगवति भवलीला	१०१	१४३
भगवद्गाता	६७	१३५
भज गोवि द	६२	८५
भवाम्भोजनेत्रा०	१३९	९५
भवोत्तापाम्भोधौ	१००	९२
भानुकोटिभास्वर	८९	११४
भुक्तिमुक्तिदायक	९०	३६
भुक्तिमुक्तिदिय	११८	१८
भुजगप्रयात पठ०	२१	४
भुजगप्रयात पर	१०	४३
भुज स ये वेणु	११४	६४
भूतसङ्घनायक	९१	१०३
भूत्वा भूत्वा यदन्त०	३४	७८
म		
मङ्गलप्रदाय	१२६	४७
मज्जन्मातङ्ग	१०१	३३
मत्स्य कूर्मौ वराहो	३४	७९
मत्स्यादिभिरवतारै	११८	७०
मधुवनचारिणि	९८	८८
मध्याह्ने मणि०		९५
मनोनिवृत्ति		९२
मन्दारमाला		११४
ममाद्यदेवो		३६
मलापहारि		१८
महागभीर		४
महाम्भोधेस्तीरे		४३
महायोगपीठे तटे		६४
महायोगपीठ परि०		१०३
महारत्नपीठ		७८
महे द्रादिदेवो		४७
मा कुरु धनजन		३३
मातर्जाह्णवि		७९
माता च पार्वती		७०
मात्रातीत स्वात्म०		८८
मालालीवालिधाम्न		९५
मुक्ताहारलसत्कि०		९२
मुग्धा मुहुर्विदधती		११४
मुदिताय मुग्ध०		३६
मुरारिकाय कालिमा		१८
मूढ जहाहि		४३

श्लोकानुक्रमणिका ।

१५५

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
मूर्तामूर्ते पूर्व०	५४	यस्यातर्क्य स्वात्म०	५१
मृत्स्नामत्सीहेति	५६	यस्या दाम्ना	२७
मोदात्पादादिकेश	३५	यस्यामिद कल्पित०	१४३
य		यस्थैकाशादित्थ०	४५
य ब्रह्मारय	४६	यावत्पवनो	६३
य विशान्ज्योतिष	५५	यावद्वित्तोपार्जन०	६३
यक्षराजब धवे	१२४	या वायावानुकूल्यात्	२९
यत सर्व जात	४२	या सूते सत्त्वजाल	२४
यत्कटाक्षसमुपासना०	७३	युक्त्यालोड्य व्यास	५२
यत्र प्रत्युत्तरत्न	३३	येनाविष्टा यस्य	५०
यदा घमग्लानि	४४	येभ्यो वर्णश्चतुर्थ	२५
यदा मत्समीप	५	येभ्योऽसूयन्द्रिरुचै	२४
यदावणयत्कर्णमूले	३	योगरतो वा	६६
यद्यद्वेद्य तत्तदह	४७	योगान दकरी	७५
यद्यद्वेद्य वस्तु	४७	यो डाकिनीशाकिनि०	१३२
यशो मे गत	१४१	योऽय देहे चेष्टयिता०	५२
यस्ते प्रसन्ना०	८८	यो विश्वप्राणभूत०	२३
यस्माद यन्नास्त्यपि	४६	र	
यस्मादाक्रामतो द्या	२५	रज सत्त्वतमो०	१०९
यस्माद्वाचो निवृत्ता	३४	रत्नपादुकाप्रभा०	९०
यस्या दृष्टामलाया	२६	रथारूढो	११५

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
स्थयाकर्पट	६७	वयसि गते	६४
रागादिगुणशून्यस्य	११०	वाग्भूगौर्यादिभेदै	२४
रागामुक्त	५५	वानरनिकराध्यक्ष	२
राजताचलेद्र	१२४	विजातीयै पुष्पै	६१
राजन्मत्तमराल	११९	विज्ञानाच्चो यस्य	५३
राक्षसक्षोभित	४०	विदेशेषु मान्य	१४१
रुक्षस्मारेक्षुचाप	३२	विद्युदुद्योतवत्प्र०	४०
रेखा लेखादिबन्धा	२४	विद्राविताशेष	८४
ल		विना यस्य ध्यान	४३
लक्षमाकारालकालि०	३२	विभु वेणुनाद	३७
लक्ष्मीनृसिंहचरणान्ज	१७	विविधब्रह्म	११०
लक्ष्मीपते कमलनाथ	१६	विशालनीलोत्पल	१३५
लक्ष्मीभर्तुर्मुजाग्रे	२२	विशुद्ध पर सच्चिदा०	३
लपन्नच्युतानन्त	२१	विशुद्ध शिव	१८
लसच्चन्द्रिकास्मेर	४	विश्वत्राणैकदीक्षा०	३०
लसत्कुण्डलामृष्ट	१९	विश्ववन्द्योऽह०	११०
लसत्तरङ्ग	९५	विश्वानन्दयितु	१०७
ललामाङ्गफाला	१३७	विश्वामरेद्र	७०
लावण्याधिक	१२०	विष्णवे जिष्णवे	३९
व		विष्णो पादद्वयाग्रे	२५
वक्राम्भोजे लसत्	३१	विष्णोर्विश्वेश्वरस्य	२३

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
विष्टपाधिपाथ	१२७	शूलिने नमो नम	१२८
विहाररासखेद	९६	शैले द्रादवतारिणी	१०२
वीणानादनिमीलिता०	८२	श्रद्धाभक्तिध्यान	५१
वीताखिलविषयेच्छ	१	श्रवण तस्य देवस्य	११०
वेदवाचामवेद्यस्य	१०८	श्रिया ज्ञातकुम्भद्युति	२०
वेदान्तैश्चाध्यात्मिक	५०	श्रियाश्लिष्टो विष्णु	४२
व्यालम्बिनीभि	८८	श्रीताम्रपर्णी	१३२
व्योमकेश दिव्य	१२३	श्रीनाथाहत	१२०
श		श्रीमत्पयोनिधिनिकेतन	१३
शत्रौ मित्रे	६८	श्रीमत्सौ चारुवृत्ते	२६
शब्दब्रह्ममयी	८३	श्रीमत्सुदरनायकी	८०
शम्बरवैरिशरातिग०	१	श्रीमदात्मने	१२२
शरच्च द्रविम्बानन	३७	श्रीविद्या शिववाम०	७९
शरीर कलत्र	२०	श्रीविद्य शिववाम०	८१
शरीर सुरुप	१४०	श्रीशैलशृङ्गे	१३०
शिलापि त्वदङ्घ्रिक्षमा	७	श्रुत्यै नमोऽस्तु	७२
शिव नित्यमेक	३	श्लोकत्रयमिद	११३
शिवपञ्चाक्षरमुद्रा	१२९	ष	
शुक्तौ रजतप्रतिमा	११	षट्कारा गणदीपिका	१२०
शुभपुलिने	९९	षडङ्गादिवेदो	१५०
शूलटङ्कपाश	८९	स	

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
सपत्कराणि सकले०	७३	सदा से य कृष्ण	६१
सभूयाम्भोधिमध्यात्	२	सदैव नन्दिन द०	९७
ससारकूपमतिघोर	१४	सनत्कुमार	९३
ससारघोरगहने	१५	स पुण्य स गण्य	७
ससारजालपतितस्य	१४	सविदुसिधु	९२
ससारदावदहना०	१३	समस्तवासनात्याग	१०९
ससारभीकरकरीद्र	१४	समाधिरात्मनो	१११
ससारवृक्षमखबीज	१५	समानोदितानेक	१९
ससारसर्पविषदिग्ध	१४	सम्यक्साह्य	२६
ससारसागरनिमज्जन	१५	सरसिजनिलये	७३
ससारसागरविशाल	१५	सव इष्ट्वा स्वात्मनि	४८
सस्तीर्णं कौस्तुभाशु	२९	सर्वजीवरक्षणैक	१२५
सन्धूण ताम्बूल	६	सवज्ञो यो यश्च	१४५
सत्तामात्र केवल	७४	सर्वत्रास्ते सर्वशरीरी	४८
सत्य ज्ञान शुद्ध	४९	सर्वत्रैक पश्यति	४८
सत्य ज्ञानमन त	५६	सर्वदुर्वासनाजाल	१११
सत्यपि भेदापगमे	११७	सर्वमङ्गलाकुचा०	१२५
सत्सङ्गत्वे	६४	सानदमानदवने	१३१
सदा तुसात्र	६०	सिंहाद्रिपार्श्वेऽपि	१३२
सदा राम पिवत्०	८	सुखत क्रियते	६९
सदा राम पिवन्न०	८	सुनासापुट सुदर०	१९

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
सुप्ताकारा प्रसुप्ते	३३	स्नानव्याकुलयोषित्	५७
सुरलाङ्गदैरवित	१९	स्फुरत्कौस्तुभालकृत	३७
सुरमदिरतरु	६६	खक्च दनवनितादीन्	१२
सुवक्षोजकुम्भा	१३७	स्वदक्षजानु०	८५
सुशा ता सुदेहा	१३८	स्वभक्ताग्रगण्यै	७
सुसीम तवेणीं	१३८	स्वभक्तेषु सदर्शिताकार	२
सृष्ट्वा सर्व स्वात्म०	५	ह	
सेवकाय मे	१२८	हर त्व ससार	११६
सौराष्ट्रदेशे	१३०	हरे राम सीतापते	९
स्तव पाण्डुरङ्गस्य	३८	हारस्थोरुप्रभाभि	३०
स्तुवति य	७४	हित्वा हित्वा	४७
स्तोकभक्तितोऽपि	१२५	हिमाद्रिप्राञ्छेऽपि	१३२
स्तोष्ये भक्त्या	४५	हृदम्भोज कृष्ण	५९





॥ श्री ॥

# ललितात्रिशतीभाष्यम्

श्रीमच्छकरभगवत्पूज्यपादै.  
विरचितम् ।





॥ श्री ॥

# ॥ ललितात्रिशतीभाष्यम् ॥



वन्दे विघ्नेश्वरं च सर्वसिद्धिप्रदायिनम् ।

वामाङ्कारूढवामाक्षीकरपल्लवपूजितम् ॥ १ ॥

पाशाङ्कुशेशुसुमराजितपञ्चशाखा

पाटल्यशालिसुषुमाञ्चितगातवल्लीम् ।

प्राचीनवाक्स्तुतपदा परदवता त्वा

पञ्चायुधार्चितपदा प्रणमामि देवीम् ॥ २ ॥

लोपामुद्रापतिं नत्वा हयग्रीवमपीश्वरम् ।

श्रीविद्याराजसिद्धिकारिपकजवीक्षणम् ॥ ३ ॥

विस्तारिता बहुविधा बहुभि कृता च

टीकां विलोकयितुमक्षमता जनानाम् ।

तल्लयसवपदयोगविवकभानु

तुष्ट्यै करामि ललितापदभक्तियोगात् ॥ ४ ॥

९ U VII 11

भगस्य उवाच—

हयग्रीव दयासिन्धो भगवन् शिष्यवत्सल ।  
 त्वत्त. श्रुतमशेषेण श्रोतव्य यद्यदस्ति तत् ॥  
 रहस्यनामसाहस्रमपि त्वत्त' श्रुत मया ।  
 इत' पर मे नास्त्येव श्रोतव्यमिति निश्चय' ॥  
 तथापि मम चित्तस्य पर्याप्तिर्नैव जायते ।  
 कात्स्न्यार्थं प्राप्य इत्येव शोचयिष्याम्यह प्रभो ॥

किमिद कारण ब्रूहि ज्ञातव्याशोऽस्ति वा पुन ।  
 अस्ति चेन्मम तद्ब्रूहि ब्रूहीत्युक्त्वा प्रणम्य तम् ॥

सूत उवाच—

समाललम्बे तत्पादयुगल कलशोद्भव' ।  
 हयाननो भीतभीत किमिद किमिद त्विति ॥  
 मुञ्च मुञ्चेति त चोक्त्वा चिन्ताक्रान्तो बभूव सः ।  
 चिर विचार्य निश्चिन्वन्वक्तव्य न मयेत्यसौ ॥  
 तूष्णीं स्थित स्मरन्नाज्ञां ललिताम्बाकृता पुरा ।

प्रणम्य विप्र स मुनिस्तत्पादावलयजन्स्थित ॥ ७ ॥

वर्षत्रयावधि तथा गुरुशिष्यौ तथा स्थितौ ।

तच्छृण्वन्तश्च पश्यन्त सर्वे लोकाः सुविस्मिताः ॥

ततः श्रीललितादेवी कामेश्वरसमन्विता ।

प्रादुर्भूय ह्यग्रीव रहस्येवमचोदयत् ॥ ९ ॥

श्रीदेव्युवाच—

अश्वाननावयोः प्रीति शाल्त्रविश्वासिनि त्वयि ।

राज्य देय शिरो देय न देया षोडशाक्षरी ॥ १० ॥

स्वमातृजारवद्गोप्या विद्वैषेत्यागमा जगुः ।

ततोऽतिगोपनीया मे सर्वपूर्तिकरी स्तुति ॥

मया कामेश्वरेणापि कृता सगोपिता भृशम् ।

मदाज्ञया वचो देव्यश्चक्रुर्नामसहस्रकम् ॥ १२ ॥

आवाभ्या कथिता मुख्या सर्वपूर्तिकरी स्तुतिः ।

सर्वक्रियाणा वैकल्यपूर्तिर्यज्ञपतो भवेत् ॥ १३ ॥

सर्वपूर्तिकर तस्मादिदं नाम कृतं मया ।

तद्ब्रूहि त्वमगस्त्याय पात्रमेव न सशय ॥ १४ ॥

पत्न्यस्य लोपामुद्राख्या मामुपास्तेऽतिभक्तित् ।

अयं च नितरा भक्तस्तस्मादख्यं वदस्व तत् ॥

अमुश्चमानस्त्वत्पादौ वर्षत्रयमसौ स्थित ।

एतज्जातुमतो भक्त्या ह्रीदमेव निदर्शनम् ॥

चित्तपर्यासिरेतस्य नान्यथा स भविष्यति ।

सर्वपूर्तिकरं तस्मादनुज्ञातो मया वद ॥ १७ ॥

सूत उवाच—

इत्युक्त्वान्तरधादम्बा कामेश्वरसमन्विता ।

अथोत्थाप्य हयग्रीवं पाणिभ्यां कुम्भसंभवम् ॥

सस्थाप्य निकटे वाचमुवाच भृशविस्मित ।

हयग्रीवं उवाच—

कृतार्थोऽसि कृतार्थोऽसि कृतार्थोऽसि घटोद्भव ॥

त्वत्समो ललिताभक्तो नास्ति नास्ति जगन्त्रये ।

येनागस्त्यं स्वयं देवी तव वक्तव्यमन्वशात् ॥

सच्छिष्येण त्वया चाह द्रष्टवानस्मि ता शिवाम् ।  
यतन्ते दर्शनार्थाय ब्रह्मविष्णुवीशपूर्वका' ॥

अत पर ते वक्ष्यामि सर्वपूर्तिकर स्तवम् ।  
यस्य स्मरणमात्रेण पर्याप्तिस्ते भवेद्बुद्धि ॥ २२ ॥

रहस्यनामसाहस्रादपि गुह्यतम मुने ।  
आवश्यक ततोऽप्येतल्ललिता समुपासितुम् ॥

तदह सप्रवक्ष्यामि ललिताम्बानुशासनात् ।  
श्रीमत्पञ्चदशाक्षर्या कादिवर्णान्क्रमान्मुने ॥

पृथग्विंशतिनामानि कथितानि घटोद्भव ।  
आहत्य नाम्ना त्रिशती सर्वसपूर्तिकारिणी ॥

रहस्यातिरहस्यैषा गोपनीया प्रयत्नत ।  
ता शृणुष्व महाभाग सावधानेन चेतसा ॥

केवल नामबुद्धिस्ते न कार्या तेषु कुम्भज ।  
मन्त्रात्मकत्वमेतेषा नाम्ना नामात्मतापि च ॥

तस्मादेकाग्रमनसा श्रोतव्यं च त्वया सदा ।

सूत उवाच—

इत्युक्त्वा त ह्यग्रीव प्रोचे नामशतत्रयम् ॥

बहुकाल सुभक्तिमहिम्ना गुरुपादाम्बुजमवलम्ब्य स्थिताय  
कुम्भयोनिमुनये शिवदपतिकृतनामशतत्रयोक्त्या प्रेरितो ह्य  
ग्रीव उवाच—

ककाररूपा कल्याणी कल्याणगुणशालिनी ।

कल्याणशैलनिलया कमनीया कलावती ॥

ककाररूपेति । ककार कवर्ण रूप ज्ञापकविशेषण  
यस्या सा, कादिविद्याविग्रह्यर्थ । अथवा ककार रूप  
वाचक येषा त ककाररूपा हिरण्यगर्भ उदकम् उत्तमाङ्ग  
सुखादयश्च । हिरण्यगर्भनिष्ठजगद्धारकजगत्कर्तृत्वादिगुण  
वस्त्व ककारश्च व्यञ्जनादिमवर्णत्वेन वतत इति तद्व्याच्य  
तथा तथा । उदकनिष्ठान्नादिद्वारा जगत्सजीवनहेतुत्वमपि  
ककारस्य विद्याग्रिमवर्णतयास्तीति तद्रूपा वा । सर्वेषा  
प्राणिना शिरस्यमृतमस्तीति योगमार्गेण कुण्डलिनीगमने  
तत्रत्यतत्प्रवाहापुतयोगिनामीश्वरसाम्य जायत इति योगशा  
स्त्रेषु प्रसिद्धम् । तद्वत् कवर्ण मन्त्रादिमभागस्थ तत्पु-

रश्चर्यापरायणानां शिवभावमेव यच्छतीति वा तद्रूपत्यर्थं ,  
 'क ब्रह्म स्व ब्रह्म' इति श्रुते । दहराकाशस्य सुखस्वरूप  
 त्वेन परमप्रेमास्पदतया अभिलाषविषयत्ववत् ककारोऽप्य  
 तिप्रीतिविषयमूलमन्त्रादिमाक्षरतया अभ्यर्हितत्वाद्वा तद्रूपे  
 त्यर्थं ॥ ॐ ककाररूपायै नमः ॥

कल्याणी । कल्याणानि सुखानि । युवसार्वभौमानन्दा-  
 दारभ्य ब्रह्मानन्दपर्यन्तं तैत्तिरीयकादौ प्रतिपादितानि ।  
 तत्तदुपाधिभेदेष्ववच्छिन्नस्वरूपतया तानि कल्याणशब्दवा-  
 च्यानि, 'एतस्यैवानन्दस्य अन्यानि भूतानि मात्नामुपजी-  
 वन्ति' इति श्रुते । समष्टिव्यष्टिवत्त्वमुपहितस्वरूपेण सभ-  
 वतीति मतुप्समामोपपत्तिः । तथा च राहो शिर इतिवत्  
 समासान्तर्गतषष्ठ्यर्थभेदस्याविवक्षिततया आनन्दैकविग्रह-  
 तीत्यर्थं , 'विज्ञानमानन्द ब्रह्म' इति श्रुत्युक्तब्रह्मस्वरूपल-  
 क्षणवतीत्यर्थं ॥ ॐ कल्याण्यै नमः ॥

कल्याणगुणशालिनी । कल्याणा सुखकर्तार ये गुणा  
 सत्यकामसत्यसकल्पसर्वाधिपत्यसर्वेशानत्ववामनीत्वसयद्वा-  
 त्वादयः , ते अस्या शालयन्त इति, तथा एना शोभयन्ती  
 ति वा, तै शालयत इति वा कल्याणगुणशालिनी । तथा  
 च कल्याणाश्च ते गुणाश्च कल्याणगुणा शालयन्त्येनामिति

कल्याणगुणशालिनी, अस्मिन् समासे देवताया पराधीन गुणवत्त्व स्वत शुद्धचैतन्यत्व च स्फुरितम् । कल्याणगुणै शाल्यत इत्यत्र गुणवत्त्वमात्र देवताया द्योत्यते । तच्चौपा धिक्त्व वैदकमपि स्तुतौ तदप्रकटन न दोषाय । यदि गुणानामारोपितत्वेन तत्सकीर्तनस्य भेदबुद्धिसमये तत्कृपा प्राप्तिहेतुत्वेनावश्यकत्वम्, तथापि तदपवादपुर सग शुद्ध चैतन्याभेदध्यानरूपमुख्यभजन मुख्यमवति सपादयितु स्व-गुरूपदिष्टमार्गेण सुकरमेवेति नातिविस्तार्यते ॥ ॐ कल्या णगुणशालिन्यै नम ॥

कल्याणशैलनिलया । शिलाना विकार शैल शिलाघन इत्यर्थ, कल्याण सुखमेव शैल घनीभूत इत्यर्थ, तस्मिन् कल्याणशैले स्वस्वरूप आनन्दघने निलयति तिष्ठतीति कल्याणशैलनिलया, 'स भगव कस्मिन् प्रतिष्ठित इति स्वे महिम्नीति होवाच' इति श्रुते, देवदत्त म्बस्मिन्नेव स्वय वर्तते इति लौकिकप्रयागाच्च, देवताया स्वस्वरूपे स्वावस्थान युज्यत इति । कल्याणमेव शैलवत् घनीभूत कल्याणशैल आनन्दमयकोश कल्याणशैलो निलय यस्या सा इति बहु व्रीहिसमास न विरुद्ध, 'ब्रह्म पुच्छ प्रतिष्ठा' इति उक्त श्रुतिप्रामाण्यात् । अथवा कल्याणशैल महामेरु निलय गृह

यस्या सा तथा, सुमेरुमध्यशृङ्गस्थेत्यर्थ ॥ ॐ कल्या  
णशैलनिलयायै नम ॥

कमनीया । परमानन्दस्वरूपत्वेन परमप्रेमास्पदा, 'को  
ह्येवान्यात्क प्राण्यात् । यदष आकाश आनन्दो न स्यात्' इति  
श्रुते । सुखस्य मनोहरत्वेन सर्वेप्साविषयत्ववत् मायावृता-  
ना सुखप्रापकत्वेन स्वस्वेष्टदेवतासु प्रीत्यतिशयेन तत्पूजादौ  
प्रवर्तता तत्फलदानेन मनोहरत्वाद्वा कमनीया । ज्ञानिनामा  
नन्दघनीभावात्मकसुन्दरमूर्तिमत्तया वा कमनीया ॥ ॐ  
कमनीयायै नम ॥

कलावती । कला शिर पाण्याद्यवयवा, चतु षाष्टकला  
विद्यारूपा वा, चन्द्रकला वा, भक्तध्यानाय अस्या सन्ती-  
ति कलावती ॥ ॐ कलावत्यै नम ॥

**कमलाक्षी कल्मषघ्नी करुणामृतसागरा ।**

**कदम्बकाननावामा कदम्बकुसुमप्रिया ॥**

कमलाक्षी । कमले इव अक्षिणी यस्या सा तथा ।  
कमलाया लक्ष्म्या अक्षिशब्देन तन्निमित्तक ज्ञान लक्ष्यते  
विषयतासब धेन तद्वतीति वा । कमलाया ऐहिकामुष्मि  
कश्रिय हेतुभूते अक्षिणी यस्या सा— इति स्वकीयेक्षणमा

त्वेण महदैश्वर्यप्रापिकेति भाव ॥ ॐ कमलाक्ष्यै नम ॥

कल्मषघ्नी । कल्मषाणि पापानि हन्ति नाशयतीति कल्मषघ्नी, 'अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि' इति भगवद्वचनात् । अथवा वेदान्तमहावाक्यजन्यसाक्षात्काररूप-ब्रह्मविद्या 'ज्ञानाम्नि सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा' इति स्मृते, 'न स पापं श्लोकं शृणोति' इति श्रुतेश्च ॥ ॐ कल्मषघ्न्यै नमः ॥

करुणामृतसागरा । करुणया कृपया जात यदमृत मोक्षरूप तस्य सागर इव सागरा । यथा अमृतसमुद्र स्वयममृतस्वरूप सन् अन्यानपि लोकान् अमृतपायिमेघाद्विमुक्तामृतेन सजीवयति, तथा 'ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति' 'ब्रह्मविदाप्नोति परम्' इत्यादिश्रुत्या स्वयममृतस्वरूपा सती । 'लभते च तत् कामान्मयैव विहितान्हितान्' इति भगवद्वचनेन तत्तदधिकारिकृतकर्मोपासनादिफलस्य देवताप्रापणीयस्य संप्राप्तौ तत्तदधिकारिणा तत्तत्फल स्थितमिति सभाव्यत इति सागरोपमा । अमृतवत्सर्वमजीवनी करुणामृतस्य अभिन्नाश्रयत्वात् सागरा, करुणा च भक्तविषयकपरिपाल्यताबुद्धिः । यद्वा, करुणया कृपया अमृता शाश्वतकीर्तिमत्त्वेन ब्रह्मादिलोकगता सागरा सगरराजवश्या यस्या सा तथा, यद्वा,

करुणया दयया हेतुना अमृताय प्राप्त सागर समुद्रो यया  
सा भागीरथी, करुणामृतसागरा ॥ ॐ करुणामृतसाग-  
रायै नमः ॥

कदम्बकाननावासा । कदम्बनामककल्पवृक्षयुक्त यत्का-  
नन वन तत्रावासो गृह यस्या सा तथा ॥ ॐ कदम्बकान-  
नावासायै नमः ॥

कदम्बकुसुमप्रिया । कदम्बाना कुसुमानि कदम्बकुसुमानि  
तेषु प्रिया प्रीतिमतीति यावत् । यद्यपि प्रियशब्द प्रीतिवि-  
षयवाचक, तथापि कुसुमजन्यप्रीतरभावेन तद्विषयताया  
वक्तमशक्यत्वात् तथोक्तम् ॥ ॐ कदम्बकुसुमप्रियायै नमः ॥

कदर्पविद्या कदर्पजनकापाङ्गवीक्षणा ।

कर्पूरवीटीसौरभ्यकल्लोलितककुसटा ॥ ३ ॥

कदर्पविद्या । कदर्पस्य विद्या तन्निष्ठप्रत्यग्रहैक्यज्ञान-  
मित्यर्थः । अथवा विद्याप्रापकत्वात्तद्दृष्टमूलमन्त्रवर्णमसुतायो  
विद्येत्युच्यते वेदवाक्येषु उपनिषत्पदवत् । तद्वान्यार्थत्वात्  
तथा देवी सूच्यते ॥ ॐ कदर्पविद्यायै नमः ॥

कदर्पजनकापाङ्गवीक्षणा । अपाङ्गाभ्या वीक्षणमपाङ्गवी  
क्षणम्, ईषद्दर्शनमिति यावत् । कदर्पस्य जनक अपाङ्ग

वीक्षण यस्या सा । अनेन नाम्ना येषा जडानामपि कुरु-  
 पिणा जनाना उपरि सकृदीषद्वीक्षणमभिजायते, ते कदर्प-  
 वद्रूपयौवनसामर्थ्यलक्ष्मीभाजो भवन्तीति ध्वनितम् । यद्वा  
 कदर्पस्य जनक श्रीनारायण स यस्या अपाङ्गवीक्षणे  
 ईषद्भ्रूवल्लिचलन वर्तते, यस्या आज्ञामात्रवश्यतया महा  
 विष्णु जगद्रक्षादिकार्यं करोतीति सा तथा इति । अथवा,  
 कदर्पजनका महालक्ष्मी यस्या अपाङ्गवीक्षणे प्रयतया व  
 र्त्तते सा तथा । कदर्पस्य मन्मथस्य जनका उत्पादका  
 स्रक्चन्दनादिभोग्यविषया ते यस्या अपाङ्गवीक्षणात् भ-  
 वन्ति सा तथा । अथवा, चन्द्रस्य वामनेत्रतया अपाङ्ग  
 वीक्षण चन्द्रिकोच्यते । कदर्पजनक अपाङ्गवीक्षण यस्या  
 सा तथा । कदर्पजनकाशब्देन लक्ष्मीनिवासकमल ल  
 क्ष्यते, तद्वत् अपाङ्ग कमलाक्षीत्यथ तन्निरूपितवीक्षण  
 लोकसजीवन यस्या सा तथा ॥ ॐ कदर्पजनकापाङ्ग  
 वीक्षणायै नम ॥

कर्पूरवीटीसौरभ्यकल्लोलितककुमटा । कर्पूरयुक्ताश्च ता  
 वीटयश्च ताम्बूलकबलानि तासा मौरभ्य सौगन्ध्य तै  
 कल्लोलितानि असकृत्परिमलितानि ककुमा दिशा तटानि  
 प्रदेशा यस्या सा । मुखवासितपरिमलेन जगन्मात्र सुर-

भीकृतमिति स्वरूपातिशयोक्ति अस्मिन्नाम्नि व्यज्यत , महा  
राजभोगवतीत्यर्थ । ॐ कर्पूरवीटीसौरभ्यकल्लोलितककुम्भ  
टायै नम ॥

कलिदोषहरा कजलोचना कम्पविग्रहा ।  
कर्मादिसाक्षिणी कारयित्री कर्मफलप्रदा ॥ ४ ॥

कलिदोषहरा । कले निन्द्या जायमानाना पुरुषाणा  
जन्ममात्रण ये दोषा पापानि आयाति, तान दृष्ट्वा श्रुता  
कीर्तिता सस्तुता पूजिता ध्याता सती हरतीति तथा । कले  
अन्योन्यवादिना कलहात्तत्तन्मताभिनिवेशवशाज्जायमाना ये  
दोषा परब्रह्मविषये अस्तित्वनास्तित्वदेहादिव्यतिरिक्तत्वभि  
न्नत्वाभिन्नत्वगुणित्वादिसाधकयुक्त्याभासतदनुगुणसमत्याभा  
सश्रुतितात्पर्यविघटनान्यथाकरणदुराग्रहजन्यकामक्रोधपरुष  
परवशक्रियमाणनिन्दासहनादिरूपा बहुविधा दोषा , तान-  
द्वैतब्रह्मज्ञानसाधनमुक्तिरूपेण हरतीति कलिदोषहरा ॥ ॐ  
कलिदोषहरायै नम ॥

कजलोचना । केभ्य जायन्त इति कजानि, कजशब्द  
न अरविन्दनीलोत्पलानि लक्ष्यन्ते तद्वज्जाचने यस्या सा तथा ।  
अथवा कज ब्रह्माण्डम् । 'अय पूर्वमप सृष्ट्वा तासु वीर्यम

पास्रजत् तदण्डमभवद्वैमम्' इति वचनात् कजानि अनेक  
कोटिब्रह्माण्डानि लोचनयो लोचनकृतवीक्षणात् यस्या  
सा तथा, 'सेय देवतैक्षत' इति श्रुते ॥ ॐ कजलोच  
नायै नम ॥

कम्रविग्रहा । कम्र अतिमनोज्ञ , गाम्भीर्यधैर्यमाधुर्यादि-  
बहुगुणोदितत्वात्, विग्रह मूर्ति यस्या मा तथा, 'आ  
नन्दरूपममृत यद्विभाति' इति श्रुते । आनन्दस्वरूपत्वाद्वा  
कम्रविग्रहा, ललितारूपेत्यर्थ ॥ ॐ कम्रविग्रहायै नम ॥

कर्मादिसाक्षिणी । कर्म आदिर्येषा तानि कर्मादीनि  
उपासनायोगश्रवणमनननिदिध्यासनानि । तेषा साक्षिणी अ-  
सबन्धी द्रष्ट्री, 'साक्षी चेता' इति श्रुते । अथवा कर्मा  
दय साक्षिभूता जीवनिष्ठा तदनाश्रयतया आत्मदर्शन  
साधनानि सृज्यमानजगदुपादानभूतानि यस्या सा तथा ॥  
ॐ कर्मादिसाक्षिन्यै नमः ॥

कारयित्री कारयितृत्व नाम कुर्वित्याज्ञापयितृत्व जाय  
मानकार्यगोचरकृत्युत्पत्तिहेतुकर्मोद्बोधकत्वरूपलिङ्गोदत्तव्य  
प्रत्ययाना धर्म विधिनिष्ठभावेत्युच्यते । तेषा शब्दा  
त्मकतया जडाना तथात्वासभवात्तदधिष्ठानचैतन्यरूपतया

‘सर्वे वेदा यत्रैक भवन्ति’ इति श्रुत्या वेदस्यात्माभेदेन स्व प्रकाशकतया अर्थप्रकाशनद्वारा प्रामाण्यविधीनामपि वेदैक देशतया प्रेरणरूपत्वात् तदधिष्ठानचैतन्यात्मनाकारयतीति तथा, ‘एष ह्येव साधु कर्म कारयति’ इति श्रुते ॥ ॐ कारयित्र्यै नम ॥

कर्मफलप्रदा । कृताना कर्मणा कालान्तरभाविफलप्रदाने अदृष्ट कारणमित्यनीश्वरमीमासकादिमतम्, तन्न । जडाना सूक्ष्माणामदृष्टाना चतनधर्मकर्मफलप्रदानसामर्थ्या योगात् कृताना कर्मणा फलावश्यभावे ‘कर्माध्यक्ष’ इति श्रुते, ‘मयैव विहितान्हितान्’ इति स्मृतेश्च, ‘फलमत उपपत्ते’ इति न्यायाच्च परदेवता कर्मफलप्रदा ॥ ॐ कर्मफलप्रदायै नम ॥

एकाररूपा चैकाक्षर्यैकानेकाक्षराकृतिः ।

एतत्तदित्यनिर्देश्या चैकानन्दचिदाकृनि ।

एकाररूपा । एकार रूप मन्त्रद्वितीयावयवसञ्ज्ञापक यस्या सा तथा ॥ ॐ एकाररूपायै नम ॥

एकाक्षरी । एक मुख्यम् ईश्वरोपाधित्वेन । न क्षरति आत्मज्ञानेन विनामुक्ते न नश्यतीति अक्षर कूटस्थशब्दवाच्य

माया । तत्प्रतिबिम्बनिष्ठसर्वज्ञत्वाद्याधायकविशेषणत्वेन अस्या अस्तीति एकाक्षरी । एकम् अक्षरं सवप्रकृतित्वात्परा-परब्रह्मप्रतीकतया तदुपासनया तदुभयप्राप्तिसाधनत्वेन शब्दब्रह्मरूपलक्षितलक्षकशब्दप्रणवस्या अस्तीति वा । एकअखण्डैकचैतन्यरूपअक्षरअनश्वरअविनाशीपरमश्वरअर्धशरीरत्वेन अस्यामस्तीति वा । एकान्यक्षराणि मायाबीजादीनि तदुपासनाप्रतीकत्वेन अस्या सन्तीति वा । ‘अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते’ इति श्रुतअखण्डाकारवृत्तिप्रतिफलनयोग्यचैतन्यरूपतया तद्वृत्तिव्याप्तिमात्रेण अक्षरपदलक्ष्यचैतन्यविषयतासबन्धेन अस्या अस्तीति एकाक्षरी । चकार निर्गुणब्रह्मणोऽपि सगुणब्रह्मविशेषणसद्भावसमुच्चयपरसर्वज्ञापि द्रष्टव्य । ‘सच्चिन्मय शिव साक्षात्तस्यानन्दमयी शिवा’ इति वचनेन, ‘स्त्रीरूपा चिन्तयेद्देवीं पुरूषामथवेश्वरीं । अथवा निष्कल ध्यायत्सच्चिदानन्दविग्रहाम्’ इति स्मृत्या च, ‘त्वस्त्री त्वपुमान्’ इति श्वेताश्वतरोपनिषदि उपाधिकृतनानारूपसम्भवोक्तेश्च । अतएव ‘सेय देवतैक्षत’ इत्यादौ ‘तत्सत्य स आत्मा’ इत्यन्ते च श्रुतौ स्त्रीलिङ्गान्तदेवतादिपदानां तत्सत्यमिति नपुंसकान्तस्य स आत्मेति पुँलिङ्गात्मशब्दस्य एकार्थत्वम् अवित्रक्षि

तापाधिमत्तया तत्त्वपदलक्ष्यार्थस्यैकत्वात् । तस्मान् तत्त्व  
पदलक्ष्यार्थे सर्वेऽपि गुणा वर्णितु सभवन्तीति ह्य  
प्रीवेण अस्या त्रिशत्या बहव चकारा उपात्ता । तेन  
वय सर्वेषा सर्वत्र न पार्थक्येन प्रयोजनान्तर पश्याम ॥  
ॐ एकाक्षर्यै नमः ॥

एकानेकाक्षराकृति । एकम् ईश्वरप्रतिबिम्बोपाधितया शु  
द्धसत्त्वप्रधानम् अक्षरमज्ञानम् । अनेकानि मलिनसत्त्वप्रधान  
तया जीवोपाधिभूतान्यक्षराणि अज्ञानानि, 'माया चाविद्या  
च स्वयमेव भवति' इति श्रुते । एक चानेकानि च एकानकानि  
तानि च अक्षराणि च तानि तथा 'माया तु प्रकृतिम्' इति  
श्रुते । तेष्व्वाकृतय प्रतिबिम्बान्यवच्छिन्नानि वा चैतन्यानि  
घटस्थोदकावच्छिन्नप्रतिबिम्बिताकाशवद्यस्या सा तथा ।  
अथवा एकानि च प्रणवाद्यानि अनेकानि च अकारादि  
क्षकारान्तानि अक्षराणि वर्णा आकृति स्वरूप यस्या  
सा, मातृकास्वरूपत्वेन वा । 'अकारादिक्षकारान्ता मा  
तृकेत्यभिधीयते' इति वचनात् । अथवा एच कश्च एकार-  
ककारौ तौ चेताराण्यनेकाक्षराणि च सर्वं मिलित्वा पञ्चद  
शवर्णात्मिका मूलविद्या आकृति स्वरूप यस्या सा । साक्षि  
तया एकीभूता अनेकाक्षरेषु अनेकाज्ञानेषु आकृति स्वरूप

शोधिततत्त्वपदार्थसामरस्यात्मकं यन्मया सा तथा ॥ ॐ  
एकानेकाक्षराकृतये नमः ॥

एतत्तदित्यनिर्देश्या । एतत् एतत्कालेऽपि इयत्तापरिच्छे-  
दवद्वस्तु तत् परोक्षमनिश्चितस्वरूपम् । एतच्च तच्च एतत्तत् ।  
इतिकार इत्थभावेतृतीयार्थे । तथा च एतत्त्वतत्त्वाभ्यामि-  
त्यर्थः । एतत्तदित्यनेन निर्देष्टुं निर्वक्तुं योग्या निर्देश्या  
सा न भवतीति अनिर्देश्या । लोके सविशेषो हि पदार्थः  
परोक्षत्वापरोक्षत्वादिधर्मविशेषेण तद्गतेन निर्वक्तुं शक्यः ।  
शब्दप्रवृत्तिनिमित्तजातिगुणक्रियाषष्ठ्यर्थानां यत्र सबन्धो  
नास्ति, 'अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययम्', 'निर्गुणं निष्क-  
लम्' इत्यादिश्रुत्या, तादृग्वस्तु केन करणेन केन वा वचनेन  
निर्देष्टुं शक्यम् । 'यद्वाचानभ्युदितम्' इति श्रुते । अतः  
एतत्तदित्यनिर्देश्या वाच्यनसातीतेत्यर्थः । अथवा, एतत्  
प्रत्यक्षादिप्रमाणसिद्धं कार्यं पश्चाद्भावि । तत् परोक्षत्वादि-  
विशिष्टं पूर्वकालसबन्धिं व्यवहितं कारणमुच्यते । इति-  
शब्द उभयत्र सबन्धनीयः । कार्यमिति कारणमित्यपि  
शुद्धचैतन्यरूपा अनिर्देश्या, कार्यत्वकारणत्वघटकोपाधिवि-  
रहितत्वेन कार्यकारणभावाभावे तद्वाचकशब्दैर्विषयीकर्तुमश-  
क्यत्वात् । अथवा, एतत् अपरोक्षतया अहमिति प्रती

यमान जीवचैतन्य त्वपदवाच्यार्थ । तत् परोक्षतया प्रती  
यमानमीश्वरचैतन्य तत्पदवाच्यार्थ । इति शब्द एव  
कारार्थ । तथा च वादिभेदसिद्धान्त अनूदित । सा  
ख्यमते प्रकृतिर्जगत्कर्त्री, जीवो नानाचतन भोक्ता इत्यत  
ईश्वर एव नास्तीत्यङ्गीकृतम् । भागवतमते तु 'गुणी  
सववित्' इति श्रुत नित्यगुणविशिष्टात् परमेश्वराद्विष्णो  
र्जीवानामुत्पत्तिविनाशवत्त्वेन अनित्यत्वात् स एव भगवान्  
पारमार्थिक एक इत्यङ्गीकृतम् । तदुभयवासिसिद्धान्त  
स्य औपनिषदमते निरस्तत्वात् तदुभयविधया अनिर्दे  
श्या । परमार्थसच्चिदानन्दरूपतया छान्दाग्यगतदेवता  
शब्दार्थस्य प्रतिपादनादिति भाव । अथवा, तदस्थे  
श्वरवादिकाणादादिसिद्धान्तवत् व्यवस्थितभदवज्जीवेश्वररू  
पतया अनिर्देश्या । भेदव्यवस्थाया एव साधितुमश-  
क्यत्वादिति एतत्तदित्यनिर्देश्या ॥ ॐ एतत्तदित्यनिर्दे-  
श्यायै नम ॥

एकानन्दचिदाकृति । एका मुख्या मोक्षरूपत्वेन प्रापि  
त्सिता । आनन्द सुखम् । चिन् चैतन्य प्रकाशज्ञानम् ।  
आनन्दश्चासौ चिच्च आनन्दचित् एका चासावानन्दचिच्च  
एकानन्दचित् आकृति स्वरूप यस्या सा । सच्चिदानन्द

ब्रह्मरूपलक्षणवतीत्यर्थ । 'विज्ञानमानन्द ब्रह्म' 'आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्' इति श्रुते 'आनन्दादय प्रधानस्य' इति न्यायाच्च दीप्तिस्वरूपप्रकाशात्मकपरमानन्दस्वरूपस्य जीवन्मुक्त्यवस्थाया परमात्मज्ञानवन् पुरुषानुभवरूपप्रत्यक्षप्रमाणगोचरत्वमस्या इति वा तथा । अथवा, एकेषा आनुभाविकाना योगिनामानन्दसाक्षात्काररूपा आकृति निरावरणप्रकाशरूपा यस्या सा तथा । अथवा, आनन्द शिवा, चित् परमेश्वर, एके मूर्तिभेदरहिते आनन्दचित्तौ आकृतिर्यस्या सा तथा ॥ ॐ एकानन्दचिदाकृतये नमः ॥

एवमित्यागमाबोध्या चैकभक्तिमदर्चिता ।

एकाग्रचित्तनिर्ध्याता चैषणारहितादृता ॥

एवमित्यागमाबोध्या । ननु आनन्दशब्दस्य लक्षणया आनन्दमयो वाच्य । 'य एको जालवानीशत इशनीभिः' इति श्रुत्युक्तैकत्वमपि जीवे सिध्यति । तथा च एकश्चासावानन्दश्च तस्य चित् अधिष्ठानप्रकाशकचैतन्यमाकृति यस्या सेति विग्रहः संभवति । 'ब्रह्म पुच्छ प्रतिष्ठा' इति तत्प्रकाशकचैतन्यस्य पुच्छशब्देन परामर्शात् । एव च सति प्रकाशकनित्यत्वस्य प्रकाशयनित्यत्वापेक्षत्वात् । 'सत्यं ज्ञानम-

नन्त ब्रह्म' इत्यादिब्रह्मस्वरूपलक्षणवाक्येषु वाच्यार्थप्राधान्येन विधिमुखेनैव ब्रह्मप्रतिपादने अतद्यावृत्तिरूपनिषेधमुखेन लक्षणार्थप्राधान्येन ब्रह्मस्वरूपलक्षणप्रतिपादनायोगेन तत्त्वमसिवाक्ये वैशिष्ट्य वाक्यार्थं सभवतीति चेत्, नेत्याह—एवमित्यागमाबोधेति । एवविशिष्टतया—इति प्रत्यक्षसिद्धत्वेन आगमैर्वेदै ज्ञापनीया न भवति । आनन्दशब्दस्यानन्दमात्रवाचकस्य तत्प्रचुरे सभावितेषु ख जीवलक्षणाया त्रयो दोषा । पारमार्थिकभिन्नसत्ताकवस्त्वन्तगाभावेन तत्त्वपदवाच्यार्थनिष्ठविशेषणद्वयस्य अन्योन्यविरोधवत्तया तम प्रकाशवद्वैशिष्ट्यायोगे अखण्डार्थो वाक्यार्थ सपद्यते । तथा च स्वरूपलक्षणवाक्येषु वाच्यार्थस्य 'अतोऽन्यदार्तम्' इति श्रुत्या मिध्यात्वप्रतिपादनात् निषेधमुखेनैव अतद्यावृत्तिस्वरूपप्रतिपादनेन लक्षणवाक्यानि समञ्जसानि भवतीति भावः ॥ ॐ एवमित्यागमाबोध्यायै नमः ॥

एकभक्तिमदर्चिता । एकस्मिन्नभेदे जीवब्रह्मणो भक्तिभजनीयत्वबुद्धि तत्परिजिज्ञासा येषा सन्ति, तैरर्चिता पूजिता इत्येतदुपलक्षणं स्तुता ध्याता नमस्कृतेत्येवमादीनाम्, 'यन्मनसा ध्यायति तद्वाचा वदति तत्कर्मणा कराति'

इति श्रुते मानसिकव्यापारपूर्वकानि हि इतरेन्द्रिय  
कर्माणि भवन्तीत्यभिप्राय । अथवा, अस्मिन् ससारमण्डले  
तत्स्वरूपपरिज्ञातार ये केचन, तेषा भजनीयत्वाध्यवसायो  
भक्ति तदेकप्रवणता सगुणब्रह्मविषया अष्टविधा, तैरेकभ  
क्तिमद्भिरर्चिता अन्तर्यागबहिर्यागमहायागप्रकारै पूजिता  
इत्यर्थ ॥ ॐ एकभक्तिमदर्चितायै नम ॥

एकाग्रचित्तनिर्ध्याता । एकम् ऐक्यरूपम् अग्रम् आ  
लम्बन विषय विजातीयप्रत्ययतिरस्कारपूर्वकसजातीयवृत्ति  
काभि निरन्तरव्याप्तिविषयीकृतचैतन्य यस्य तत्तादृश चि  
त्तमन्त करण येषा तै । यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहा  
रधारणाध्यानसमाधीना परिपाकातिशयेन पश्चात्सपद्यमाना  
सप्रज्ञातसमाधे त्रिविधा भूमिका— ऋतभरा, प्रज्ञालोका,  
प्रशान्तवार्हिता चेति । ऋत यथाभूत सच्चिदानन्दलक्षण  
ब्रह्म भरति वृत्तिव्याप्त्या विषयीकरोतीति प्रथमा तथा,  
'आत्मन्येव वश नयेत्' इति भगवद्वचनात् । प्रज्ञालोका ।  
प्रज्ञाया अखण्डाकारवृत्तौ नित्यनिरन्तराभ्यासेन परिपाक  
नीताया ब्रह्मविषयिण्या आवरणाभिभव कुर्वन्त्या सत्याम्,  
'प्रज्ञा प्रतिष्ठा' इत्यादिश्रुते, प्रज्ञाया ब्रह्मस्वरूपाया  
आलोक अभिव्यक्ति साक्षात्कार यस्या सपद्यत सा का

रणविज्ञानम् । यस्मिन्विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवतीत्येकं विज्ञानेन सर्वविज्ञानरूपम् । प्रारब्धवशात्तदा चित्तं तदध्यस्तं सर्वजगद्ब्रष्टुमिच्छति यदि, तदानीं चैतन्यप्रकाशेनैव प्रकाशितं जगत्स्वाप्नपदार्थवदशेषं भासते । इदं च भरद्वाजादीनामस्तीति पुराणादिप्रमाणवेद्यमस्माकम् । तथा च तस्या भूमिकाया निरुद्धसामर्थ्यं सदन्तं करणं साकारस्वरूपं निर्वासनं यदा नश्यति, तदा प्रशान्तवाहिता भवति । वह प्रवाहः सततवृत्तिः धारा अस्य अस्तीति वाही, वाहिनो भावः वाहिता प्रशान्ता च सा वाहिता च प्रशान्तवाहिता । अथवा, प्रशान्तः वाहः अस्य अस्तीति प्रशान्तवाही । प्रशान्तवाहिनो भावः प्रशान्तवाहिता, 'मनसो वृत्तिशून्यस्य ब्रह्माकारतया स्थितिः । असंप्रज्ञातनामेति समाधिर्योगिना प्रियः' इति वचनात्, 'प्रशान्तमनसो ह्येनम्' इति भगवद्वचनात्, 'प्रवृत्त्यप्रेजाऽनिलखे समुत्थितं पञ्चात्मके यागगुणे प्रवृत्ते । न तस्य रागो न जरा न मृत्युः प्राप्तस्य योगाग्निमयं शरीरम्' इति श्रुत्या उक्तलक्षणसाधनपरिपाकवशाद्भवति । तैर्निर्ध्याता, ध्यानस्य निर्गतत्वात् । भेदास्फूर्तौ ध्यानविषयो न भवति ध्यातुः स्वरूपमेव प्रकाशते, 'ब्रह्म वेदं ब्रह्मैव भवति' इति श्रुतेः । निध्याता इति पाठो नितरा

श्रवणमनननिदिध्यासनेन साक्षात्कृता इत्यर्थ ॥ ॐ एका  
अचित्तनिर्ध्यातायै नम ॥

एषणारहिताहता । एषणा इच्छा । मा त्रिविधा । एत  
ल्लोकजयाय पुत्रैषणा । पितृलोकजयसाधनकर्मसपादनाय  
वित्तैषणा । उपासनादिना जयसाधन देवलोक, तस्मिन्ने  
षणा लोकैषणा । आभि रहितै अनाकृष्टचित्तै, 'ते ह  
स्म पुत्रैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च लोकैषणायाश्च व्युत्थायाथ  
भिक्षाचर्यं चरन्ति' इति श्रुते । एषणारहिता ये परमहस  
परिव्राजका सन्यासिन तै आदरेण अतिशयप्रेम्णा स्वस्व  
रूपेण आदृता अङ्गीकृता निरन्तरध्यानेन साक्षात्कृता सती  
मोक्षरूपतया प्राप्त्यर्थ ॥ ॐ एषणारहिताहतायै नम ॥

एलासुगन्धिचिकुरा चैन कूटविनाशिनी ।

एकभोगा चैकरसा चैकैश्वर्यप्रदायिनी ॥ ७ ॥

एलासुगन्धिचिकुरा । एलावदिति दृष्टान्तप्रदर्शन सौग  
न्ध्यमात्रसद्भावप्रदर्शनेनाकल्पितदिव्यपरिमलसद्भावे हेतु ,  
न तु प्राकृतत्वदगनपरम्, ब्रह्मण स्वाधीनमायत्वात् । तद्  
त्सुगन्ध इति साजात्यमात्र व्यस्यते, गुणमात्रादानेन  
सर्वत्र पदार्थान्तरस्य दृष्टान्तीकरणत् । सुगन्धा येषा

सन्तीति सुगन्धिन तादृशा चिकुरा कुन्तला यस्या  
सा तथा । स्वभावसिद्धदिव्यपरिमलशालिसर्वाङ्गसौरभ्य  
वती, चिकुरपदस्य उपलक्षणत्वादिति भाव ॥ ॐ एला  
सुगन्धिचिकुरायै नम ॥

एन कूटविनाशिनी । एनसा पापाना कूट समुदाय ।  
आगामिसञ्चितप्रारब्धभेदेन समष्टिरूपेण दृढतर तत्त्वज्ञा  
नेन विना अन्यस्य भोगमात्रस्य तद्विनाशकत्वावगमात्  
तेषा च कल्पकोटिकाल क्रमिकभोगप्रदान विनोपायान्त  
रेण क्षयेप्सूनामात्मब्रह्माभेदज्ञानविषयतया चैतन्य नाशय  
तीति तथा । एवविदि पाप कर्म न श्लिष्यते, 'अशरीर  
वाव सन्त प्रियाप्रिये न स्पृशत' इत्यादिश्रुते, 'अह  
त्वा मर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि' इति स्मृतेश्च । अथवा  
एनासि च तत्कारणीभूत कूट कपटवचनाभिधान च त  
त्कारण माया च नाशयतीति तथा ॥ ॐ एन कूटविना  
शिन्यै नम ॥

एकभोगा । एकेन कामेश्वरेण साक भोग मुक्ति । भोग  
स्वस्वरूपानन्दानुभव यस्या सा तथा । अथवा, एकस्य अ-  
ज्ञानतत्कार्यस्य कार्यकारणरूपेण अभिन्नस्य तदधिष्ठानतया  
स्वमत्ताधायकत्वेन भोग परिपालन यस्या सा । प्रपञ्चो

त्पत्तिस्थितिनाशहतुमायोपाधिकचैतन्यमित्यर्थ । 'एकाकी न रमते तत पतिश्च पत्नीश्चाभवताम्' इति पुरुषविधब्राह्मणवचनात्, दपत्योरैच्छिकभेदकत्वावगमेन परमार्थत एतत्स्वरूपस्यैकचैतन्यरूपतावगमात्, तदुभयभोगस्यापि एकभोगत्वात् तद्वतीति वा ॥ ॐ एकभोगायै नमः ॥

एकरसा । एक अभिन्न रस सामरस्य यस्या सा, 'रसः ह्येवाय लब्धवानन्दी भवति' इति श्रुते । एक नव रसषु मुख्य शृङ्गाररस यस्या सा तथा । अथवा, एकेन परमेश्वरेण अस्या क्रियमाण प्रीत्यतिशयरूप रस एतद्विषयक यस्या सा । अथवा एकस्मिन्नेव स्वभर्तारि रमनिरतिशयप्रीति अनुरागमज्ञा यस्या सा । अथवा, षड्रसेषु मुख्य मधुररस प्रियत्वेन यस्या सा, सत्त्वगुणप्रधान मायापाधिकचैतन्यस्वरूपत्वात् । 'रस्या स्निग्धा स्थिरा हृद्या आहारा सास्त्विकप्रिया इति भगवद्वचनात् ॥ ॐ एकरसायै नमः ॥

एकैश्वर्यप्रदायिनी । ईष्टे प्ररयति अन्तर्यामित्वेन सवाणीति ईश्वर । 'य सर्वेषु भूतषु तिष्ठन्त्य सर्वाणि भूतान्यन्तरो यमयति' इति श्रुते । तत्प्रेर्यमाणाना जीवाना भूतशब्दवाच्याना अज्ञानतत्कार्यान्त करणोपहितप्रतिबिम्ब

चैतन्यरूपाणां जाग्रदाद्यवस्थाभिमानिनां अखण्डब्रह्मसाक्षात्कारवेलायाम् अभेदानुभवात्, 'तत्त्वमसि' इति श्रुतेश्च 'एकमेवाद्वितीयम्' इति विशेषितत्वाच्च, एकश्चासावीश्वरश्च एकेश्वर तस्य भाव तदैक्यं तन् प्रददातीति तथा । बहुषु विद्याधनवत्सु तेष्वेको विद्याधनवानित्युक्ते, तत्रत्यजननिष्ठविद्याभावे तदतिशयप्रतीतिवन् एक च निरतिशयमणिमादिकमैश्वर्यं नि श्रेयसं प्रददातीति वा । यद्वा एकं मानुषं सर्वोत्कृष्टं सार्वभौमत्वादिलक्षणमभ्युदयसामान्यमैश्वर्यं प्रददातीति वा तथा ॥ ॐ एकैश्वर्यप्रदायिन्यै नमः ॥

एकान्तपत्रसाम्राज्यप्रदा चैकान्तपूजिता ।

एधमानप्रभा चैजदनकजगदीश्वरी ॥ ८ ॥

एकान्तपत्रसाम्राज्यप्रदा । आतपान् आ समन्तान् अध्यात्माधिदैवताधिभूतानि आ शब्दार्थं । तभ्यां जाता तापा आतपा । तपन्ति शाषयन्तीति तपा, आतपभ्यः त्रायति रक्षतीति आतपत्रं सर्वससारदुःखोपशमात्मकमात्मज्ञानम् । 'यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेव यास्यसि' इति भगवद्वचनान् । अखिलदुःखनिदानाज्ञाननिवर्तकं एकं लक्षणया अभिन्नब्रह्मविषयकमित्यर्थः । एकं च तत् आतपत्रं च अखण्डाकारज्ञानम्, तेन जायमानं यत्साम्राज्यं सम्राजो भावः सर्वोत्तमः

त्व तत्प्रददातीति । अथवा, एकातपत्रसाम्राज्य चक्रवर्तित्व  
तत्प्रददातीति वा ॥ ॐ एकातपत्रसाम्राज्यप्रदायै नम ॥

एकान्तपूजिता । एकस्य अद्वितीयस्य शोधितत्वपदार्थ-  
स्य अन्ते उपाधौ हृदि परिच्छेदकत्वात् पूजिता अहमित्य  
परोक्षीकृता, 'यत्साक्षादपरोक्षाद्ब्रह्म' इति श्रुते । एकस्य  
ब्रह्मण अन्ते उप पूजिता षद् गत्यवसानार्थयोरिति धातुपा-  
ठान् उपनिषद्ब्रह्ममात्रतया पर्यवस्यतीत्यर्थ । एकान्तपूजि  
तति नाम्नोपनिषदित्यर्थ । अथवा, एकान्ते 'गुहानिवाता  
श्रयेण प्रयोजयेत्' इति श्रुत एकान्तस्थल ध्यानादिना  
योगिभिर्विषयीकृतेत्यर्थ । अथवा, कामेश्वरेण एकान्ते स्त्री  
लिङ्गे पूजिता । सप्रदायप्रवृत्त्यर्थमादौ ईश्वरेण बहिर्यागक्र  
मण आदिमसाधनेन सर्गाद्यकाले पूजादिना सतोषितत्वात्  
भूतार्थव्यपदेश । एकान्ते सवप्रविलापनसमये पूजिता  
ध्यानादिना सपादिता साक्षत्कृतेत्यर्थ । 'कश्चिद्धीर प्रत्य-  
गात्मानमैश्वरावृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्' इति श्रुतेरिति वा ॥  
ॐ एकान्तपूजितायै नम' ॥

एधमानप्रभा । एधमाना विवर्धमाना सर्वातिशायिनी प्रभा  
कान्तिर्यस्या सा, 'तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा  
सर्वमिद विभानि' इति श्रुते । ॐ एधमानप्रभायै नमः ॥

एजदनेकजगदीश्वरी । एजन्ति कम्पमानानि चष्टमाना  
नि प्राणवन्ति जीवन्ति अनेकानि नानोपाधिकानि जगन्ति  
जङ्गमानि विचरत्प्राणिन इत्यथ । ईष्टे प्रेरयतीति ईश्वरी ।  
स्थावराणां सुखदुःखप्राप्तिपरिहारोपायानभिज्ञत्वेऽपि स्वर्जा  
वनहेतुभूतोदकपानादिप्रवृत्तिदर्शनाच्चेष्टावत्त्व तत्राप्यस्तीति  
जगच्छब्दो निर्विशेषप्रपञ्चमात्रपरो वक्तव्य , अन्यथा 'सर्वे  
षु भूतेषु' इति श्रुतौ चरप्राणिमात्रपरत्वे सकोचापत्ते । अस  
ति विराधे सामान्यवाचकस्य शब्दस्य विशेषलक्षणाङ्गीका  
रस्य न्याय्यत्वात् । अन्यथा ब्रह्मण प्रपञ्चमात्रोत्पत्त्यादिहे  
तुत्व सङ्कुचित भवेत् । अत एव आकरे एजत्पद उपात्तम् ।  
यथाकथञ्चित् क्रियाश्रयत्वेन प्राणवत्त्वमात्रस्य समष्टिहिर  
ण्यगर्भाश्रयत्वेन सर्वेषां प्रेर्यत्वं संभवतीति भावः ॥ ॐ एज  
दनेकजगदीश्वर्यै नमः ॥

एकवीरादिससेव्या चैकप्राभवशालिनी ।

ईकाररूपा चेशित्री चेप्सितार्थप्रदायिनी ॥ ९ ॥

एकवीरादिससेव्या । एक अनितरसाधारण वीर  
पुरश्चर्यादिना कृतमन्त्रदेवतासाक्षात्कारलब्धपुरुषार्थं पुमान्  
विजयप्राप्ताभ्युदयशाली । राजराजनिष्ठधैर्यगाम्भीर्यादिगुण  
वत्त्वेन तत्तद्देवतोपासका पुरुषा वीरा इत्युच्यन्ते । यासां

शक्तीनामादयो यथा प्राणिकोटीनां ता एकवीरादयः तासां कदम्बैः ससेव्या ससेवितु योग्या । यदा ईश्वरी भक्ताननुगृह्णाति सगुणविग्रहवती स्यात् तदा अनेकपरिवारदेवतापरिसेविता मन्त्रदेवतात्वेनोपासनीयेत्यर्थः । अथवा, एकवीराण्युक्ता, तदादयः शक्तयः श्यामलाप्रमुखा, ताभिस्तत्कालप्रपञ्चे स्वस्वपीठे स्थिता सत्य उपासकानामभीष्टवरप्रदाय्यो दृश्यन्ते । ता अस्या परिसेवकत्वेन स्वयमभीष्टवरकामा इत्यस्या प्रकृताया महिमातिशयोक्तिः ॥ ॐ एकवीरादिसंसेव्यायै नमः ॥

एकप्राभवशालिनी । प्रभोर्भावः प्राभवः रक्षकत्व एकमनितरसाधारणं च तत्प्राभवः च तच्छालक इति तथा । अथवा, प्राभवस्य सापेक्षकधर्मत्वादेकपदस्य चानन्यगामित्वार्थस्य सामानाधिकरण्येन स्वारस्येन पर्यालोच्यमानेन अयमर्थः सूच्यते । प्राभवः च नियम्यलोकोद्भवः विना अनुपपद्यमानः तदन्तर्गततत्कार्यमर्थापत्त्या सिध्यति । तथा च वटबीजवस्वन्तर्गतपञ्चाङ्गाविकार्यवत्कूटस्थचैतन्यमिति भावः । अथवा, प्राभवः नामेश्वरत्वः तदाकल्पनियम्यजगच्चोपलक्षणविधया यत्स्यैकस्याखण्डचैतन्यस्य तदेकप्राभवम् । 'पादोऽस्य सर्वा भूतानि' 'एकाक्षनः स्थितो जगत्' इति श्रुतिस्मृतिभ्यां भूतपूर्व

गत्या प्राभवोपलक्षितमेक सच्चिच्चैतन्यरूप शालते आविष्करो  
ति तथा । अथवा एक च तत् प्राभव च एकप्राभव मुख्य  
सार्वभौमत्वमिति यावत् । प्रभुत्वपरपराया सविशेषाया  
कुत्रचित् पर्यवमानावश्यभावे 'एष सर्वेश्वर एष भूताधिप-  
तिरेष भूतपाल ' इति श्रुत्या अन्तर्यामितया साक्षात्कृ-  
त्युत्पादकत्वयुक्त्या च इतरवागाद्यवयवप्रेरणातिशयाना प-  
र्याप्तिरतैवास्तीत्यभिप्राय । तथा च निरङ्कुशस्वतन्त्रज  
गत्कारणत्वरूपतटस्थलक्षणलक्षितवेदान्तसमन्वयविषयीभूता  
अखण्डसच्चिदानन्दस्वरूपा परदेवता अवश्य स्वस्वरूपेणैव  
ध्यातव्येति निष्कृष्टार्थ ॥ ॐ एकप्राभवशालिन्यै नमः ॥

ईकाररूपा । इकार रूप तृतीयावयव यद्वाचकमन्त्रस्य  
यस्या सा तथा ॥ ॐ ईकाररूपायै नमः ॥

ईक्षित्री । इच्छति ईष्टे इति ईक्षित्री सर्वप्रेरिका इत्यर्थः ॥  
ॐ ईक्षित्र्यै नमः ॥

ईप्सितार्थप्रदायिनी । अर्ध्यन्ते प्रार्ध्यन्ते इत्यर्था अभ्यु-  
दयनि श्रेयसरूपा , आमु गन्तु प्राप्नु इच्छाविषयीभूता  
ईप्सिता , ते च ते अर्थाश्चेति कर्मधारय , ईप्सितार्थान्  
प्रददातीति तथा । केवलकर्मणामदृष्टद्वारा कालान्तरभावि

फलदातृत्वमचेतनत्वाभापपद्यते । तादृशाना कस्मिन्नप्यर्थे  
 सामर्थ्यादर्शनात् । चेतनाधिष्ठिताना तु कर्मणा भृत्यकृ  
 तपराक्रमादितुष्टराजवत्तदाराधितपरमेश्वर कर्माध्यक्ष , इति  
 श्रुत्या सर्वज्ञस्य तत्तदधिकारिकृतपुण्यापुण्यानुरूपतया फल  
 प्रदाने समर्थस्य सत्त्वकल्पने तदन्यस्य चेतनस्य जीवादेस्तत्र  
 सामर्थ्यविरहात् स एव तत्तदनुगुणविषयेच्छोत्पादनेन  
 तत्साधनानुष्ठापयिता सन् तत्फलकामना पूरयतीत्यनीश्व  
 रमीमासकमतनिरासो द्रष्टव्य । अथवा, ईप्सिता जिज्ञा  
 सिता, तथा च स्वस्वरूपप्रतिपादकवेदान्तश्रवणमनननिदि  
 ध्यासनविषयीकृता सती अर्थं प्रार्थ्यमान सर्वाभ्यर्हितमो  
 क्षरूप पुरुषार्थं प्रददातीति तथा ॥ ॐ ईप्सितार्थप्रदा  
 यिन्यै नम ॥

ईदृगित्यविनिर्देश्या चेश्वरत्वविधायिनी ।

ईशानादिब्रह्ममयी चेशित्वाद्यष्टसिद्धिदा ॥

ईदृगित्यविनिर्देश्या । ईदृक् एतल्लक्षणलक्षित एतादृश  
 परिमाण एवस्वरूप एतादृशधर्मवानिति प्रत्यक्षसिद्धार्थो  
 विनिर्देशु शक्यते । 'यञ्चक्षुषा न पश्यति' इत्यादिश्रुत्या  
 सर्वेन्द्रियगोचरत्वनिराकरणात् विनिर्देश्या न भवति । औ  
 पनिषदाना मते तु उपनिषदा वेदैकदेशत्वेन इतरप्रमाणा

नपेक्षतया अज्ञातार्थज्ञापकत्वेन प्रामाण्यसुररीकृतम् । इदं  
मेव एतादृगेवेति प्रत्यक्षसिद्धार्थज्ञापने तासामनुवादकत्वेन  
सापेक्षत्वरूपमप्रामाण्यं प्रसज्येतेत्यभिप्रायः । ॐ ईदृगि  
त्यविनिर्देश्यायै नमः ॥

ईश्वरत्वविधायिनी । ईश्वरस्य भाव तच्छैक्यं विदधाति,  
आवरणविश्लेषशक्तिमदज्ञाननिवर्तकारखण्डाकारचैतन्यस्वरूपा  
सती भेदबुद्धिमात्रसपादितैश्वर्यैक्यायोगभ्रमं निवर्तयती  
त्यर्थः, 'स्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यते' इति श्रुते । अथवा,  
ईश्वरत्वं नाम नानादेशविद्याधनोत्कर्षादिमत्त्वं तत्तत्प्राणिनि  
कायपुण्यप्रारब्धानुसारेण कर्मफलं प्रयच्छतीति वा । ॐ  
ईश्वरत्वविधायिन्यै नमः ॥

ईशानादिब्रह्ममयी । ईशानतत्पुरुषाघोरवामदेवसद्योजाता-  
ख्यानि पञ्च ब्रह्माणि, तानि मय स्वरूपमस्या अस्तीति सा  
तया । अथवा, ईशान आदिर्येषां ते तथा अधिकारिपुरुषा  
विष्णुब्रह्मोन्द्रादयः, तेषामपि तत्तन्नामरूपविशिष्टानाम् अहबु  
द्धिमताम् अन्तर्यामिस्वरूपेण बुद्धिप्रेरकसच्चिदानन्दस्वरूप-  
परब्रह्मानन्दप्रकाशात्मना स्फुरतीति तथा । ॐ ईशानादि  
ब्रह्ममय्यै नमः ॥

ईशित्वाद्यष्टसिद्धिदा । ईशित्वमादिर्योसा तास्तथा । 'अ

णिमा महिमा लघ्वी गरिमा प्राप्तिरीशिता । प्राकाम्य च वशित्व च यत्र कामा परागता ' इति वचनात् । ता सिद्धीरष्टौ ददातीति तथा । अणिमा क्षणमात्रेण अतिस्फुटमभाव । महिमा महतो भाव । लघ्वी लाघव । गरिमा गुरोर्भाव , जडतरपवतादिवत् भारवशेनाप्रकम्पित्वमित्यर्थ । क्षणमात्रेण विराडाकृतिमत्त्व प्राप्ति । हस्तेन चन्द्रमण्डलादिस्पर्श इशिता, इन्द्रादीनामपि प्रकृता । प्राकाम्य अप्रतिहतकामनावत्त्वम्, वाञ्छितार्थफलप्राप्तिरित्यर्थ । वशित्व सर्वलोकवशीकरणमामर्थ्यम् । यत्र कामा परागता , काम्यन्त इति कामा विषया यत्र यस्मिन् एश्वर्ये सति परागता बहिर्भूता भवन्ति , विषयाणामनुभवाभावे ऽपि तज्जन्यसुखवत्त्व आप्तकामत्वमित्यर्थ । एता अष्ट सिद्धय । ॐ ईशित्वाद्यष्टसिद्धिदायै नम ॥

ईक्षित्रीक्षणसृष्टाण्डकोटिरीश्वरवल्लभा ।

• ईडिता चेश्वरार्धाङ्गशरीरेशाधिदेवता ॥

ईक्षित्री । उदासीनद्रष्ट्री साक्षिणी असगोदासीनज्ञानस्वरूपेत्यर्थ , 'साक्षी चेता' इति श्रुते , 'आवि सनिहित गुहायाम्' इति श्रुते । ॐ ईक्षित्रीयै नम ॥

ईक्षणसृष्टाण्डकोटि । अण्डानां ब्रह्माण्डानां कोटयः असख्याताः, भूतभाविकालभेदेन बहुवचनं कोटिशब्दस्य, अनादित्वात् ससारमण्डलस्य, ईक्षणेन भाविकार्यालोचनेन सृष्ट्या अण्डकोटयो यथा सा तथा, 'तदैक्षत बहु स्या प्रजायेयेति' 'स ईक्षाचक्रे' 'आत्मा वा इदमेकमग्र आसीत् नान्यत्किंचन मिषत् स ईक्षत लोकांश्च सृजा इति स इमाल्लोकानसृजत' इत्यादिश्रुते, बाह्यकारणमनपेक्ष्य ऊर्णनाभ्यादिदृष्टान्तप्रदर्शनेन चेतनस्याभिन्ननिमित्तोपादानप्रदर्शनयुक्ते, 'प्रकृतिश्च प्रतिज्ञादृष्टान्तानुपरोधात्' इत्यादेश्चेति भावः । ॐ ईक्षणसृष्टाण्डकोटये नमः ॥

ईश्वरवल्लभा । ईश्वरं कामेश्वरं वल्लभं पतिं यस्यासा तथा । ईश्वराणां ब्रह्मविष्णुरुद्रादीनां तत्तन्निष्ठमहिमोत्कर्षरूपेण प्रीत्यतिशयविषयत्वेन अभ्यर्हितेत्यर्थो वा । ॐ ईश्वरवल्लभायै नमः ॥

ईडिता । ईडिस्तुताविति धातुपाठात् स्तुतिभिर्विषयीकृता, वेदान्तैरिति शेषः, 'एष नित्यो महिमा ब्राह्मणस्य' इत्यादिश्रुते । ॐ ईडितायै नमः ॥

ईश्वरार्धाङ्गशरीरा । ईश्वरस्य सच्चिदानन्दात्मकस्य शिवस्य अर्धं च तत् अङ्गं च अर्धाङ्गम् । आनन्दस्वरूपता शरीर

शरीरवत्स्वरूपलक्षण यस्या सा तथा । 'सच्चिन्मय शिव साक्षात्तस्यान-दमयी शिवा' इति स्मृते । अथवा, ईश्वर-स्यार्धाङ्ग वामभाग शरीर मूर्तिर्यस्या सा । अथवा, ईश्वरस्य हकारस्य अर्धाङ्ग शक्तिबीज शरीर मन्त्रात्मिका मूर्तिर्यस्या सा तथा । ॐ ईश्वरार्धाङ्गशरीरायै नमः ॥

ईशाधिदेवता । ईशस्येत्युपलक्षण जीवस्यापि, ईशस्य तत्पदवाच्यार्थस्य मायोपाधिकस्य विशिष्टस्य अधि उपरि विशेषणद्वयस्य परित्यागे देवता द्योतमाना कूटस्थचिन्मात्रशो-धिततत्त्वपदार्थरूपेत्यर्थः । अथवा, ईश कामेश्वर अधि देवता पूज्या यस्या सा तथा । परमपतिव्रतेत्यर्थः ॥ ॐ ईशाधिदेवतायै नमः ॥

ईश्वरप्रेरणकरी चेशताण्डवसाक्षिणी ।

ईश्वरोत्सङ्गनिलया चेतिबाधाविनाशिनी ॥

ईश्वरप्रेरणकरी । ईश्वरस्य बिम्बचैतन्यस्य स्वरूपा सती जगत्सर्जनादिकार्यप्रेरयित्री प्रेरणकरी आज्ञापकेत्यर्थः । इच्छाज्ञानक्रियाशक्त्यावरणविक्षेपशक्तिप्रतिफलितचित्स्वरूपा भाविकार्यानुकूलप्रारब्धाध्यक्षपरमेश्वरेक्षणनामधेयप्रकाशात्मिका भवतीति भावः । ईश्वरप्रेरण तदाज्ञामनुलङ्घनेन क-

रोतीति वा, तदीयभार्यात्वेन नितरा तद्वश्येति यावत् ॥  
ॐ ईश्वरप्रेरणकर्यै नमः ॥

ईशताण्डवसाक्षिणी । इशस्य तत्पदवाच्यार्थस्य ताण्डव  
नर्तनवदप्रयत्नसपाद्य लीलामात्रमित्यर्थ , जगत्सर्जनादिरूपा  
क्रिया चलनरूपकर्मत्वसामान्यात्, तस्य साक्षिणी अस  
सर्गप्रकाशरूपिणीत्यथ , ' असगो न हि सज्जते ' इति श्रुते ।  
अथवा, ईशताण्डवस्य परमेश्वरनृत्यनाट्याभिव्यञ्जितचतु ष  
ष्टिकलोपदेशस्य साक्षिणी । तदुक्तम्— ' नर्तनाद्धि परेशस्य  
चतु षष्टिकलाजनि ' इति प्रदोषस्तोत्रे ईशताण्डवनर्तनवर्णन  
मतिस्फुटमिति नेह लिख्यते ॥ ॐ ईशताण्डवसाक्षिण्यै  
नमः ॥

ईश्वरोत्सगनिलया । ईश्वरस्य स्वभर्तु उत्सग ऊरू तौ  
निलय यस्या सा तथा ॥ ॐ ईश्वरोत्सगनिलयायै  
नमः ॥

इतिबाधाविनाशिनी । इतिबाधा दैवाद्युपद्रव , क्षुद्र  
जन्तुपीडा वा, ता विनाशयतीति तथा ॥ ॐ इतिबाधा  
विनाशिन्यै नमः ॥

ईहाविरहिता चेशशक्तिरीषस्मिन्नानना ।  
लकाररूपा ललिता लक्ष्मीवाणीनिषेविता ।

ईहाविरहिता । अप्राप्तप्राप्तिं प्रति इच्छा ईहा, तथा विरहिता, आप्तकामत्वात् तद्विरहितेत्यर्थः ॥ ॐ ईहाविरहितायै नमः ॥

ईशशक्तिः । ईशम्य शक्तिः सर्वज्ञत्वादिस्वरूपसामर्थ्यं यस्याः सा तथा, 'देवात्मशक्तिम्' इति श्रुते ॥ ॐ ईशशक्तये नमः ॥

ईषत्स्मितानना । ईषत् स्मित मन्दहास यस्य तन् तथा, तादृगाननं यस्याः सा तथा, पर्याप्तकामत्वेन सर्वदा प्रसन्नमुखीत्यर्थः । दुःखास्पर्शीपरमानन्दरूपतया वा तथा ॥ ॐ ईषत्स्मिताननायै नमः ॥

लकाररूपा । रूप्यत इति रूप मन्त्रस्य चतुर्थवर्णत्वेन ज्ञापकं यस्याः सा तथा ॥ ॐ लकाररूपायै नमः ॥

ललिता 'ललित त्रिषु सुन्दरम्' इति वचनात् अत्यन्तसौन्दर्यवतीत्यर्थः । अनुपमसौन्दर्या वा ॥ ॐ ललितायै नमः ॥

लक्ष्मीवाणीनिषेविता । लक्ष्मी रमा सर्वेश्वर्यशक्तिः, वाणी सरस्वती सर्वज्ञानशक्तिः, ताभ्यां नितरा अकृत्रिमप्रेम्णा अनन्यभूता सती सेविता । सेवानाम उन्मीलिताज्ञापतीक्षा, तद्वत्त्वादित्यर्थः ॥ ॐ लक्ष्मीवाणीनिषेवितायै नमः ॥

लाकिनी ललनारूपा लसद्दाडिमपाटला ।

ललन्तिकालसत्फाला ललाटनयनार्चिता ॥

लाकिनी । क सुखम्, 'क ब्रह्म इति श्रुते, तन्न भवतीयक ब्रह्मभिन्नतया प्रतीयमान दुःखात्मक जगत् भकम्, लीयत इति लम्, उपलक्षणमुत्पत्त्यादे, लमक मस्यास्तीति लाकिनी, अनृतजडदुःखरूपजगत्कारणतद्व्यावृत्तस्वरूपब्रह्मभूता इत्यर्थ ॥ ॐ लाकिन्यै नम ॥

ललनारूपा । रूप्यते ज्ञाप्यते अनेनेति रूप ज्ञापक तद्व्याप्यलिङ्ग चिह्नमिति वा, ललनाना स्त्रीणा रूप वेष आभरणायलकारो वा आकृतिर्वा यस्या सा तथा, ललना स्त्रिय रूपाणि भूतय यस्या सा तथा, 'लिङ्गाङ्कितमिदं पश्य जगदेतद्भगाङ्कितम्' इति पुराणवचनान् ॥ ॐ ललनारूपायै नम ॥

लसद्दाडिमपाटला । दाडिमशब्दन विकसित तत्पुष्प लक्ष्यते, लसन् सद्या विकसनप्रकाश च तद्दाडिम च, इदं उपलक्षण बन्धुकादीनाम्, तद्वत्पाटला श्वेतमिश्ररक्तवर्ण प्रधानमूर्तिमतीयथ, 'श्वेतरक्तं तु पाटलम्' इति वचनात् । ॐ लसद्दाडिमपाटलायै नम ॥

ललन्तिकालसत्फाला । ललन्तिकया परित मुक्ताफल  
खचितनवरत्नमध्यया ललाटमध्यदेशभूषया, इदमुपलक्षण  
ललाटपट्टादीनाम्, लसत् फाल यस्या सा तथा ॥ ३ॐ  
ललन्तिकालसत्फालायै नमः ॥

ललाटनयनार्चिता । ललाटे नयन येषा ते, अत्र लला  
टशब्देन भ्रूमध्य लक्ष्यते, नयनशब्देन ज्ञानमपि, तथा  
चोर्ध्वदृष्टिभि खेचरीमुद्रया विलीनचित्तै असिवरुणयोर्म  
ध्यदेशाभिधानाविमुक्तकृतपरमेश्वराराधनपरपुरुषप्राप्यत्वाभि  
धायकात्रिप्रभोत्तरजावालभ्रुतिगतयाज्ञवल्क्योत्तरवाक्यनिर्दि  
ष्टभूमिकाजयसिद्धिमत्पुरुषै अर्चिता साक्षात्कृतेत्यर्थ । अथ  
वा, तृतीयनेत्रवता शिवेन तत्स्वरूपरुद्रैर्वा पूजितेत्यर्थ ।  
ॐ ललाटनयनार्चितायै नमः ॥

लक्षणोज्ज्वलदिव्याङ्गी लक्षकोट्यण्डनायिका ।  
लक्ष्यार्था लक्षणागम्या लब्धकामा लतातनु ॥

लक्षणोज्ज्वलदिव्याङ्गी । दीप्यते प्रकाशत इति दिव्य  
लक्षणै स्वरूपतटस्थनामकै उज्ज्वल शोभित शुद्धम् अङ्ग  
स्वरूप विग्रहो वा । घृताकठिन्यन्यायेन 'तदात्मान स्वय  
मकुरुत' इति श्रुत सच्चिदानन्दधनीभूतजीवात्मको विग्रहो

यस्या सा तथा । अथवा, सामुद्रिकशास्त्रोक्तदिव्यलक्षणै  
रुज्ज्वलानि मपूर्णानि दिव्यानि यानि अङ्गान्यवयवा शिर  
पाण्यादय अस्या सन्तीति वा तथा ॥ ॐ लक्षणोज्ज्वल  
दिव्याङ्गै नमः ॥

लक्षकोट्यण्डनायिका । लक्षानि च कोट्यश्च असख्या  
तापरिमितानीत्यर्थ , ससारस्यानादित्वेन भूतभविष्यदा  
दिभेदेन बहुसख्यावस्वमण्डानाम् , तानि च तान्यण्डानि च  
हिरण्यगर्भविराड्रूपाणि समष्टिव्यष्ट्यात्मना विश्वतैजसापा  
धिभूतानि , तेषाम् अधिष्ठानधिम्बचैतन्यात्मना नयति स्वस  
त्तामापादयतीति नायिका ॥ ॐ लक्षकोट्यण्डनायिकायै  
नमः ॥

लक्ष्यार्था । लक्षणया शोधनया जहदजहलक्षणया वा  
प्रतिपाद्यते वेदान्तमहावाक्याना योऽर्थ तत्स्वरूपा । अथ  
वा, योगशास्त्रप्रसिद्धबहिरन्तरूर्ध्वाध प्रदेशविशेषरूपभूमिका  
सु स्वस्वमनोवाञ्छाविषयविशेषणत्वन निर्गुणत्वन वा मना  
विलयरूपहठराजयोगादिसाधनपरिपाकवशेन साक्षात्कृत चै  
तन्य लक्ष्य इत्युच्यते, अर्ध्यते याच्यते गुरु प्रति इति अर्थ ,  
लक्ष्यो योऽर्थ चित्स्वरूपपरमानन्दरूप सोऽपि सैवेति  
तथा, 'ब्रह्मैवेदममृत पुरस्ताद्ब्रह्म पश्चाद्ब्रह्म दक्षिणतश्चोक्त

रेण' इति श्रुते ॥ ॐ लक्ष्यार्थायै नम ॥

लक्षणागम्या । लक्षणानाम शक्यार्थे वाचकस्य पदस्य  
अन्वयाद्यनुपपत्त्या तत्सबन्धिपदार्थान्तरज्ञानहेतु शक्य  
सबन्धादिपदजन्यपदार्थान्तरज्ञानहेतु शब्दवृत्तिरित्युच्यते,  
तस्या वाच्यवाचकतत्सबन्धादिभेदज्ञानपूर्विकाया परिच्छि  
न्नसावयवपदार्थसबन्धज्ञानहेतो केवलचिन्मात्रे निरुपाधि  
के वस्तुनि षष्ठीजात्यादीना लक्ष्यतावच्छदकधर्माणामभावे  
प्रवृत्त्ययोगात् तथा अगम्या, गन्तु ज्ञातु योग्य गम्य तन्न  
भवतीत्यगम्या । वेदान्तमते जहदजहलक्षणया विशषण-  
मात्रपरित्यागस्य अन्यान्यतादात्म्यानुपपत्त्या बोधितत्वात्  
तदर्थं सा अवश्यमङ्गीकर्तव्या । विशेष्यस्य ज्ञानस्वरूप  
त्वेन नित्यतया लक्षणाजन्यत्वात् तदर्थं सा न अपेक्ष्यत  
इति भाव । तथा च प्रकृताया देवताया शुद्धचैत  
न्यमात्रस्वरूपतया स्वय प्रकाशत्वेन लक्षणागोचरत्वात्  
लक्षणागम्येति नाम युक्तमिति भाव ॥ ॐ लक्षणा-  
गम्यायै नम ॥

लब्धकामा । लब्धा काम्यन्त इति कामा ऐहिकामु-  
ष्मिकसुखसाधनानि, लक्षणया तत्तज्जन्यसुखानि वा  
तथाभूता कामा यया सा तथा पर्याप्तकामेत्यर्थ ,

‘पथाप्तकामस्य कृतात्मनस्तु इहैव सर्वे प्रविलीयन्ति कामा ’  
इति श्रुते ॥ ॐ लब्धकामायै नम ॥

लतातनु । लता इव लता कल्पादिवलय सकलपुरु-  
षाथप्रदत्वेन जगति प्रसिद्धा , ता इव सुकुमारत्वाद्याश्रया  
तनु मूर्ति यस्या सा तथा ॥ ॐ लतातनवे नम ॥

ललामराजदलिका लम्बिमुक्तालताश्रिता ।  
लम्बोदरप्रसूर्लभ्या लज्जाढ्या लयवार्जिता ॥

ललामराजदलिका । ललाम्रा कस्तूरीतिलकेन कस्तूरी  
पत्रण वा राजत् विभ्राजत् परमशाभि भलिक ललाट  
यस्या सा तथा ॥ ॐ ललामराजदलिकायै नम ॥

लम्बिमुक्तालताश्रिता । लम्बिन्य लम्बमाना अध  
प्रसृता मुक्तालता हारा मुक्ताफलानि वा यस्या सा  
तथा । नवरत्नखचितसुवर्णमुक्तागुच्छै सर्वाङ्गेषु प्रलम्ब  
मानै ललाटपर्यन्त लम्बमानकिरीटप्रथमभागललाटपट्टना-  
साग्रताटङ्काध कर्णदेशकण्ठप्रदेशहस्तचतुष्टयाङ्गदसमानप्रदेश-  
कूर्पासपरित पद्काम्रदेशकटिनिबद्धकाञ्चयादिषु परिलम्बमा  
नैरित्यर्थ ॥ ॐ लम्बिमुक्तालताश्रितायै नम ॥

लम्बोदरप्रसू । लम्बोदरस्य महागणेशस्य प्रसू जन-  
यिज्ञी मातेत्यर्थ । लम्बोदर प्रसूत इति वा ॥ ॐ लम्बो-  
दरप्रसवे नम ॥

लभ्या । ससारदशायाभावारकाज्ञानेन स्फुटमप्रकाशमा-  
ना सती श्रवणादिसंस्कृतान्त करणवृत्तावखण्डाकारज्ञानभू-  
मिकाया प्रतिफलितस्वरूपेण विस्मृतकण्ठगतकनकभूषणवत्  
प्राप्तप्राप्तिरूपतया लब्धु योग्येति तथा ॥ ॐ लभ्यायै  
नम ॥

लज्जाढ्या । लज्जया, उपलक्षणमन्त करणघर्माणा सर्वे-  
षाम्, आढ्या तद्वत्त्वेन आकारवतीत्यर्थ । तिरोधानादिना  
अन्तर्हिता सती वरादि प्रयच्छतीति लज्जाढ्या भवतीति  
च उपचर्यते ॥ ॐ लज्जाढ्यायै नम ॥

लयवर्जिता । 'अविनाशी वा अरेऽयमात्मा अनुच्छि-  
त्तिधर्मा' इत्यादिश्रुत, लयो विनाश, तेन रहिता  
वर्जितेत्यर्थ । इदमुपलक्षण षड्भावविकाराणाम्, सत्य  
ज्ञानमनन्त ब्रह्म' इत्यादिश्रुते ॥ ॐ लयवर्जितायै नमः ॥

ह्रींकाररूपा ह्रींकारनिलया ह्रींपदप्रिया ।

ह्रींकारबीजा ह्रींकारमन्त्रा ह्रींकारलक्षणा ॥

ह्रींकाररूपा । ह्रींकार रूप्यते निरूप्यते निर्देश्यत इति रूप मन्त्रपञ्चमावयव यस्या सा तथा । ॐ ह्रींकार रूपायै नमः ॥

ह्रींकारनिलया । ह्रीमक्षर निलय गृहवदवच्छेदक यस्या सा तथा । स्वीयवाचकत्वारोपितवाच्यतावच्छेदकधर्मावच्छिन्नतादिसपादनेन गृहवर्तिपुरुषवत् व्यावृत्तस्वरूपेण ज्ञापक भवति । अन्यथा, नाम्नो वाच्यार्थे प्रवृत्त्ययोगादिति भावः । ॐ ह्रींकारनिलयायै नमः ॥

ह्रींपदप्रिया । पद्यते गम्यते ज्ञायते अनेनेति पदम्, पद्यत गम्यते प्राप्यत इति वा पदम्, ह्रींकारस्य मन्त्रावयवतया तद्देवताप्रकाशकत्वेन तस्या शक्तत्वात्— 'शक्त पदम्' इति तल्लक्षणत्वात् तथा प्रथम व्याख्यानम् । हकाररेफैकारानुस्वाराणां वर्णानां समष्टिस्वरूपेण समुदायात्मकत्वात् 'वर्णसमुदाय पदम्' इत्यपि पदलक्षणवत्त्वमस्य घटते । पुरश्चर्यावता स्वदेवतासाक्षात्कारद्वारा सकलपुरुषार्थप्रापकत्वात् द्वितीयव्याख्यानं तथा कृतम् । तस्मिन् प्रिया प्रीतिमतीत्यर्थः ॥ ॐ ह्रींपदप्रियायै नमः ॥

ह्रींकारबीजा । ह्रींकार एव बीज स्ववाचकमन्त्रभाग, 'ज्ञापक देवतानां यत् बीजमक्षरमुच्यते' इति वचनात् ह्रीं-

कारस्य मायाप्रकाशकत्वेन, वटधानादि स्वनिष्ठवृक्षाभिव्यञ्जकत्वेन कारणतया यथा बीजमित्युच्यते— सत्कार्यवादिनामव्यक्तनामरूपकारण बीजम्, अभिव्यक्तनामरूपात्मक पञ्चाद्वावि कार्यमित्यङ्गीकार, सकलकारणसमवधाने विशेषनामरूपवत्तया कारणस्याभिव्यक्तिरुत्पत्ति, तथा चोक्तबीजस्य मायावन्निष्ठचैतन्याभिव्यञ्जकत्वेनापि बीजत्वम्, तादृशह्रींकारबीज यस्या सा तथा ॥ ॐ ह्रींकारबीजायै नमः ॥

ह्रींकारमन्त्रा । ह्रींकारस्य मननात् प्रायत रक्षति वाच्यवाचकधोरभेदादिति तथा । ह्रींकारघटितो मन्त्रो वा यस्या सा इति वा तथा ॥ ॐ ह्रींकारमन्त्रायै नमः ॥

ह्रींकारलक्षणा । हकार शिव, आकाशबीजत्वादाकाशवन्निर्लेप, रेफ वह्निबीज कार्योत्पादसनिहितशक्तिमदीश्वरवाचकम्, तथा च हकारयुक्तेरेफ शुद्धचैतन्यमेव कारणतावन्निष्ठम्— इति वदति । ईंकार मन्मथबीज तत्कारणलक्षकतया स्थितिहेतु विष्णुरूपचैतन्यमभिदधाति । अनुस्वारस्तस्मिन्नेव पदार्थे अभिन्ननिमित्तोपादाने लय वक्ति । तथा च ह्रीमित्युक्ते जगद्दुत्पत्तिस्थितिलयकारण चैतन्यशक्त्या वाच्यार्थं प्रतीयते । तस्यैवोपाधिपरित्यागरूपलक्षण यस्या सा तथा । ह्रींकार लक्षण तदस्थलक्षण यस्या

सेति वा तथा ॥ ॐ ह्रींकारलक्षणायै नमः ॥

ह्रींकारजपसुप्रीता ह्रींमती ह्रींविभूषणा ।

ह्रींशीला ह्रींपदाराध्या ह्रींगर्भा ह्रींपदाभिधा ॥

ह्रींकारजपसुप्रीता । ह्रींकारस्य जप ह्रींकारजप , तेन सुप्रीता ॥ ॐ ह्रींकारजपसुप्रीतायै नमः ॥

ह्रींमती । वाचकत्वेन लक्षकत्वेन वा लक्ष्यपदार्थरूपेण वा वान्यवाचकयोरभेदेन वा अस्या अस्तीति ह्रींमती ॥

ॐ ह्रींमत्यै नमः ॥

ह्रींविभूषणा । केवलजडमायावाचक ह्रींकार , तथा हि— हकार श्वेतवाचक , रेफ रोहिताथक , ईकार नीलाथक , तथा च विशिष्टस्य शुक्लरक्तनीलवत्पदार्थवाचक तथा सत्त्वरजस्तमोगुणवत्प्रकृतिवाचकत्वेन परिच्छिन्नानृतजडदुःखस्वरूपवाच्यार्थकतया प्रकाशराहित्येन अनुपादेयताया सत्या तदवच्छिन्नस्वप्रकाशचैतन्याकारतया विशिष्टार्थस्य आपादमस्तकभूषिततरुणीवदानन्दस्वरूपतया तद्वाचकह्रींपदस्य अष्टैश्वर्यसिद्धिप्रदानशक्त्याधायकतया शोभायमानभूषणवत् , ' कुण्डली पुरुष ' इत्यत्र कुण्डलस्योपलक्षणतया इतरसजातीयादिव्यावर्तकत्वम् , तथास्यापि बीजस्येतरव्यावृत्तवाच्यार्थगोचरप्रमाजनकत्वेन भूषणवत् यस्या सा

तथा ॥ ॐ ह्रींविभूषणायै नम ॥

ह्रींशीला । ह्रीमित्यनन तद्वाच्यार्था ब्रह्मविष्णुरुद्रा लक्ष्यन्ते, तेषा शील स्वभाव पारमार्थिक रूप सच्चिदान न्दात्मकता यस्या सा तथा, तन्निष्ठधर्मा सत्त्वरजस्तमा गुणादयो वा यस्या सा तथा, 'शील स्वभावे धर्मे च' इति वचनात् ॥ ॐ ह्रींशीलायै नमः ॥

ह्रींपदाराध्या । ह्रींपदन एकाक्षरबीजमन्त्रेण आराधितु योग्या तथा । 'ह्रींकारेणैव ससिद्धो भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति' इति भुवनेश्वरीकल्पवचनादिति यावत् ॥ ॐ ह्रींपदाराध्यायै नम ॥

ह्रींगर्भा । ह्रींशब्दार्था सगुणमूर्तयस्तिस्त्र गर्भे स्वस्व रूपे सशक्तिका अविनाभावसबन्धेन यस्या सा तथा, 'मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन् गर्भे दधाम्यहम्' इति वचनात् ॥ ॐ ह्रींगर्भायै नम ॥

ह्रींपदाभिधा । ह्रींकार अभिधा नाम यस्या सा तथा । समष्टिरूपाया समष्टिशब्दवाच्यत्वनियमादित्यभिसधि ॥ ॐ ह्रींपदाभिधायै नम ॥

ह्रींकारवाच्या ह्रींकारपूज्या ह्रींकारपीठिका ।

ह्रींकारवेद्या ह्रींकारचिन्त्या ह्रीं ह्रींशरीरिणी ॥

ह्रींकारवाच्या । मायोपाधिकब्रह्मणि कल्पितधर्मेण  
शब्दप्रवृत्त्युपपत्त ह्रींपदस्य वाच्या रूढयेत्यर्थ ॥ ॐ ह्रीं  
कारवाच्यायै नमः ॥

ह्रींकारपूज्या । 'मूलमन्त्रेण पूजयेत्' इति पूजाङ्गत्वन मू  
लमनोर्विनियोग श्रूयते । मूलमनुश्च देवताया स्वक नामेति  
वचनात् । अन्तमुखानामेव मन्त्रशास्त्रेषु तन्नाम्ना व्युत्पन्नत्वा  
न् । ह्रींकार नमोऽन्तमुच्चार्य यथागुरुमप्रदाय श्रीचक्रादौ  
मूलदेवता पूजनीयेत्यागमरहस्यात् ह्रींबीजेनैव पूजयितु यो  
ग्या । अतिप्रियबीजनामत्वादित्यभिप्राय ॥ ॐ ह्रींकार  
पूज्यायै नमः ॥

ह्रींकारपीठिका । अत्र पीठशब्द आधारलक्षक । वा  
च्यार्थो हि वाचकशब्दस्य सत्ताप्रदत्वेन आधारो भवति ।  
मन्त्रदेवतयारभेदेऽपि अर्थनिष्ठमहिम्न तद्वाचकपदेऽदृश्यमा-  
नत्वात् कल्पितभेद सपाद्येदमुच्यते । ह्रींकारस्य पीठिका  
वृत्तिस्थान शक्त्या गोचरतया विषयीभूतत्यर्थ ॥ ॐ ह्रींका  
रपीठिकायै नमः ॥

ह्रींकारवेशा । स्वरूपत निगुणब्रह्मतया अज्ञानविषयत्वा-  
श्रयत्वाभ्यामप्राप्तपुरुषार्थरूपतया समाग्दशाया प्रतीयमान-  
त्वात् गुरूपसदनश्रवणादिरूपविध्यप्रामाण्यनिरासाय लक्ष-

णया शुद्धस्वरूपपरमानन्दतया प्रेक्षितत्वात् श्रवणादिजन्य-  
वृत्तिव्याप्यत्वरूपवेदनाविषयत्वम् । ' ब्रह्मण्यज्ञाननाशाय वृत्ति  
व्याप्तिरितीर्यते ' ' मामेव ये प्रपद्यन्ते मायाभेताम् ' इत्यादि  
वचनात् भगवताप्यङ्गीकृतमिति । ह्रींकारेण गुरुमुखोद्भूतेन  
वेद्या वेदितु योग्या । तत्स्वरूपपरिज्ञानद्वारा तत्प्राप्तिरूपपु  
रुषार्थहेतुत्वादिति तात्पर्यम् ॥ ॐ ह्रींकारवेद्यायै नमः ॥

ह्रींकारचिन्त्या । अस्य बीजस्य पञ्चप्रणवान्तर्गतत्वेन  
ॐकारभेदे ब्रह्मप्रतीकत्वाविशेषात् । प्रणवे यथा परापरब्र-  
ह्मापासनहेतुवदस्मिन् वा प्रतीके तद्भवतीति विकल्प । यदा  
भक्तिपार्थक्येन मन्त्रविशेषेषु भवतीति योगवेदमार्गरहस्य न  
वाद्जल्पाद्यवकाश । ह्रींकारे उभयविधब्रह्मस्वरूपतया चि-  
न्तितु योग्या । ध्यानस्थ साक्षात्कार प्रत्यारादुपकारकत्वेन  
ध्यातव्येत्यर्थ ॥ ॐ ह्रींकारचिन्त्यायै नमः ॥

ह्रीं । हृन् हरण इति धातुपाठात् समस्ताविद्यैश्वर्यप्रदा  
नादिशक्त्यारोपाधिष्ठानत्वे सत्यपवादावशेषितपरमानन्दरूप  
मुक्तिरित्यथ ॥ ॐ ह्रीं नमः ॥

ह्रींशरीरिणी । मूलमन्त्रात्मिकेति यावत् ह्रीमेव शरीर  
मूर्तिरस्या अस्तीति ह्रींशरीरिणी ॥ ॐ ह्रींशरीरिण्यै नमः ॥

हकाररूपा हलधृक्पूजिता हरिणेक्षणा ।

हरप्रिया हराराध्या हरिब्रह्मेन्द्रवन्दिता ॥

हकाररूपा । हकार रूप षष्ठावयव यस्या सा, मूलविद्यावाच्यार्थवाचक यस्या सा, तथा ॥ ॐ हकार-  
रूपायै नम ॥

हलधृक्पूजिता । हल युग धरति इति हलधृक् बल  
राम, तेन पूजिता ध्यानादिभिराराधितेत्यर्थ ॥ ॐ ह  
लधृक्पूजितायै नम. ॥

हरिणेक्षणा । हरिण्या एण्या ईक्षणमिव ईक्षण यस्या  
सा तथा, अतिसतोषेण कातराक्षीति भाव । सर्वत्र स-  
र्वदा सर्वद्रष्टीति वा । भक्तेष्वादरहेतुदर्शनवतीति भाव ॥  
ॐ हरिणेक्षणायै नम ॥

हरप्रिया । हरश्च प्रिया शिवबल्लभेत्यर्थ । हर प्रियो  
यस्या सा इति वा ॥ ॐ हरप्रियायै नम. ॥

हराराध्या । हरेण स्वभर्त्रा आराधितु योग्या, केवलस-  
िदानन्दस्वरूपत्वात् ॥ ॐ हराराध्यायै नमः ॥

हरिब्रह्मेन्द्रवन्दिता । हरि रमेश । ब्रह्मा वाणीश ।

इन्द्रो देवश उपलक्षण सर्वदेवभेदानाम् । तैर्वन्दिता नम  
स्कृता ॥ ॐ हरिब्रह्मेन्द्रवन्दितायै नम ॥

ह्यारूढासेविताङ्घ्रिर्ह्यमेधसमर्चिता ।

हर्यक्षवाहना हसवाहना हतदानवा ॥

ह्यारूढासेविताङ्घ्रि । ह्यारूढानाम् अश्वमात्रसेनानी  
शक्ति वश्यकरी । तथा सेवितौ अङ्घ्रि यस्या सा तथा ॥  
ॐ ह्यारूढासेविताङ्घ्र्यै नम ॥

ह्यमेधसमर्चिता । ह्यमेधेन अश्वमेधेन समर्चिता पू  
जिता । पुरुषत्वादिप्राप्त्यै इलादिभिरित्यथ ॥ ॐ ह्यमेध  
समर्चितायै नम ॥

हर्यक्षवाहना । वाहयतीति वाहनम् , ह्यक्ष केसरी वाहन  
यस्या सा तथा । महालक्ष्मीरूपदुर्गेत्यर्थ ॥ ॐ हर्यक्षवा-  
हनायै नम ॥

हसवाहना । हन्ति गच्छतीति हस सूर्य प्राणो वा,  
वाहनवत् आधारभूतप्रतीकमित्यर्थ , अभिव्यक्तिस्थानमिति  
यावत् , 'म यश्चाय पुरुषे । यश्चासावादित्ये । स एक ' इति  
श्रुते । अथवा, हसवाहना ब्राह्मीरूपेणेत्यर्थ ॥ ॐ हंस  
वाहनायै नम ॥

हतदानवा । हता दानवा अनेकप्रकारशक्तिरूपधरया  
भण्डासुरादय यथा सा तथा ॥ ॐ हतदानवायै नमः ॥

हत्यादिपापशमनी हरिदश्वदिसेविता ।

हस्तिकुम्भोत्तुङ्गकुचा हस्तिकृत्तिप्रियाङ्गना ॥

हत्यादिपापशमनी । हत्या ब्रह्महत्या आदिर्येषा तानि  
तथा पापानि शमयतीति तथा, 'हरिर्हरति पापानि' इति  
वचनात् ॥ ॐ हत्यादिपापशमन्यै नमः ॥

हरिदश्वदिसेविता । हरित् हरिद्वर्ण मरकत इव अश्वो  
यस्येन्द्रस्य स तथा आदिर्येषा । दक्षपतीना तै सविता चर  
णारविन्दसनिधिं किंकरतयाश्रितेत्यथ ॥ ॐ हरिदश्व  
दिसेवितायै नमः ॥

हस्तिकुम्भोत्तुङ्गकुचा । हस्त अद्यास्तीति हस्ती, तस्य  
कुम्भो तद्बहुन्नतौ कुचौ सान्द्रौ यस्या सा तथा ॥ ॐ ह  
स्तिकुम्भोत्तुङ्गकुचायै नमः ॥

हस्तिकृत्तिप्रियाङ्गना । हस्तिन कृत्तौ चर्मणि प्रिय  
प्रीतिमान् शिव, तस्याङ्गना भामिनीत्यथ ॥ ॐ हस्तिकृ  
त्तिप्रियाङ्गनायै नमः ॥

हरिद्राकुङ्कुमादिग्धा हर्यश्वाद्यमरार्चिता ।

हरिकेशसखी हादिविद्या हालामदोल्लसा ॥

हरिद्राकुङ्कुमादिग्धा । हरिद्राकुङ्कुमाभ्या उपलक्षण कस्तू-  
रीपत्रादीनाम् । दिग्धा लिप्तेत्यर्थ ॥ ॐ हरिद्राकुङ्कुमादि  
ग्धायै नम ॥

हर्यश्वाद्यमरार्चिता । हर्यश्च सुरेश आदिर्येषाम् अम  
राणा तैरर्चिता किंकरतया नियामकत्वेन पूजितेत्यर्थ ॥  
ॐ हर्यश्वाद्यमरार्चितायै नमः ॥

हरिकेशसखी । हरय हरिद्वर्णा केशा शिरोरुहा यच्च,  
'हिरण्यश्मश्रुर्हिरण्यकेश' इति श्रुते । तस्य सखी प्रयोज  
नमनपेक्ष्योपकारिणीत्यर्थ । यद्वा वर्णेन नीलेन हरिणा विष्णु-  
ना समा केशा अस्य सन्तीति सर्वाङ्गसुन्दरनित्ययौवनचि  
द्रूपसहितकामेश्वर , तस्य सखी ॥ ॐ हरिकेशसख्यै नमः ॥

हादिविद्या । लोपामुद्रापासितमनुरूपत्यर्थ ॥ ॐ हादि  
विद्यायै नम ॥

हालामदालसा । हालाया अमृतमथनाद्भूतवारुण्या  
मदेन उल्लासेन अलसा आरक्तनेत्रान्तरोमाश्वादिचिह्नवती  
त्यर्थ ॥ ॐ हालामदालसायै नमः ॥

सकाररूपा सर्वज्ञा सर्वेशी सर्वमङ्गला ।  
सर्वकर्त्री सर्वभर्त्री सर्वहन्त्री सनातना ॥

सकाररूपा । द्वितीयखण्डद्वितीयावयवत्वेन ज्ञापक य-  
स्या सा तथा ॥ ॐ सकाररूपायै नमः ॥

सर्वज्ञा । अलुप्तनित्यज्ञानम्बरूपेण सामान्यरूपेण सर्व  
जानातीति सर्वज्ञा, 'य सर्वज्ञ सर्ववित्' इति श्रुते ॥  
ॐ सर्वज्ञायै नमः ॥

सर्वेशी । सर्वस्य कार्यस्य अन्तर्यामिरूपेण ईष्टे प्रेरयती  
ति तथा ॥ ॐ सर्वेश्यै नमः ॥

सर्वमङ्गला । सर्वप्रकारेण शुद्धविशिष्टचैतन्यरूपेण मङ्ग  
ला परमानन्दस्वरूपा । अत्र बहुव्रीहेरविवक्षितत्वात् विव-  
क्षिताया वा सुन्दरकायो राजत्यादिवत् समासार्थः । अथवा,  
सर्वेषां मङ्गल यस्या सा तथा । सर्वैः प्रकारैः ध्यानकीर्त-  
नपूजानभस्काराद्यर्चनभक्तिजन्यकैङ्कर्यैः जडानामपि मङ्गल  
सुख यस्या जायते सा तथा । सर्वेषामात्मरूपतया प्रतीय-  
मान मङ्गल सुखस्वरूप यस्या मोति वा । सर्वशब्दवाच्य  
सर्वकारण शिव , तस्य मङ्गल सुख यस्या जायते सा तथा,  
'सखिन्मय शिव साक्षात्तस्यानन्दमयी शिवा' इति च

चनान् । अथवा, मङ्गलशब्दन मङ्गलहृतुभूता स्त्रियो लक्ष्यन्ते । सर्वेषां प्राणिनां मङ्गल मङ्गलसाधनभूता योषा स्वाभिन्नसच्चिदानन्दवत्त्वेन यस्या सा तथा, 'एतस्यैवानन्दस्यान्यानि भूतानि मात्रामुपजीवन्ति' इति श्रुतेरित्यर्थः । 'अशुभानि निराचष्टे तनोति शुभसततिम् । स्मृतिमात्रेण यत्पुसा ब्रह्म तन्मङ्गल विदुः । अतिकल्याणरूपत्वात् नित्यकल्याणसश्रयात् । स्मृतुणा वरदत्वाच्च ब्रह्म तन्मङ्गल विदुः' इत्यादिवचनान् ॥ ॐ सर्वमङ्गलायै नमः ॥

सर्वकर्त्री । सर्वं समस्तं स्वशक्त्या मायारूपया करातीति तथा, 'ईशत ईशनीभिः' इति श्रुतः ॥ ॐ सर्वकर्त्र्यै नमः ॥

सर्वभर्त्री । सर्वं विभर्तीति तथा, 'एष विधृतिरेषा लोकाणाम्' इति श्रुतः ॥ ॐ सर्वभर्त्र्यै नमः ॥

सर्वहन्त्री । सर्वं हरतीति तथा । णभिर्नामत्रयै 'यतो वा' इत्यादिश्रुत्युक्ततटस्थलक्षणत्रयमभिहितमिति वेदितव्यम् । ॐ सर्वहन्त्र्यै नमः ॥

सनातना । 'अजो नित्यः शाश्वताऽयं पुराणः' इति श्रुतं नित्यसिद्धस्वरूपेत्यर्थः ॥ ॐ सनातनायै नमः ॥

सर्वानवद्या सर्वाङ्गसुन्दरी सर्वसाक्षिणी ।  
सर्वात्मिका सर्वसौख्यदात्री सर्वविमोहिनी ॥

सर्वानवद्या । सर्वैर्ज्ञानैश्वर्यादिगुणैरनवद्या । अवद्यानाम  
विद्यया हीना जडप्रकृति मिथ्या बाध्यमानत्वात् । तद्विलक्षणा  
सत्यज्ञानानन्दरूपत्वादनवद्या । सर्वेषा सर्वाभीष्टप्रापकत्वेन  
स्तुत्या वा ॥ ॐ सर्वानवद्यायै नम ॥

सर्वाङ्गसुन्दरी । सर्वाणि च तानि अङ्गानि च अवयवा  
शिर पाण्यादयः , तेष्वन्यूनातिरिक्तभाववत्त्वात् यथासामुद्रि  
कलक्षण तद्वत्त्वन सर्वाङ्गसुन्दरी । अथवा, सर्वेषामङ्गेषु  
शरीरेषु ब्रह्मस्वरूपतया अत्यन्तप्रेमविषयत्वेन सुन्दरपदार्थ  
वदविनाभाववाञ्छाविषयत्वात् तथा ॥ ॐ सर्वाङ्गसुन्दर्यै  
नम ॥

सर्वसाक्षिणी । सर्वेषा जडाना कार्याणा स्फूर्त्याधायक-  
त्वेन प्रकाशकर्त्री तथा । सर्व साक्षादीश्रित इति वा तथा ॥  
ॐ सर्वसाक्षिण्यै नम ॥

सर्वात्मिका । सर्वेषामात्मस्वरूपत्वान् । ' यच्चाप्नोति यदा  
दत्ते यच्चात्ति विषयानिह । यच्चास्य सतता भावस्तम्मादात्मेति  
गीयत ' इति वचनात्तथा ॥ ॐ सर्वात्मिकायै नम ॥

सवसौख्यदात्री । सुखिन भाव सौख्यम्, सर्वाणि च तानि प्रियमोदप्रमोदानन्दशब्दवाच्यानि । इष्टदर्शनजन्य सुख प्रिय । तल्लाभजन्य मोद । तदनुभवजन्य प्रमोद । आनन्द समष्टि । जीव भोक्ता । तानि ददातीति तथा । सर्वप्रकारै स्मरणादिभि सौख्य ददातीति वा । सर्वेषा मात्रह्यस्तम्बपर्यन्ताना यथाकर्मोपासन प्रत्यक्षेण दृश्यमान ज्ञानैश्वर्यादिसहित सुख ददातीति वा तथा । 'एष ह्यवानन्द याति' इति श्रुते ॥ ॐ सर्वसौख्यदात्र्यै नम ॥

सर्वविमाहिनी । सर्वान विमोहयतीति अन्यथा प्राहय तीति वा तथा । 'अज्ञानेनावृत ज्ञान तन मुह्यन्ति जन्त व 'अनृतेन हि प्रत्यूढा' इति श्रुतिस्मृतिभ्या अज्ञाना वरणशक्तिकार्य मोहनादिसत्ताप्रकाशादिप्रधानाधिष्ठानत्वेन उपचारात् सर्व माहयतीत्युच्यत । अयो दहतीतिवत् ॥ ॐ सर्वविमोहिन्यै नम ॥

सर्वाधारा सर्वगता सर्वावशुणवर्जिता ।

सर्वारूणा सर्वमाता सर्वभूषणभूषिता ॥

सर्वाधारा । सर्वस्याधारा 'ब्रह्म पुच्छ प्रतिष्ठा' इति श्रुते । सर्वेषा हृदयानि आधार अभिव्यक्तिस्थान उपासनाय

यस्या सेति तथा ॥ ॐ सर्वाधारायै नम ॥

सर्वगता । सर्वं गच्छतीति तथा । ‘अनेन जीवेनात्म  
नानुप्रविश्य’ इति श्रुते ॥ ॐ सर्वगतायै नम ॥

सर्वावगुणवर्जिता । अवमानहतवश्च ते गुणाश्च तथा,  
आध्यात्मिकसबन्धन आरोपिता सत्त्वादय समष्टौ, अन्त  
करणधर्मा कामादय व्यष्टौ, सर्वे च ते अवगुणाश्च तथा ।  
सर्वान्तर्यामित्वेन मवानुस्यूतत्वेऽपि तत्तदुपाधिनिष्ठोत्तमाधम  
धर्मै न सबध्यत— घटादिनिष्ठाकाशवत् कोशान्तर्गतखड्गव  
द्वा, ‘सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षु न लिप्यते चाक्षुषैर्बाह्य  
दोषै । एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा न लिप्यत लोकोदु खेन  
बाह्य’ इति श्रुते ॥ ॐ सर्वावगुणवर्जितायै नम. ॥

सर्वारूपा । सर्वेष्वङ्गेष्वरूपा आरक्तवती, ‘असौ यस्ता  
स्रो अरुण’ इति श्रुते ॥ ॐ सर्वारूपायै नम ॥

सर्वमाता । सर्वेण कार्येण मीयते अनुमीयतेऽभदनेति  
तथा । तथा हि— इदं जगत् ब्रह्माभिन्नं तत्सत्तास्फूर्तिनिय  
तसत्ताप्रकाशज्ञानविषयत्वात्, यन् यन्नियतसत्ताप्रकाशवान्  
स तदभिन्न — यथा तन्तुकार्यं पट इति । सर्वान् मिनाति  
स्वाभेदेन जानातीति तथा ॥ ॐ सर्वमात्रे नमः ॥

सर्वभूषणभूषिता । सर्वात्मकत्वेन ये ये प्राणिन यानि यानि भूषणालकारभोजनादीान भाग्यवस्तून्यात्मार्थं सपा दयन्ति, तेषा सर्वेषा प्रत्यक्तया तै सर्वैर्भूषिता उपकृतेत्यर्थ , 'आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रिय भवति' इति श्रुते । अथवा, सर्वदेवात्मकत्वेन सर्वभक्तजनस्य स्वस्वेष्टदेवताप्रीत्यर्थं भूष णभूषितत्वेन तथा । अथवा सर्वैर्भक्तजनै तत्तद्वयवेषु भूषणैरारोपिता, स्वस्या महाराज्ञीत्वेन असगोदासीनस्व भावत्वादिति भाव । यद्वा, सवदेशकाललोकेषु भूषणै तन्न तत्र भवै उच्चावचैर्भूषणैरारोपिता, हस्त्यश्वादिदहोपा- धिका सती तत्तदीयालकारादिषु जुगुप्मारहितेत्यर्थ । भूष यन्ति सर्वोत्तमत्वेन प्रतिपादयन्ताति भूषणानि वेदान्तम हावाक्यानि, सर्वै समस्तै गतिसामान्यात् एकतात्पर्येण भूषिता लक्षणया पर्यवसिता समन्विता वेत्यर्थ ॥ ॐ सर्वभूषणभूषितायै नम ॥

ककारार्था कालहृन्नी कामेशी कामितार्थदा ।  
कामसजीवनी कल्या कठिनस्तनमण्डला ॥

ककारार्था । 'क ब्रह्म' इति श्रुत्या ककारस्य ब्रह्मार्थकत्वेन तद्व्यतिरिक्तस्यातदर्थस्य बाधितत्वात् ॥ ॐ ककारार्थायै नम ॥

कालहन्त्री । अजपारूपेण प्राणापाननामकचन्द्रसूर्यनि-  
यमन पुरुषाणां नियमितपरिमितायुस्वरूपैकविंशतिषट्श-  
ताधिकसहस्रमख्याकनिर्गमनरूपेण क्षपयन्ति अवशेषायुषो  
युगकल्पाद्यविशिष्टस्य वृद्धौ पुनः सयमने तथा तथा वृद्धौ  
सयुञ्जानस्य सर्वप्राणेन्द्रियस्य वृत्तिलये मनोन्मन्यवस्था नि-  
ष्पद्यते । तथा च श्रुति — ‘पृथिव्यग्नेजोऽनिलखे समुत्थिते  
पञ्चात्मकयागगुणे प्रवृत्ते । न तस्य रोगो न जरा न  
मृत्युः प्राप्तस्य योगाग्निमयशरीरम्’ इति ‘अध्यात्मयागा-  
धिगमेन देवमत्वा धीरा हर्षभोको जहाति’ इति च ।  
तथा च तदानीमाविभूतब्रह्मस्वरूपेण ‘ततः सवत्सरो  
ऽजायत’ इति श्रुत्या क्रियाशक्त्यात्मककालोत्पत्तिश्रवणात्  
तस्मिन् ब्रह्मण्येव लये कालं हन्ति नाशयतीति तथा  
नामनिर्वचनयुक्तवक्तुमिति भावः ॥ ॐ कालहन्त्र्यै  
नमः ॥

कामेशी । कामानां भोग्यपदार्थानां यथादृष्टं ईदृ-  
शं प्रेरयतीति तथा ॥ ॐ कामेदयै नमः ॥

कामितार्थदा । कामितानर्थान् ददातीति तथा, ‘आप्त-  
कामः’ इति श्रुते । ससारदशायामावृतानन्दस्य अनाप्तवद-  
वभासमानस्य आत्यन्तिकसुखात्मिका मुक्तिर्मे स्यादिति का-

न्यमानत्वादात्मन कामितत्वम् । कामितश्चास्मावर्थश्चेति तन्मैव  
ज्ञानस्यावरणाभिभावकत्वेन प्राप्तप्राप्तिरूपतया त ददाति प्रय-  
च्छतीति प्रकाशस्वरूपण अनुभावयतीत्यर्थ ॥ ॐ कामि  
तार्थदायै नमः ॥

कामसजीवनी । काम मन्मथ परमेश्वरनेत्राभिविप्लुष्ट  
मण्डासुरात्मना अनेककालदेवलोकविपक्ष कामशास्त्रप्रयोग  
समये रतिदेवीप्रार्थनसमीचीनतदीयपूर्वकाय तपश्चर्यादिप-  
रिपाकफलभूत करुणारसपूरितापाङ्गावलोकनेन सजीवयति  
सप्राण कृत्वा तस्मै वरादि प्रयच्छति तेन त हर्षयतीति  
तथा ॥ ॐ कामसजीवन्यै नमः ॥

कल्या । कलयितु ध्यातु योग्या । अथवा, सर्वोत्तमदेव-  
त्वेन ध्यातु याग्या कल्या । कले कामधेनुत्वेन यथा वा-  
ञ्छितार्थकारणम् ॥ ॐ कल्यायै नमः ॥

कठिनस्तनमण्डला । स्तनयो मण्डले आदिमभागौ सा-  
न्त प्रदेशौ कठिने अप्रकम्पे अतिस्थिरे वा यस्या तथा ॥  
ॐ कठिनस्तनमण्डलायै नमः ॥

करभोरु' कलानाथमुखी कचजिताम्बुदा ।

कटाक्षस्यन्दिकरुणा कपालिप्राणनायिका ॥

करभोरु । करभ इव ऊरू यस्या सा तथा । ' मणि  
बन्धादाकनिष्ठ करस्य करभो बहि ' इति प्रमाणादिति भा  
व ॥ ॐ करभोरवे नमः ॥

कलानाथमुखी । कला चतु षष्टिकला नाथयति प्रेर  
यतीति कलानाथ , ' निश्चसितमेतदृग्वेदो यजुर्वेद साम-  
वेद ' इत्यादिश्रुते , ' शास्त्रयानित्वात् ' इति न्यायाच्च ।  
तादृशमुख वदन यस्या सेति तथा । कलानाथश्चन्द्र इव  
मुख यस्या सेति वा ॥ ॐ कलानाथमुख्यै नम ॥

कचजिताम्बुदा । कचेन कशभारेण कबरेण वेत्यर्थ ।  
जिता अधरीकृता अम्बुदा मेघा यया सा तथा , मेघम-  
ण्डलापेक्षया ऊर्ध्वगामिशिरोरुहभारा व्योमकेशीति भाव ।  
अथवा, केशवृत्तिनीलरूपेण सादृश्यासहत्वेन चिक्कृता  
मेघा यया सा तथा ॥ ॐ कचजिताम्बुदायै नम ॥

कटाक्षस्वन्दिकरुणा । यद्यपि दीनेषु परिपाल्यताबुद्धि-  
र्देवाना महता करुणेत्युच्यते, तथापि तस्या आन्तरत्वेन  
अज्ञायमानतया तेषु भक्त्यतिशयेन प्रवृत्त्यर्थं सेवादौ तद्वत्ता  
ज्ञानस्यावश्यकफलप्रदानादिहेतुतया निश्चयेन तदन्तुरूपकसा  
स्त्विक्कीक्षणस्मेरसभाषणादिसत्त्व तत्रावश्य भवतीति का-  
र्यसत्त्वप्रसञ्चितकारणसत्त्ववत्त्वात्, करुणाया नवरसेष्व-

न्तर्भावात्, रसशब्दस्य मधुरादौ रूढत्वात् तेषामनिवचनी यत्त्वऽपि अनुभवगोचरतायामिक्ष्वादिसारद्रव्यपदार्थनिष्ठत्वा-  
पलब्धे तत्त्वबन्धवशात् परपरया द्रवद्रव्यवृत्तिस्त्रन्दनरूप-  
क्रियाश्रयत्वमुपचर्यते । तथा च कटाक्षस्यन्दिनी करुणा  
परिपाल्यताबुद्धिरूपा यस्या सा तथा ॥ ॐ कटाक्षस्य-  
न्दिंकरुणायै नमः ॥

कपालिप्राणनायिका । कपालमस्य अस्तीति कपाली आन-  
न्दभैरव, तस्य प्राणनायिका प्राणस्येत्युपलक्षण पञ्चानाम् ।  
नायिका अधिष्ठानत्वेन प्रेरका । 'न प्राणेन नापानेन मर्त्यो  
जीवति कश्चन । इतरेण तु जीवन्ति यस्मिन्नेताबुपाश्रितौ'  
इति श्रुते । तस्यापि हृदयान्तर्वर्तिपरमश्वररूपेति यावत् ।  
प्राणवल्लभेति वा, प्रियेति भावः । ॐ कपालिप्राणना-  
यिकायै नमः ॥

कारुण्यविग्रहा कान्ता कान्तिधूतजपावलि ।  
कलालापा कम्बुकण्ठी करनिर्जितपल्लवा ॥

कारुण्यविग्रहा । कारुण्यं पूर्वोक्तकृपा, करुणस्य भावः,  
तत् विग्रहं मूर्तिर्यस्या सति तथा । कारुण्यस्या-  
न्त करणपरिणामबुद्धिरूपत्वेन नत्रान्तवीक्षासस्मितभाषादि  
नानुमीयमानत्वेऽपि साक्षात्तज्जन्यमनोवाञ्छितवरप्रदाना

दीना शरीरावयवविशेषजन्यतया कारुण्य विग्रहो यस्या  
 सेति समासोपपत्ति । मायोपाधिकस्य ब्रह्मण जगत्सृष्टय  
 नुकरणहेतुभूतस्वेच्छामात्रनिमित्तककर्मानधीनसच्चिदानन्दध  
 नीभूतात्मकभक्तानुग्राहकविग्रहवत्ता विना देवताया बुद्ध्या  
 वनारोपेण सगुणोपासनमनुपपद्यमान स्यात्, तदर्थं  
 देवताधिकरण मन्त्रप्रकाशिता देवा 'वजूहस्त पुर  
 न्दर' इत्यादिस्वतः प्रमाणवेदवाक्यवशात् बाधकाभावे  
 विग्रहवन्त अङ्गीकर्तव्या इति प्रतिष्ठापितम् । तथा 'बहु  
 शोभमानामुमा हैमवतीम्' इति केनोपनिषद्भाष्ये हैमानि  
 हेमविकाराणि भूषणानि यस्या सेति वा तथा, हिमवत  
 अपत्य स्त्रीति च तथेति परदेवताया दिव्यविग्रहवत्त्व प्रति  
 ष्ठापितम् । तथा च महानुभावाना स्वप्रकाशचैतन्यरूपाणा  
 मेवभूताना सर्वात्मना सर्वोत्तमाना मूर्तित्रयदेवाना ध्याना  
 न्युपकाराय तादृशमूर्तिमत्त्वम् अस्तीति न किञ्चिदनीश्व  
 रवादप्रसङ्गावकाश इति आस्ता विस्तर ॥ ॐ कारु  
 ण्यविग्रहायै नम ॥

कान्ता । 'कन दीप्तौ' इति धातो अत्यन्तमनोहरतमे  
 त्यर्थ । मदनगोपालविग्रहा वा । 'कदाचिदाद्या ललिता पु  
 रूपा कृष्णविग्रहा । वशनादविनोदेन करोति विवश जगत्'

इति त्रिपुरतापनीये ॥ ॐ कान्तायै नमः ॥

कान्तिधूतजपावलि । जपाना जपापुष्पाणाम्, उपलक्षणम्  
अन्येषामारक्तवर्णानाम्, आवलि पङ्क्ति दृष्टान्तत्वेन कविभि  
रुत्प्रेक्षिता । कान्त्या अप्राकृतस्वच्छपरमानन्दचिद्भासा धूता  
परित्यक्ता प्राकृतत्वेन अल्पकान्तिमत्तया उपमायोग्यतया  
यया सा, 'न हि महान्तो नीचैरुपमीयन्ते' इति न्याया  
दिति भाव ॥ ॐ कान्तिधूतजपावल्यै नमः ॥

कलालापा । कला चतु षष्टिकला आलापो व्यावहा-  
रिकशब्द यस्या सा तथा, 'वेदशास्त्रमयी वाणी यस्या  
सा परदेवता' इति वचनात् । कल अव्यक्तमधुर सप्रयो  
जन आलाप सलापो यस्या सेति वा तथा, 'अव्यक्ता  
भारती तथा' इति महापुरुषसामुद्रिकवचनात् ॥ ॐ  
कलालापायै नमः ॥

कम्बुकण्ठी । कम्बुशब्देन अत्र शङ्खनिष्ठरेखाप्रय लक्ष्य  
ते । तद्वान्कण्ठो यस्या सेति तथा गुणनामेदम् ॥ ॐ  
कम्बुकण्ठ्यै नमः ॥

करनिर्जितपल्लवा । करशब्देन करतल लक्ष्यते । पल्ल  
वशब्देन तन्निष्ठपाटल्य स्निग्धता लक्षणया इत्यर्थः । तथा

च अन्यान्यगुणयोज्यपराजये, अर्थात्तद्वतोरपि तौ सिद्धावि-  
ति तन्नामोपपत्ति । ' विवाहश्च विवादश्च समयोरेव शोभते '  
इति वचनात् करतल तत्साम्यध्वनिरनेन नाम्ना कृत ।  
करेण निर्जिता पल्लवा यस्या सा तथा ॥ ॐ करनिर्जित  
पल्लवायै नम ॥

कल्पवल्लीसमभुजा कस्तूरीतिलकाश्रिता ।  
हकारार्था हसगतिर्हाटकाभरणोज्ज्वला ॥

कल्पवल्लीसमभुजा । यथा दिव्यवृक्षा नन्दनोद्याने प्र  
सिद्धा तथा तदलकाराय वल्ल्यादयोऽपि कल्पयन्ति सपा  
दयन्तीति कल्पा , कल्पाश्च ता वल्ल्यश्च व्रतत्य , ताभि  
समा भुजा हस्ता यस्या सा तथा । कविसप्रदायप्राप्त्या  
स्त्रीभुजाना वल्लीसाम्योक्तिरिति मन्तव्यम् । अत्र समपद  
स्वारस्येन तेषामपि तदवच्छिन्नचैतन्यद्वारा यथाप्रारब्ध चे  
तनवल्लोकवाञ्छितफलकतृत्वमिति ध्वनितम् । ' एकस्तथा  
सर्वभूतान्तरात्मा रूप रूप प्रतिरूपो बहिश्च ' इति श्रुते ,  
' तत्तदेवावगच्छ त्व मम तेजोऽसभवम् ' इति स्मृतौ च  
भगवता स्वकीयसच्चिदानन्दस्वरूपावस्थितिरेवोक्ता । अत एव  
परदेवीभुजाना नैव साम्योक्तिरिति शङ्का निरस्ता वेदि

तव्या, औपाधिकचैतन्येन तथाभूतचैतन्यस्य साम्योपपत्ते ॥

ॐ कल्पवल्लीसमभुजायै नमः ॥

कस्तूरीतिलकाञ्चिता । कस्तूरीतिलकेन ललाटदेशसस्था पितबिन्दुाकारमृगनाभिना अञ्चिता चिह्निता अलकृतेत्यर्थः ॥

ॐ कस्तूरीतिलकाञ्चितायै नमः ॥

हकारार्था । हकारस्य आकाशबीजस्य अर्था, अर्थ स्व रूपचैतन्यम् आकाशविग्रहेत्यर्थः, 'आकाशो ह वै नाम ना मरूपयोर्निर्वहिता ते यदन्तरा तद्ब्रह्म' इति श्रुते ॥ ॐ हकारार्थायै नमः ॥

हसगति । हन्ति गच्छतीति हस प्राण आदित्यो वा । हसस्य प्राणस्य गति गमनागमन लक्षणया तज्जाप्याजपा मन्त्ररूपा यस्या सा तथा, 'हकारेण बहिर्याति सकारेण पुनर्विशेत्' इति वचनात् । यद्वा, तद्भिमानिदेवतारूपा प्रीषोमात्मकसूर्यचन्द्रगती अहोरात्रात्मककालस्वरूपाया य स्या सा । अथवा, हन्ति देहादेहान्तर गच्छति स्वक र्मवशेनेति हसा जीव, तस्य गति प्राप्यस्थान मुक्ति रित्यर्थः, 'ब्रह्मविदाप्नोति परम्' 'यद्ब्रह्म न निर्वर्तन्ते' इति श्रुतिस्मृतिवचनात् । अथवा हन्ति स्वकार्यभूत जगत्प्रविशतीति हस । 'हसस्तु परमेश्वर' इति नृसिंहता

पनीये । गम्यते प्राप्यते शरणत्वेन प्रपद्यते चतुर्विधभक्तैरि  
ति गति । हसश्चासौ गतिश्चेति सामानाधिकरण्यसमास ,  
'हस्य शुचिषत्' इति श्रुते । आहोस्वित्, हसस्य ब्रह्मवाह  
नस्य गतिरिव गमन यस्या सा तथा । उताहो, हसशब्देन  
नामैकदेशेन हसक पादकटकमुच्यते, गम्यते अनेनेति  
गति चरणम्, हसयुक्ते गती पादारविन्दे यस्या सा  
तथा । यद्वा, हसशब्देन नित्यानित्यसारासारजडाजडादिव  
स्तुविवेकसमर्था, हन्ति गच्छन्ति प्रतिग्राम प्रतिदेशम्  
इति हसा परिव्राजका चतुर्थाश्रमिण निष्कामा, तेषा  
गति गम्यते ज्ञायते साक्षात्क्रियत इति गति, 'सन्यासयो  
गाद्यतय शुद्धसत्त्वा' इति श्रुते । 'ये पूर्व देवा ऋषयश्च  
तद्विदु ते तन्मया अमृता वै बभूवु' इति श्रुते । जीवन्मु  
क्तपुरुषानुभूयमानपरमानन्दमुक्तिस्वरूपेत्यथ ॥ ॐ हस  
गत्यै नम ॥

हाटकभरणोज्ज्वला । हाटकस्य सुवर्णस्य कार्याणि च  
तानि आभरणानि च हाटकभरणानि तैरुज्ज्वला तथा,  
प्रकाशिता अलङ्कृतैत्यर्थ । हाटकस्य सुवर्णरूपब्रह्माण्डस्य  
आभरणवदुज्ज्वला प्रकाशकरी सत्तास्फूर्तिकरीत्यर्थ । यद्वा,  
तस्मिन्नाभरणै मङ्गलसूत्रादिभि सनाथस्त्रीमण्डलस्वरूपैरु

ज्ज्वलतीति । आहोस्विन्, कार्यकारणद्वयरूपवसुदानेन वसु  
स्वरूपेण वा उज्ज्वलति प्रकाशत इति तथा, 'वसुरन्तरिक्ष  
सत्' इति श्रुते ॥ ॐ हाटकाभरणोज्ज्वलायै नमः ॥

हारहारिकुचाभोगा हाकिनी हल्यवर्जिता ।  
हरिर्त्पतिसमाराध्या हठात्कारहतासुरा ॥

हारहारिकुचाभोगा । हरस्य परमेश्वरस्य इमे सबन्धिना  
हारा ईश्वरत्वात्प्रकामत्वनित्यवृत्तत्वादयो गुणा, तान् हरति  
तद्विपरीताविद्याद्याधानेन उत्सादयतीति हारहारी, कु  
चयोराभोग पर्यन्तभूमि यस्या सा तथा । परमेश्वरस्य  
तद्विषयकवाञ्छया तदेकसक्तमनस्त्वेन तत्कारणीभूताविद्या  
वशवृत्तित्वेन वशीकृतमायत्वस्वरूपेश्वरत्वसमानाधिकरणा  
प्रकामत्वादय अपहृता, जीवेश्वरयोरेकत्र तेषा तद्गुणा-  
ना च सामानाधिकरण्यायोगादित्यर्थः । तथा च ईश्वरस्य  
मदिष्टसाधनमित्यन्यत्र पदार्थे बुद्धिमत्त्वस्यैव बहुभवनरूपत  
या तस्य जगदाकारत्वाधायका—इत्यधिकगुणोत्प्रेक्षाविषयत्वेन  
भोगस्यातिशयोक्तिरिति द्रष्टव्यम् । अथवा, हारान् मुक्तास्र  
ज हरति आदत्ते इति हारहारी कुचाभोगो यस्या सेति  
तथा षट्प्रकारेण मुक्ताहारेण यथोचितकाल भूषितवतीति  
भावः ॥ ॐ हारहारिकुचाभोगायै नमः ॥

हाकिनी । हाकयति जन्ममरणयो छेदयतीति हा किनी, 'हाक् च्छेदे' इति धातुपाठात् ॥ ॐ हाकिन्यै नम ॥

हल्यवर्जिता । हलसबन्धि हल्य क्लृप्त्यादिद्वारा जनकत्वम्, तद्वर्जिता, कामादिविहीनशुद्धचैतन्यस्वरूपत्वात् । हल्य कपट मित्रेष्वप्यन्यथा स्वान्त करणाविष्कृति तेन वर्जिता । अविद्याविरहिततत्त्वपदलक्ष्यार्थभूतत्वादिति यावत् ॥ ॐ हल्यवर्जितायै नम ॥

हरित्पतिसमाराध्या । हरिता दिशा पतय महेन्द्रादय, तै सम्यक् श्रद्धाभक्तिपूर्वकम् आराधितु योग्या । तद्विपक्षनिर्बर्हणनेष्टप्रापकदैवतत्वादित्यभिसधि ॥ ॐ हरित्पतिसमाराध्यायै नम ॥

हठात्कारहतासुरा । हठात्कारेण अतिशीघ्रतया हता पराभूता असुरा असुरपक्षा महिषादयो यया सा तथा, समबलयो किल लोके सामाद्युपाय बलाबलविचारणा च भवति । प्रबलस्य तु दुर्बलेषु वैरिषु सिंहस्य मेषेष्विव तदयोगेन अतित्वरयाविचारेणैव देवलोकसुखप्रदा—इति नामार्थविचारणायामितरेषु कैमुतिकन्यायेन तत्कारणत्व ध्वनितमिति योजनीयम् ॥ ॐ हठात्कारहतासुरायै नम ॥

हर्षप्रदा हविर्भोक्त्री हार्दसतमसापहा ।

हस्तीसलास्यसतुष्टा हसमन्त्रार्थरूपिणी ॥

हर्षप्रदा । हर्ष आनन्दकारक मुखविकासादिकार्योभेय स्वात्मसभावेनेतरपरिभवनिमित्तचित्तवृत्तिविशेष , कार्यस्य कारणाविनाभावितया तत्प्रदान तद्धेतोरप्याक्षिपतीति सुख-प्रदेत्यर्थ । प्रददातीति प्रदा । अथवा, हर्ष धनयौवनादि सुख पुत्रवन्धुवर्गादिरूपेण परिहृत्य प्रकर्षेण द्यति खण्डयतीति वा तथा ॥ ॐ हर्षप्रदायै नम ॥

हविर्भोक्त्री । 'स ब्रह्मा स शिव स हरि सेन्द्र सो ऽक्षर परम स्वराट्' इति श्रुते वसुरुद्रादित्याकारेण हवींषि यजमानेन अग्नौ प्रक्षिप्तानि स्वाहामुखेन भुङ्क्ते इति तथा । यद्वा हवींषि कालान्तरभाविफलानि अदृष्टात्मना सूक्ष्मरूपाणि तत्तद्यजमानजीवगतानि भूतसूक्ष्माभिधानानि समष्टि व्यष्ट्यात्मनेश्वरजीवोपाधिभूतानि मायाविद्याशब्दितानि मुक्तिपर्यन्तं भुनक्ति पालयतीति वा तथा । अन्यथा ससा रस्थानादित्वाभावेन आदिमशरीराद्युत्पत्तौ अङ्गीक्रियमाणा याम् प्रपञ्चस्याकस्मिकत्वमकृताभ्यागमप्रसङ्गश्च स्यादिति भाव ॥ ॐ हविर्भोक्त्र्यै नम ॥

हार्दसतमसापहा । हृदयावच्छिन्न हार्द , 'यो वेद निहित गुहायाम्' इति श्रुते । अस्मिन् यत्सतमस आवारकत्वात् 'तम आसीत्' इति श्रुत्या च आत्मविषयक तदाश्रयमज्ञानम् अनर्थकरम् अव्याकृताकाशमित्युच्यते, महावाक्यश्रवणजन्यधीवृत्तिप्रतिफलितकारेणापहन्तीति सा तथा । नाह् ब्रह्मास्मि ससारी ब्रह्म नास्ति न भाति च—इत्यज्ञानस्य सोऽह् ब्रह्मास्मि सच्चिदानन्दलक्षण —इति एकाकारवृत्तिबाध्यत्वनियमेन बाधाधिष्ठानम् 'नेह नाना' इति श्रुतिसिद्धब्रह्मरूपेति यावत् ॥ ॐ हार्दसतमसापहायै नमः ॥

हल्लीसलास्यसतुष्टा । हल्लीसै चित्रदण्डै कुमारिकाभि एकतालादियुक्तगीतपूर्वक यल्लास्य नर्तन तस्मिन् सतुष्टा प्रीतिमतीत्यर्थ । 'नारीणा मण्डलीनृत्य बुधा हल्लीसकविदु' इति हारावलीकोशात् मण्डलाकारनृत्यसतुष्टेत्यर्थ ॥ ॐ हल्लीसलास्यसतुष्टायै नमः ॥

हसमन्त्रार्थरूपिणी । हसै परमहसै उपाभ्यो यो मन्त्रप्रणव तस्य शास्त्रबोधिततत्त्वाथरूपिणी । वाक्यलक्ष्यार्थस्वरूपेण ज्ञायमानेत्यथ । अथवा, हसमन्त्र अजपा । हकारसकारौ शोधिततत्त्वपदार्थौ, हकारस्य परोक्षवाचिन सकारस्य तादृशस्य च भागत्यागलक्षणया निष्प्रपञ्चनित्यशुद्धमु

क्तबुद्धसच्चिदानन्दस्वरूपेत्यर्थ ॥ ॐ हसमन्त्रार्थरूपिण्यै  
नमः ॥

हानोपादाननिर्मुक्ता हर्षिणी हरिसोदरी ।

हाहाहूहूमुखस्तुत्या हानिवृद्धिविवर्जिता ॥

हानोपादाननिर्मुक्ता । अनिष्टसाधने हान परित्यागक्रि-  
या । इष्टसाधने उपादान स्वीकारक्रिया । परिजिहीर्षा  
आदित्सा वा । 'अप्राणो ह्यमना शुभ्र ' 'अकायम्' 'अ  
शरीर वाव सन्त न प्रियाप्रिये स्पृशत ' इति बहुश्रुते  
अशरीरस्य ब्रह्मणोऽन्त करणादिधर्माणामसभवात् ताभ्या  
निर्मुक्ता नि सङ्गेत्यर्थ , 'विमुक्तश्च विमुन्यते' इति श्रुते ॥  
ॐ हानोपादाननिर्मुक्तायै नमः ॥

हर्षिणी । 'एष ह्येवानन्दयाति' इति श्रुते हर्षयति  
सतोषयतीति तथा ॥ ॐ हर्षिण्यै नमः ॥

हरिसोदरी । हरिणा कृष्णेन समान एक उदरम् उत् ईषत्  
अर भेदक अवच्छेदकमित्यर्थ । उच्चैरर कूटो वा अत्यल्पमि  
थ्याभूतमायोपाधिकचैतन्यावस्थाविशेषरूपा । 'अपरेयमि  
तस्त्वन्या प्रकृतिं विद्धि मे पराम् । जीवभूता महाबाहो  
ययेद धार्यते जगत्' 'देवात्मशक्तिं स्वगुणैर्निगूढाम्' इत्या

दिस्मृतिश्रुतिभ्याम् ईश्वरस्य रूपभेदवत्त्वावगमादिति मन्त  
व्यम् ॥ ॐ हरिसोदर्यै नमः ॥

हाहाहूहूमुखस्तुत्या । हाहाहूहूनामकगन्धर्वौ मुख्यौ येषा  
जनाना तैस्तथा । तुत्या गुणिनिष्ठगुणाभिधानं स्तुतिः ।  
तदाश्रयत्वेन प्रतिपादनीयेत्यर्थः ॥ ॐ हाहाहूहूमुखस्तु  
त्यायै नमः ॥

हानिवृद्धिविवर्जिता । अवयवोपचयरूपा वृद्धिः , तदप  
चयरूपा हानिः , ताभ्यां वर्जिता , 'न कर्मणा वर्धते नो  
कनीयान्' इति श्रुते । उपलक्षणम् , षड्भावविकाराणां  
शरीरधर्मत्वेन कर्मनिमित्तत्वादीश्वरे तदभावेन निर्विकारे-  
त्यर्थः ॥ ॐ हानिवृद्धिविवर्जितायै नमः ॥

हृद्यङ्गवीनहृदया हरिगोपारूणाशुका ।

लकारारूपा लतापूज्या लयस्थित्युद्भवेश्वरी ॥

हृद्यङ्गवीनहृदया । हृद्यङ्गवीनवत् नवनीतसदृशविरल  
मृद्ववयवपरिणामद्रवत्वसादृश्ययोगिहृदयकूपारसरूपपरिणा  
मवतीति सा तथा । हृदयाभावेऽपि सर्वात्मकतया तद्वत्त्वम् ।  
ईक्षणादिवन्मायापरिणामरूपा दया वा हृदयशब्देन उच्यते ।  
'अवागमना' इति श्रुत्या सर्वनिषेधात् ॥ ॐ हृद्यङ्गवी  
नहृदयायै नमः ॥

हरिगोपारुणाशुका । हरिगोप इन्द्रगोप आर्द्रामघा-  
नक्षत्रे वर्षासूद्भवा अष्टपादा रक्तवर्णा मृद्वङ्गा कीटवि-  
शेषा , तथा शोणमशुक अम्बरम् , स्वार्थे कप्रत्यय ,  
किरणानि वा यस्या सा तथा । ॐ हरिगोपारुणांशु-  
कार्यै नम ॥

लकाराख्या । लकारयुक्त मूलमन्त्र आख्या वाचक  
शब्द यस्या सा तथा । लकारस्य शक्रबीजस्य वार्थ ,  
'सेन्द्र' इति श्रुते । लकारयुक्तस्य मायाबीजस्य वा स्त-  
ब्धमायेत्यर्थ ॥ ॐ लकाराख्यायै नम ॥

लतापूज्या । लवन्ति विनमन्ति अत्यन्तनम्रा भवन्तीति  
लता परमपतिव्रता अरुन्धत्यादय स्त्रिय , ताभि स्थिरमा  
ङ्गस्थाय स्वेष्टदेवतात्वेन पूज्या पूजनीया । तदुक्तम्— 'समा  
राध्य महेशान्नी भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति' इति । अथवा,  
केदारादिगौरीविशेषमूर्ती लताभि उपलक्षण वन्यपूजोपकरणै  
पूज्या अलकृता । शबरी वा वनदुर्गा वेति भाव ॥ ॐ  
लतापूज्यायै नमः ॥

लयस्थित्युद्भवेश्वरी । वैपरीत्येन विशेषण योज्यम् । उद्भ-  
वतीत्युद्भव कार्यात्मना अभिव्यक्ति । स्थिति ज्ञानविषय  
तायोग्यकालावच्छेद अनुभवसत्तावत्त्वमिति यावत् । लय

उत्पन्नकार्यस्य कारणात्मना अवस्थिति वाचारम्भणयोग्यते  
त्यर्थे । तासा क्रियाणाम् अचेतनकार्यत्वायोगेन घटादिकार्ये  
चेतनस्य निमित्ततादर्शनात् एकतटस्थेश्वरत्व वा, गोपुरादौ  
नानाचेतनदर्शनात्तादृशनानेश्वरत्व वेति विशये, 'यतो वा इ  
मानि भूतानि जायन्ते' इति श्रुतौ 'यत' इत्येकवचनपञ्च  
म्या नानात्वतटस्थत्वे, 'जनिकर्तुं प्रकृति' इति सूत्रम् । जनि-  
कर्तुं कार्यस्य प्रकृतिरुपादानमपादानसङ्गा स्यात् । 'अपादाने  
पञ्चमी' इति शासनात् अभिन्ननिमित्तोपादानत्वमीश्वरत्वमिति  
सिद्धान्तः । तटस्थलक्षणमेतत्, ज्ञायमानस्य ब्रह्मण लक्षण  
प्रमाणयो अवश्यवाच्यत्वादित्यभिप्रायः । आदौ लयशब्दो  
पादानेन अनादित्व प्रपञ्चस्य सूचितम् । जगत इति शब्द  
पूरणन नाम योजनीयम् । तथा च जगत लयश्च स्थितिश्च  
उद्भवश्च तेषामीश्वरी । कूटस्थचैतन्यमात्रसच्चिदानन्दाधायक  
तया विवर्तकारणमित्यर्थः ॥ ॐ लयस्थित्युद्भवेश्वर्यै  
नमः ॥

लास्यदर्शनसतुष्टा लाभालाभविवर्जिता ।

लङ्घ्येतराज्ञा लावण्यशालिनी लघुसिद्धिदा ॥

लास्यदर्शनसतुष्टा । यथा राजा सपूर्णकाम प्रयोजनम्

नुद्दिश्यापि मृगयादिलीलाविशेषान् पश्यति बालकादिनृत्य  
 वा, तथा अज्ञानाम् इष्टानिष्टमिश्रोदासीनपदार्थचतुष्टयानु-  
 भवजन्यहर्षशोकादिसभन्मदोद्रेकशोकातिरेकहेतुकविहिता  
 दिकरणाकरणरूपचरणाद्यङ्गपरिस्पन्दरूपनानाविधप्राणिकाय  
 निकायजन्यलास्यदर्शनेन अनुद्दिश्यापि प्रयोजन सतुष्टा त  
 त्तत्कर्मानुसारेण फलप्रापकेश्वरतया सर्वसमानत्वात्, 'नाद-  
 त्ते कस्यचित्पाप न चैव सुकृत विभु ' इति भगवद्वचनात् ।  
 लास्य दवतादिवारवनितादिभि क्रियमाण तालगीतयुक्त  
 नृत्य तद्दर्शनेन सतुष्टा । तदीयफलप्रदानोन्मुखकृपारसवती  
 त्यर्थ ॥ ॐ लास्यदर्शनसतुष्टायै नमः ॥

लाभालाभविवर्जिता । अप्राप्तप्राप्तिर्लाभ , कृतेऽपि यत्ने  
 तदप्राप्तिरलाभ , ताभ्या विवर्जिता, पर्याप्तकामत्वेन नित्यत्  
 प्रत्वात्, 'न मे पार्थास्ति कर्तव्य त्रिषु लोकेषु किञ्चन'  
 इति भगवद्वचनात् ॥ ॐ लाभालाभविवर्जितायै नमः ॥

लङ्घ्येतराज्ञा । इतरेषा जीवभ्रान्तिकल्पिताना गुणमूर्त्या  
 दीनाम् उपासनाविधिरूपा वा, कर्मविधिरूपा वा आज्ञा प्रेरणा  
 लङ्घ्या अविषयीकृता यथा सा तथा । शुद्धचैतन्यस्य विशि  
 ष्टक्रियाद्यात्मकत्वाभावेन विध्यविषयत्वादिति यावत् । अथ  
 वा, किं करीत्वाभावेन इतरेषा देवतानाम् आज्ञा प्रेरणा लङ्घ्या

उपेक्षणीया यया सा तथा, 'सर्वस्याधिपति सर्वस्येशान' इति श्रुते । ईश्वरस्य सर्वनियन्तृत्वेन स्वेतरानियम्यत्वादिति ज्ञातव्यम् ॥ ॐ लङ्घयेतराज्ञायै नमः ॥

लावण्यशालिनी । लावण्यमौन्दर्यं परमानन्दस्वरूपतया अतिशयप्रीतिविषयत्वं शालत इति तथा । सर्वावयवसाधारणसुदरभाववतीति वा ॥ ॐ लावण्यशालिन्यै नमः ॥

लघुसिद्धिदा । लघुना उपायेन सिद्धिं वाञ्छितार्थप्राप्तिं ददातीति तथा, लघुशब्दलक्षणया लघिमासिद्धिपर । तथा च लघिमाद्यष्टैश्वर्यप्रदेति वा । अथवा, लघूना अत्यन्ताल्पज्ञानभाग्यशरीररूपचरणवतामप्यतिनिष्कृष्टानां तिर्यग्गादीनामपि सिद्धिं मुक्तियोग्यताहेतुज्ञानादिसाधनसपत्तिं तत्कार्यमहिमातिशयोक्तेया ददातीति सा तथा ॥ ॐ लघुसिद्धिदायै नमः ॥

लाक्षारससवर्णाभा लक्ष्मणाग्रजपूजिता ।

लभ्येतरा लब्धभक्तिसुलभा लाङ्गलायुधा ॥

लाक्षारससवर्णाभा । लाक्षारसेन लाक्षाद्रवेण समानो वर्णो यस्यामा तथाभूता शोभा कान्तिर्यस्यासा तथा । अतिपाटलविग्रहप्रभेत्यर्थः ॥ ॐ लाक्षारससवर्णाभायै नमः ॥

लक्ष्मणाग्रपूजिता । अग्रे जायेते इत्यग्रजौ रामभरतौ  
 लक्ष्मणस्यापि ज्येष्ठभूतरामाचारानुकारित्वेन चतुर्भिरपि दा-  
 शरथिभि पूजितेत्यर्थ । रामस्य शिवलिङ्गप्रतिष्ठाता— इति  
 नामवत्त्वान्यथानुपपत्त्या शिवदपतिपूजकत्वेन तदितरेषा तद्व-  
 शस्त्रीपुरुषाणा तत्सिद्धिरिति ध्वनितोऽर्थ ॥ ॐ लक्ष्मणाग्र-  
 जपूजितायै नम ॥

लभ्येतरा । लभ्यानि लब्धव्यानि कर्मोपासनाविशेषाणा  
 फलत्वेन साध्यानि भव्यानीत्यर्थ । तेभ्य इतरा विलक्षणा ।  
 'तत्सत्य स आत्मा' 'नित्यो नित्याना चेतनश्चेतनानामेको  
 बहूना यो विद्धाति कामान् । तमात्मस्थम्' इति 'यत्साक्षाद्  
 परोक्षाद्ब्रह्म' इत्यादिभि श्रुतिभि आत्मन नित्यप्राप्तस्वरूप  
 त्वेन प्राप्तप्राप्तव्यरूपतया मोक्षरूपत्वेन चतुर्विधक्रियाफलत्वा-  
 भावादिति मन्तव्यम् । अथवा, इतराणि धर्मार्थकामरूपत्रि-  
 वर्गरूपाणि फलानि लब्धव्यानि प्राप्तव्यानि यस्या सका  
 शादिति सा तथा, उक्तश्रुते ॥ ॐ लभ्येतरायै नम ॥

लब्धभक्तिसुलभा । भक्ति सामान्यविशेषाकारेण द्वि  
 विधा । तत्राद्या आर्तजिह्वास्वर्थार्थिभि यैर्लब्धा तत्तत्फलो  
 देशेन समयविशेषे विच्छिद्य विच्छिद्य प्राप्ता तेषा सुलभा  
 तत्तत्प्रारब्धानुसारेण फलदानोन्मुखस्वात्मरूपतया सनिहित

त्वात् । द्वितीया भक्तिस्तु ब्रह्मसाक्षात्कारवता पुरुषेण येनैकभक्तितया लब्धा, 'एकभक्तिर्विशिष्यते' इति स्मृते, तस्य सुलभा, स्वात्मरूपतया सदा ज्ञायमानत्वात् । 'ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम्' इति गीतासु । अथवा, लब्धा प्राप्ता सत्यपि कण्ठगतचामीकरवत् लब्धभक्तीना सुलभा सुखनानायासेन कष्टेन विना साध्यतया लाभ प्राप्तिर्यस्या सा तथा, 'भक्त्या मामभिजानाति' इति स्मृते ॥ ॐ लब्धभक्तिसुलभायै नमः ॥

लाङ्गलायुधा । शेषरूपतया हलायुधेत्यर्थ, 'अनन्तश्चास्मि नागानाम्' इति श्रीभगवद्वचनात् ॥ ॐ लाङ्गलायुधायै नमः ॥

**लग्नचामरहस्तश्रीशारदापरिवीजिता ।**

**लज्जापदसमाराध्या लपटा लकुलेश्वरी ॥**

लग्नचामरहस्तश्रीशारदापरिवीजिता । लग्नौ करसबद्धौ धृतावित्यर्थ, लग्नौ चामरौ ययोस्तौ तादृशौ हस्तौ ययोस्ते श्रीश्च महालक्ष्मी शारदा च ते ताभ्या वीजिता परिवीजिता । अनादिकालादारभ्य परिचर्यया वीज्यमानेत्यर्थ ॥ ॐ लग्नचामरहस्तश्रीशारदापरिवीजितायै नमः ॥

लज्जापदसमाराध्या । लज्जानाम् अन्त करणधर्मं जुगुप्साहेतु गूहनसाधनम्, उपलक्षण मनोधर्माणाम्, तस्य पदम् आश्रय, 'काम सकल्पा विचिकित्सा श्रद्धाश्रद्धा वृत्तिरधृतिर्हीर्षार्भीरित्येतत्सर्वं मन एव' इति श्रुत । तस्मिन् समा राध्या चिन्तनीयेत्यर्थ 'य आत्मनि तिष्ठन्नन्तरो यमयति' 'गुहाहित गह्वरेष्ठ पुराणम्' 'तमात्मस्थ येऽनुपश्यन्ति धीरा' इत्यादिश्रुतिभ्य । अथवा, लज्जापद जीवचक्रम्, तस्मिन् तदधिष्ठानानन्दाभिव्यक्तिहेतुतया बहिर्यागक्रमेण पूजनीयेत्यर्थ ॥ ॐ लज्जापदसमाराध्यायै नमः ॥

लपटा । लमिति पृथ्वीवाचकबीजेन तदुपलक्षित जगल्लक्ष्यते, पटशब्दन आवारकत्वधर्मवत्तया अविद्या लक्ष्यते, लम जगत पट कारणीभूता अविद्या यस्या सा तथा, 'मायिन तु महेश्वरम्' 'य एको जालवान्' इति श्रुते । 'अज्ञानेनावृत ज्ञानम्' इति स्मृतेश्च । अथवा, लम्पटो नाम तन्द्री आलस्यम्, कर्मोपासनाबाहुल्येऽपि प्रतिबन्धकभूयस्त्वे शीघ्रतया परमेश्वरस्य फलदानोन्मुखताया राजादिवशिर-विलम्बितसेवाफलदानवैमुख्ये तद्वत्तोपचारात्, लम्पटो यस्या सा तथा । अथवा, लम्पटादीनामन्त करणधर्माणामध्यास-वशेन तदवच्छिन्ने चैतन्ये सत्त्वरजस्तम कार्याणामुपलब्धे

स्तद्वत्त्व वा ॥ ॐ लपटायै नमः ॥

लकुलेश्वरी । कु प्रथिव्युपलक्षितजगत् लीयते अस्मिन्निति कुलम्, मायोपाधिकचैतन्यम्, प्रलयाधिष्ठानम् । 'यत्प्रयन्त्यभिमविशन्ति' इति श्रुते । लीयमान कुल लकुल निरुपाधिकमित्यर्थः । तच्च सा ईश्वरी च सा तथा । अथवा, लकुल स्थानविशेष स्वाधिष्ठान मणिपूरक वा, तस्येश्वरी, विष्णुरुद्रास्मिकेत्यथ, भूतसृष्टिश्रुतौ प्रथिव्या उदके तस्य तेजसि तस्य परमात्मनि लयश्रवणात् । 'सदायतना सत्प्रतिष्ठा' इति । तस्येश्वरी विभूतिविशेषो वा ॥ ॐ लकुलेश्वर्यै नमः ॥

लब्धमाना लब्धरसा लब्धसप्तसमुन्नति ।

ह्रींकारिणी च ह्रींकारी ह्रींमध्या ह्रींशिखामणि ॥

लब्धमाना । सर्वे प्राणिभि लब्ध मान अध्यस्ताहकार , आभमानात्मकस्तद्वदहकार प्रकीर्त्यते' इति स्मरणात् । अध्यासेनाहकाराधिष्ठानेत्यथ । अथवा, 'मान पूजायाम्' इति स्मरणात् यैर्यै प्राणिभि विद्यैश्वर्यकुलसौन्दर्यातिशयादिवशात् पूजा लभ्यते सुखहेतु सा तदन्तर्यामिणा पूर्वमेव लब्धा, पूजाविजन्योपकारस्य सुखादे स्वस्वरूपतया लब्ध-

त्वात् । यद्वा मान परिमाण अणुमहद्दीर्घह्रस्वभेदेन प्रसिद्धम् । ‘म वा एष महानज आत्मा महान् प्रभुर्वै पुरुष ’ ‘अणोरणीयान् महता महीयान् ’ इत्यादिवेदवाक्यैर्जलसूर्यादिवद्गुणाधिधर्माणामुपहिते गजस्तम्भमस्कुणसर्पादौ प्रतीयमानत्वात्, लब्ध मान परिमाण उपहिततया जगत यया सा तथा ॥ ॐ लब्धमानायै नम ॥

लब्धरसा । ‘रसो वै स ’ इति श्रुते रसवत् रस्यते सबध्यत इति अत्यन्तप्रीतिविषय आनन्द, स स्वस्वरूपत्वन लब्धो यया सा तथा । शृङ्गाररसो वा, तद्व्यञ्जकमङ्गलाभरणपुष्पालकारवत्त्वादिति भाव । शुद्धसत्त्वप्रधानमायोपाधिकतया, ‘रस्या स्निग्धा स्थिरा हृद्या आहारासात्त्विकप्रिया ’ इति गीतावचनात् नैवेद्यादौ कट्वाम्ललवणादीना देवादिविषये निषेधाच्च प्रीतिविषयत्वेन मधुररसो लब्धो ययेति वा तथा ॥ ॐ लब्धरसायै नम ॥

लब्धसपत्समुन्नति । लब्धा स्वस्वरूपतया स्वत सिद्धा या सपद् सत्यकामत्वादय सच्चिदानन्दादयो वा ताभि समुन्नति सर्वोत्कृष्टता यस्या सेति तथा । ब्रह्मण मायामात्रापाधिना अभिव्यञ्ज्यमाना गुणा कर्मानुद्भूतत्वा

दनाकस्मिका सन्त सर्वोत्कृष्टभाव ब्रह्मण ज्ञापयन्ति ।  
 'तमीश्वराणा परम महेश्वर त देवताना परम च दैवत ।  
 पतिं पतीना परम पुरस्ताद्विदाम देव भुवनेशमीड्यम्'  
 'सत्यकाम सत्यसकरूप' 'एष सर्वेश्वर एष सर्वज्ञ एषो  
 ऽन्तर्याम्येष योनि सर्वस्य' इति 'गतिर्भर्ता प्रभु साक्षी'  
 इत्यादिश्रुतिस्मृतिशतेभ्य 'एष नित्यो महिमा ब्राह्मणस्य'  
 इति प्रसिद्धनित्योत्कर्षवत्त्व ब्रह्मस्वरूपमेवेति नात्र विचारणीय  
 किञ्चिदस्तीत्यभिप्राय ॥ ॐ लब्धसपत्समुन्नत्यै नमः ॥

ह्रींकारिणी । ह्रींकार द्वितीयखण्डसमाप्त्यवयवतया वा  
 च्यवाचकसम्बन्धन अस्या अस्तीति तथा ॥ ॐ ह्रींका  
 रिण्यै नमः ॥

ह्रींकाराद्या । अत्र ह्रींकारशब्देन तत्कार्यभूता वेदा ,  
 तेषामध्यर्थतया कारणतया वा आद्या आदौ भवा पूर्वभा  
 वीत्यर्थ । शब्दस्य अर्थविषयत्वेन प्रवृत्ते शक्तिप्रहादौ  
 काव्यादिकृतौ च अर्थज्ञानपूर्वकशब्दप्रयोगदर्शनादर्थस्य पूर्व  
 भावित्वमुक्तमिति भाव ॥ ॐ ह्रींकाराद्यायै नमः ॥

ह्रींमध्या । अस्य बीजस्य जगदभिन्नानिमित्तोपादानभूत  
 मायाविशिष्टचैतन्यवाचकतया तत्प्रतीकत्वेन तन्निष्ठयावद्गुण  
 वत्त्व तदुपासनातिशयमहिम्नाभिव्यज्यते । अन्यथा मन्त्रपुर

अर्थोस्त्रिंशदसिद्धयभावप्रसङ्ग स्यात् । अन्यवहितपूर्वनाम्नान-  
भिव्यक्तस्वरूपस्यापि शब्दजालस्य एतद्वीजमात्रात्मनैवाकु-  
रितबीजार्थवत्तया पूर्वभावित्वमुक्तम् । इदानीमभिव्यक्ता  
त्मकस्वार्थकतया विवर्तवाद्माश्रित्य वाचारम्भणाकारेण ना  
मरूपद्वयवत्त्वमुच्यते । ङीकारबीजार्थे तेन शब्देन लक्ष्यते ।  
मध्ये व्यवहारकाले ङी यस्या सा तथा । घटादिषु वस्तुषु  
सच्चिदानन्दप्रतीत्या व्यवहारकालेऽपि प्रपञ्चकारण ब्रह्मानु-  
स्यूततया भासमान जगत्कारणमिति सिद्धान्त । अनेनाचे-  
तनपरिणामारम्भादिवादा निष्प्रमाणतया युक्त्याद्याभासक  
त्वेन निरस्ता वेदितव्या ॥ ॐ ङीमध्यायै नम ॥

ङीशिखामणि । लाके यथा चूडामणि सर्वाङ्गरचिता  
भरणापक्षया तद्विजातीयप्रकाशसत्ताद्याश्रयवान् उन्तमाङ्ग-  
स्थानविशेषे स्थापित महदैश्वर्यादि तद्वत् पुरुषस्य ज्ञाप  
यति, तथा सर्वशब्दजालतद्वाच्यार्थभूतचिज्जडसबन्धरूप-  
प्रपञ्चवाचकातिसूक्ष्मङीवर्णात्मकश्रीविद्याराजबीजस्य सत्य  
ज्ञानानन्दतात्मकलक्ष्यार्थभूता सती ङीबीजजापकाना सर्वार्थ  
प्रदानेन पारमैश्वर्यं व्यञ्जयतीति गुणयोगकृतनाभेदम् ।  
तथा च ङीम शिखामणि परमतात्पर्येण ज्ञापयतीत्यर्थ ॥  
ॐ ङीशिखामणये नम ॥

ह्रींकारकुण्डाग्निशिखा ह्रींकारशशिचन्द्रिका ।  
ह्रींकारभास्कररुचिह्रींकाराम्भोदचञ्चला ॥

ह्रींकारकुण्डाग्निशिखा । ह्रींकार एव कुण्ड वाच्यवाचकसबन्धेन परब्रह्मावच्छेदकतया आहवनीयादिसदृशम्, तस्याग्निशिखा, 'उद्दीप्तेऽग्नौ जुहोति'—इति प्रमाणेन 'आहवनीये जुहोति'—इति विधिवाक्यावगतहोमाधारताया केवलाहवनीयस्यायोग्यतया साग्निज्वाला ह्यहोमाधारताया ज्ञायमानायामदृष्टद्वारा स्वर्गसबन्धेन स्वार्थकतया तज्ज्ञापकवेदवाक्यस्यापि पुरुषार्थसबन्धित्वमाहवनीयनिष्ठहोमाधिकरणक्षीप्ताग्निज्वालास्वाधारभूतकुण्डसार्थक्यसपादकेवाभाति । तथा स्ववाचकबीजस्यापि 'मन्त्रैरुपासीत' इति विधिगतदेवतोपामनकरणानां मन्त्राणामपि स्ववाचकतया सार्थक्यसपादनात्तथोच्यते ॥ ॐ ह्रींकारकुण्डाग्निशिखायै नमः ॥

ह्रींकारशशिचन्द्रिका । ह्रींकार एव शशी चन्द्र तस्य स्वरूपाभेदभूतप्रकाशचैतन्य चन्द्रिकापदेनोपमीयते । यथा चन्द्रस्वरूपभूतामृतप्रसारभूता ज्योत्स्ना देवादिसर्वलोकानां सजीवकतयोपकरोति, तथा दृढतरभक्तिपरवशपुरुषधैरैया

दीना ह्रींकारवान्यार्थतया तदभिन्नत्वेऽपि जगद्विवर्तकारण  
तया सच्चिदानन्दाधायकत्वेन सजीवयतीति भाव ॥ ॐ  
ह्रींकारशशिचन्द्रिकायै नमः ॥

ह्रींकारभास्कररुचि । भास कान्ती करोति प्रसारयति  
लाकोपकारायेति तथा सूर्य , तस्य रुचि प्रचण्डभानु ।  
यथा लाके सूर्य वर्षास्वतिगाढतरस्त्रवदुदकधारासव्याप्तदि  
गन्तरासु दिवा विद्यमानोऽपि सूर्य साक्षादयमिति चाक्षुष  
ज्ञानगाचरो न भवति, तदभावे शिष्टाना भोजनादिसजीव  
कव्यवहाराभावन तदुपायासिद्धयाप्रसन्नमनासि भवन्ति,  
तथा ज्ञानमार्गानधिकारिणा मोक्षमार्गोपायभूतावितदेवता  
रूपह्रींकाराणा जनाना बहुतरपुण्यमहिम्ना महावातनेव मेघा  
वलौ दूरीकृताया चण्डभानुरिव सुखसाधन गुरुकृपापाङ्गाव  
लोकनरूपदीक्षावशेन प्रतिबन्धकदुरितापगमे परदेवतारूप  
ह्रींकार पुरश्चर्यया साक्षाद्वाच्यार्थापरोक्षज्ञानहेतुर्भवति ।  
चिरकालनैरन्तर्यभावनाप्रकर्षेण तस्मिन्नभिमुखे मति तल्ल  
क्ष्यार्थरूपपरमानन्दचित्कला स्वयमेवाभिव्यक्ता सत्यानन्दा  
नुभवामृतेन सुखयतीति तथोच्यते ॥ ॐ ह्रींकारभास्कर  
रुचये नमः ॥

ह्रींकाराम्भोदचञ्चला । अम्भासि अमृतानि ददतीत्य

म्भादा , ह्रींकारोऽपि कामवर्षत्वेन तैरूपमीयत । तेषु चञ्च  
ला विद्युल्लता विद्यमाना तदभिन्नप्रकाशमाना सती वर्षोद  
कद्वारा सस्याद्युत्पादकत्व यथा व्यनक्ति तथा ह्रींकारवाच्य  
तथा तदभिन्नापि तत्स्वरूपविचारणाया शुद्धलक्ष्यार्थस्वरूपा  
सत्यपि अनिर्वचनीयस्ववाचकमन्त्रप्रकाशितदेवतात्वेन स्वा  
भीष्टपुरुषार्थप्राप्तिहेतुभूतेत्यभिसधि ॥ ॐ ह्रींकाराम्भोद  
चञ्चलायै नम ॥

ह्रींकारकन्दाङ्कुरिका ह्रींकारैकपरायणा ।

ह्रींकारदीर्घिकाहसी ह्रींकारोद्यानकेकिनी ॥

ह्रींकारकन्दाङ्कुरिका । ह्रींकार एव कन्दम् दृढतरबीज  
भाव तस्य अङ्कुरिका आदिप्रसव नूतनाभिव्यक्तिरित्यर्थ ।  
यथा लोके अङ्कुरादिक कन्दादिनिष्ठोत्पादकशक्तिमनभिभू  
यैव स्वय स्फुन्धशाखापत्रपुष्पफलाद्यात्मना यथा विवर्तमा-  
न तत्सामर्थ्यप्रकटनकारण भवति, तथा ह्रींकारम्य वेदैकदे-  
शत्वेन इतरप्रमाणानपेक्षतया स्ववान्यार्थज्ञापनन स्वत प्रा  
माण्ये स्थितऽपि तज्जन्यज्ञानविषयतावच्छेदकधमरूपनाना  
प्रकारजगत्परिणामहेतुत्वसाधकाघटितघटनापटीयसीमायोपा-  
धिकत्वेन तदर्थद्वयरूपा सती तन्मात्रप्रमाणवेद्येत्यर्थ ॥ ॐ

ह्रींकारकन्दाङ्कुरिकायै नम ॥

ह्रींकारैकपरायणा । ह्रींकार एव एक अनितरसाधारण चतुर्विधपुरुषार्थसाधकतया परम् अयन ज्ञापक प्रमाण यस्या सा तथा । अस्य बीजस्य वाच्यार्थो माया, सा निर-  
धिष्ठाना न सिध्यतीति तदाश्रयत्वविषयत्वाभ्या तद्रहित तेन ज्ञाप्यत इति भाव ॥ ॐ ह्रींकारैकपरायणायै नम ॥

ह्रींकारदीर्घिकाहसी । ह्रींकार एव दीर्घिका राजोद्यान वनक्रीडावापी । ससारकाननसञ्चारिलोकविश्रान्तिकारण त्वेन ह्रींकार तयोपमीयते, 'आराममस्य पश्यन्ति न त पश्यति कश्चन' इति श्रुते । आ समन्ताद्रमत्यस्मिन् इत्या राम अथवा जगत् । तत्रोपासनादिना परमानन्दप्रापक-  
तया वा ह्रींकार उपमीयते । तस्मिन् हसी स्त्रीहस । यथा लोके सारासारविवेकिहस्या आधारसुवर्णकमलादिमती वापि का महाराजसबन्धिनी विज्ञाप्यते, तद्वद्वान्यार्थरूपतया प्रका शमाना सती स्वसबन्धिबीजस्य सुखोत्पादकत्वमोक्षहेतुत्व द्योतयतीत्यभिप्राय ॥ ॐ ह्रींकारदीर्घिकाहस्यै नम ॥

ह्रींकाराद्यानकेकिनी । ह्रींकार एव उद्यानवत् फलानुभा वकत्वात् तथोन्यते तस्य केकिनी मयूरी । यथा लोके

बहुषु पक्षिषु आरण्यकेषु सत्स्वपि तस्या रूपध्वनिभ्या  
 सुखतया दर्शनश्रवणादिजन्यप्रमोदसाधकतया उद्यानालक  
 रिष्णुत्वम् , तथा ह्रींकाररूपदेवताध्वने सच्चिदानन्दरूपत  
 द्वाक्यार्थस्य च परमपुरुषार्थसाधकत्वेन अविशिष्टत्वेऽपि ब्र  
 ह्मविष्णुरुद्रादिमूर्तिषु उद्यानतरुवल्लिकक्षगुल्मादिवदुत्तमनीच  
 देवतिर्यङ्मनुष्यादिषु च मयूरीव स्वेच्छया सर्वव्यापकत्वेन  
 तदात्मरूपतया शरीरन्द्रियप्राणाद्याधारपरमप्रेमास्पदपरमा  
 नन्दरूपप्रत्यङ्गोचराहवृत्तिव्याप्यतयैतद्वीजप्रकाश्या भवती  
 त्यर्थ ॥ ॐ ह्रींकारोद्यानकेकिन्यै नमः ॥

ह्रींकारारण्यहरिणी ह्रींकारावालवल्लरी ।

ह्रींकारपञ्जरशुकी ह्रींकाराङ्गणदीपिका ॥

ह्रींकारारण्यहरिणी । ह्रींकारवान्यार्थैकदेशभूतमायावि  
 द्यात्कार्याणा बन्धरूपतया गहने व्याघ्रादीनामिव भयहे  
 तूता सद्भावेन दुष्प्रवेशत्वरूपधर्मसाम्येन ह्रींकारस्य अरण्यो  
 पमितत्वम् । तथा च अरण्यमिव ह्रींकार इति सर्वत्रोपमा  
 नोत्तरपदसमास । तत्रैव सति यथारण्यगतपुरुषस्य शीघ्र  
 दृष्टिपथ गता हरिणी एणी व्याघ्राद्यभावनिश्रयेन तदधिगम  
 फलप्राप्तिसाधनतामवगमयति धीरपुरुषस्य, तथा निरन्तरभ

क्तिभजनपरप्राणिलोकश्च उपासनापरिपाकमहिम्ना अपरोक्षी-  
कृताज्ञाननिवृत्तिपूर्वक भयापकरणेनानन्द प्रापयतीति तयो  
पमितेति भाव । 'तमेव विदित्वातिमृत्युमेति' इति श्रुत ॥

ॐ ह्रींकारारण्यहरिण्यै नम ॥

ह्रींकारावालवल्लरी । ह्रींकारमन्त्रवाचकतानिरूपितवा  
च्यतानामकसबन्धावच्छिन्नपरदेवतास्वरूपत्वन तदुपासना  
विषयफलदानसमर्था सती आवालमात्रप्ररोहद्विवृद्धवल्लर्यो  
पमीयते । तथा च तत्सबन्धितया ह्रींकार जपादिना आ  
वाल इव सर्वदा सरक्षणीय इति तात्पर्यार्थं परिनिष्पन्न  
इति यावत् ॥ ॐ ह्रींकारावालवल्लर्यै नम ॥

ह्रींकारपञ्जरशुकी । मन्दाधिकारिणामप्युपासनाकारण  
साधारणपार्वतीप्रतीकतया ह्रींकारस्य बालकादिलालनविषय  
त्वधर्मपुरस्कारण पञ्जरोपमा । तथा च तत्रत्यशुकीव सला  
पादिना मनुष्यादिवित्तरञ्जिनी । एव तत्तददृष्टानुसारेण फ-  
लदात्री सती तयोपमितेति द्रष्टव्यम् । ह्रींकार पञ्जरमिव  
स्य शुकी तत्सार्थक्यकारिणीत्यभिप्राय ॥ ॐ ह्रींकारप  
ञ्जरशुक्यै नमः ॥

ह्रींकाराङ्गणदीपिका । अङ्गणवत् सर्वसाधारणविश्रान्ति  
स्थानतया ह्रींकारस्य तदुपमा तस्य दीपिका । यथाङ्गणारो

पितृदीप बाह्याभ्यन्तरवस्तुजात प्रकाशयन तत्रत्यलोकाना  
मन्धकारादिनिवर्तनपूर्वकमभीष्टव्यवहारहेतुतया सर्वान् श्ला  
घयति स्वयमपि तै सरक्ष्यते, तथा ह्रींकारबीजार्थश्रवणम  
नननिदिध्यासननिरन्तराभ्यासादपरोक्षीकृतस्वयप्रकाशानन्द  
रूपा सती स्वसेवकान् सर्वोत्कर्षयतीति तदुपमिता सती  
तथोच्यते ॥ ॐ ह्रींकाराङ्गणदीपिकायै नम ॥

ह्रींकारकन्दरासिंही ह्रींकाराम्भोजभृङ्गिका ।

ह्रींकारसुमनोमाध्वी ह्रींकारतरुमञ्जरी ॥

ह्रींकारकन्दरासिंही । पर्वतशिखाप्रवर्तिगुहा कन्दरा द-  
रीत्यर्थ । वेदमौलिपठितह्रींकारस्य ग्राम्यविषयलिप्सुप्राणि  
प्रवेशयोग्यताविकलतया कन्दरापमा । तत्र यथा सिंही  
स्वेतरक्षुद्रमृगप्रवेशभयहेतुसटादिस्वव्याप्यचिह्नानुमिता तस्या  
स्वाश्रयमाहता धीरस्य तस्परिसरनखनिर्घातमुक्ताफलादि  
प्राप्तिं च नयति, तथा मन्दभक्तितन्द्रीबुभुक्षादिकलुषित-  
परिच्छिन्नाभिमानदेवतान्तरप्रतिपादकबीजतया स्वदेवतैक  
भाव कामितार्थं च प्रापयतीति सिंध्युपमिता सती तथो  
च्यते ॥ ॐ ह्रींकारकन्दरासिंही नम ॥

ह्रींकाराम्भोजभृङ्गिका । ह्रींकारस्य अष्टैश्वर्यात्मकपुरुषा

र्थसाधकनानाशक्तिमत्तया नानाप्रकारवर्णान्तरघटितत्वेन प-  
 रागपरिमल्लादिमत्कमलोपमितत्वमिति याजनीयम् । कमले  
 यथा मधुमात्रसारग्राहिणी भृङ्गी रमते सर्वपुष्परसमधुपा-  
 नस्त्राभाष्येन सर्वसमापि मध्वाधिक्यविविदिषथा प्रभूतम-  
 धुवत्त्वेन च तस्मिन्नेव विशिष्यासक्तिमती, तथा सर्वमन्त्र-  
 बीजवाच्यदेवतात्मना सर्वानुगतापि ह्रींकारस्य विशिष्टगुण-  
 वत्त्वेन सर्वोपादानसगुणब्रह्मप्रतिपादकतया तदीयस्वरूपत-  
 टस्थलक्षणवत्त्वेन तदभिन्नस्वरूपतया सर्वशब्दजालप्रकृति-  
 त्वेन च रूढ्या लक्षणया वा तत्सबन्धिनी सती तदुपास-  
 काना तदधिष्ठानतया च तैलक्ष्यत इति श्रुद्ग्युपमया व-  
 णितेति तात्पर्यम् ॥ ॐ ह्रींकाराम्भोजभृङ्गिकायै नम ॥

ह्रींकारसुमनोमाध्वी । ह्रींकारस्य वाञ्छितफलप्रदानसा-  
 धकतया सुमन सादृश्यम् । अथवा, पुष्पाणि व्यवहारममये  
 बहुसावधानतया व्यवहर्तव्यानि परमभार्दवाधिकरणत्वेन बहु-  
 मान्यत्वात्, तथा ह्रींकारोऽप्युपासनवेलाया परब्रह्मवाचकत्वेन  
 प्रयत्नपूर्वकमेकाग्रमनसा देवताभिन्नत्वेन ध्यातव्य इति निय-  
 मसपादनार्थं पुष्पोपममिति विभावनीयम् । तथा च वा-  
 य्वादिना शुष्काणि पुष्पाणि निर्मधुत्वेन फलान्यजनयित्वा  
 परिपतन्ति फलजनकशक्तेरभावेन, तदितराणि तु तद्वत्त्वेन

तज्जनकानि लोके दृष्टानि , पुष्परसश्च पृथिवीकारणभूतादक  
तन्मात्रस्वरूपमधुररसात्मकत्वात् पुष्पाणां फलजनकशक्तिज्ञा  
पको भवति , तथा ह्रींकारस्यापि सर्वजनकताशक्त्याधायकत  
दधिष्ठानसञ्चिदानन्दपरब्रह्मस्वरूपा सती तन्मन्त्रप्राप्त्या  
यथोक्तफलहेतुतया तदर्थरूपेण तद्बुद्धिर्भवतीति माध्वीसमा-  
नधर्मवत्त्वमस्या उपपद्यत इति विवेचनीयमिति यावत् ॥  
ॐ ह्रींकारसुमनोमाध्व्यै नम ॥

ह्रींकारतरुमञ्जरी । फलार्थिन स्वारूढजनान् पतनादि  
भ्य प्रतिबन्धकेभ्यस्तारयति पार प्रापयति फललाभेन स  
तोषयतीति तरु । ह्रींकारश्च कल्पादितरुर्दृष्टान्तीकृत ।  
प्रेक्षावता सवादिप्रवृत्तिजनकत्वेन शाखोपशाखाग्रगता पुष्प  
मञ्जरी फलकारणयोग्यता ज्ञापयतीव पुरुषार्थार्थिना अस  
शयप्रवर्तकत्वेन प्रत्यक्स्वरूपा सती गुरुपदिष्टमन्त्रदेवतात्म  
कतया मन्त्रोपासनायामभिमुखीकरणेन पुरुषार्थान् प्राप  
यतीति मञ्जरीसादृश्य प्राप्त परदेवताया इति विवेचनी  
यम् ॥ ॐ ह्रींकारतरुमञ्जर्यै नम ॥

सकारारूपा ममरसा सकलागमसस्तुता ।

सर्ववेदान्ततात्पर्यभूमि. सदसदाश्रया ॥

सकारारूपा । सकारयुक्ता श्रीविद्यानामिका आरूपा

वाचकशब्द यस्या सा तथा ॥ ॐ सकाराख्यायै नम ॥

समरसा । सम एक रस मधुरादिरसवद्बुडपिण्डादा  
वेकरूपेण कार्ये व्यवस्थितेत्यर्थ । अथवा, ससारदशाया  
सर्वज्ञत्वकिञ्चिद्भ्रत्वादिविशेषणभेदेन भिन्नरसवत् भिन्नस्वभा  
ववत् प्रतीयमानयोरीश्वरजीवयोर्वेदान्तश्रवणादिना जन्या-  
खण्डाकारवृत्तिव्याप्त्या अह ब्रह्मास्मि- इत्यभेदानुभवदशा-  
यामेकरूपतया साक्षात्क्रियते इति सा तथोच्यते, 'रसो वै  
स' इति श्रुते, रसशब्दार्थे परब्रह्म सम अभिन्न यस्या  
सा तथा । तैत्तिरीयोपनिषत्प्रतिपाद्येत्यर्थ ॥ ॐ समरसायै  
नम ॥

सकलागमसस्तुता । आ समन्तात् गमयन्तीति आगमा ,  
सकलपदार्थगोचरसविकल्पकप्रमाजनऋवेदा इत्यर्थ । सकलै  
रन्यूनानतिरेकेणेतिहासपुराणसहितयावदङ्गोपाङ्गरहस्यादियो  
गित्व सकलशब्दार्थ । तै सस्तुता सम्यक् नात पर किञ्चि  
दस्तीति निश्चयपूर्वकं स्तुता गुणिनिष्ठगुणाभिधानविषयतया  
तदुपजीवकेत्यर्थ । सर्वार्थप्रकाशकवेदाना सर्वज्ञत्वेनैदपर्येण  
तदीयस्तुतिविषयतया शुद्धचैतन्यात्मकतया मोक्षकारणीभू  
तज्ञानस्वरूपत्वेन जिज्ञास्येति ध्वनितोऽर्थ ॥ ॐ सकला  
गमसस्तुतायै नम ॥

सर्ववेदान्ततात्पर्यभूमि । वेदानामन्त अवसान तत्त्वम  
स्यादिमहावाक्यानि, तेषा तात्पर्य समन्वय सामानाधिक  
रण्यमित्यर्थ । तस्य भूमि विषय ज्ञाप्यमिति यावत् ।  
‘उपक्रमापसहारावभ्यासाऽपूर्वता फलम् । अर्थवादोपपत्ति च  
लिङ्ग तात्पर्यनिर्णये’ इति वचनोक्ततात्पर्यनिर्णायकप्रमा  
णबलेनातीन्द्रियधर्मादिगोचरवाक्यवत् सर्वेषा वेदान्ता  
नामुपासनाज्ञानविधिं विनाकर्मशेषतया अज्ञातज्ञापकत्वेन  
शसनादेव शास्त्रशब्दवाक्यानामद्वैते ब्रह्मणि गतिसामान्येन  
कर्मोपासनाकाण्डद्वयार्थोपकार्यत्वेन मोक्षहेतुज्ञानजनकत्वेन  
पर्यवसानमिति तात्पर्यविषयता अखण्डचैतन्यस्येति सि  
द्धान्तार्थ इत्यभिसधि । ‘सामानाधिकरण्य च विशेषण  
विशेष्यता । लक्ष्यलक्षणभावश्च पदार्थप्रत्यगात्मनाम्’ इति  
न्यायेन सबन्धत्रयेण अखण्डार्थं वेदान्ता बोधयन्तीति  
‘तत्तु समन्वयात्’ इत्यधिकरणे प्रतिष्ठापितमित्यलमतिवि  
स्तरेण ॥ ॐ सर्ववेदान्ततात्पर्यभूमये नमः ॥

सदसदाश्रया । अपरोक्षतया सन्निति प्रतीतिविषयतया  
व्यवह्रियमाण सत्कार्यं रूपादिवत्तया व्यावहारिकसत्ताश्रय  
पृथिव्यप्तेजोभूतत्रय सदित्युच्यते । असत् सद्भिन्नतया परो  
क्षज्ञानगोचर वाय्वाकाशादि तत्कार्यं च रूपादिभिन्नगुणाश्र

यमुच्यत इत्यर्थं । तयोराश्रया उपादानत्वेन तदधिष्ठानभूते  
त्यर्थं । आरोपितस्याधिष्ठानमत्तातिरिक्तसत्ताशून्यतया सत्ता  
स्फूर्तिप्रदत्वेन सर्वदा तदनुस्यूतेति ध्येयम् ॥ ॐ सदसदा  
श्रयायै नमः ॥

सकला सच्चिदानन्दा साध्या सद्गतिदायिनी ।  
सनकादिमुनिध्येया सदाशिवकुटुम्बिनी ॥

सकला । आरोपितकलाभि उपासनार्थं कल्पिताभि  
जाबालिना सत्यकाम प्रत्युक्तषोडशकलायुक्तपुरुषोपासनप्रति  
पादकच्छान्दोग्यवचनरीत्या कलाशब्दितावयवै सह वर्तते  
इति सा तथा । चतु षष्टिचन्द्रकलाभ्या वा सहिता ।  
अथवा, कलाशब्द सुखादिकान्तिवचन तथा सहितेति  
वा ॥ ॐ सकलायै नमः ॥

सच्चिदानन्दा । सच्चासौ चिच्च सच्चित् सच्चिञ्चासौ आन-  
न्दश्च, कालत्रयाबाध्यत्व सत्त्वम्, स्वेतरप्रकाशाप्रकाश्यत्व  
चिच्चत्वम्, परमप्रेमास्पदत्वमानन्दत्वम्, 'सत्य ज्ञानमनन्तम्'  
'विज्ञानमानन्दम्' 'सदेव सोम्येदमग्र आसीत्' 'प्रज्ञा  
प्रतिष्ठा प्रज्ञान ब्रह्म' 'आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्' 'आ  
नन्द ब्रह्मणो विद्वाञ्ज विभेति कुतश्चन' इत्यादिश्रुतिभ्य ।

ते स्वरूप यस्या सा तथोक्ता । वेदान्तशास्त्रोक्तब्रह्मस्वरूप  
लक्षणलक्षितेत्यर्थ ॥ ॐ सच्चिदानन्दायै नमः ॥

साध्या । कर्मोपासनादिभि महावाक्यश्रवणजन्यब्रह्म  
विद्यात्वेन साधनचतुष्टयसपन्नाधिकारिणा अपरोक्षतया  
साधितु प्राप्तुमहा, फलस्वरूपत्वादित्यर्थ । साध्वीति वा  
पाठ साधो स्त्री, सत्त्वगुणसपन्नत्वात् साधु , सकल-  
विद्यापारगत्वे सति सदाचारसपन्न दैवीसपत्तिमानित्य  
थ । तदेकनिष्ठा परमपतिव्रता सती स्त्रीणा पातिव्रत्यसप्रदा  
यप्रवर्तकेति यावत् ॥ ॐ साध्यायै नमः ॥

सद्गतिदायिनी । समीचीना पुनरावृत्तिरहिता सुखमात्र  
रूपा गति , गम्यते ज्ञायते प्राप्यते इति वा गति । यत्  
ज्ञायते तदेव गति , तदन्यस्याज्ञातत्वात् गतित्वानुपपत्ते ।  
ज्ञाते फले इच्छया तत्साधनेषु पुरुष प्रवर्तते, न त्व  
ज्ञातफलसाधने— इत्यन्वयव्यतिरेकाभ्याम्, ' ब्रह्मविदाप्राप्ति  
परम' ' ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति' ' ये पूर्व देवा ऋषयश्च  
तद्विदु ते तन्मया अमृता वै बभूवु ' इत्यादिश्रुत्या च  
परदेवतास्वरूपमेव मुक्तिस्वरूपतया सद्गति । तदावार-  
काज्ञानाभिभवेन स्वरूपानन्दमभिव्यञ्जयतीति दायिनी ।  
अभेदेऽपि गतिदानयो कर्मकर्तृप्रयाग उपपद्यते । ' तदा

त्मानं स्वयमकुरुत' इत्यान्विदित्यथ । सती वा सत्त्वगुणयुक्ता देवयानादिगतिं वा ददातीति सा तथा ॥ ॐ सहस्रं तिदायिन्यै नम ॥

सनकादिमुनिध्येया । मननशीला मुनयः, मननशब्दनलक्षणया तत्साक्षात्कारवन्त इत्यथ, ब्रह्मण मानसिकपुत्रा ज्ञानवैराग्यादिबहुला मोक्षमागप्रवर्तका, सनका आदि येषां त मुनयः सनन्दनसनातनसनत्कुमारप्रमुखा निरैषणा निश्चिन्ता, तैर्ध्येया अत्यादरेण स्वात्माभद्वाननसर्वदा विषयीकृतेत्यर्थः, 'त्व वा अहमस्मि भगवो देवत अह वै त्वमसि' 'क्षत्रज्ञ चापि मा विद्धि' 'आत्मानं चेद्विजानीयादहमस्मीति पूरुष' 'अथ योऽन्या देवतामुपास्तऽन्याऽसावन्याऽहमस्मीति न स वद यथा पशु' 'सत्यो स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति' इत्यादिश्रुतिस्मृतिशतेभ्यः ॥ ॐ सनकादिमुनिध्येयायै नम ॥

सदाशिवकुटुम्बिनी । सदाशिव कुटुम्बम् अस्या अस्तीति तथा ॥ ॐ सदाशिवकुटुम्बिन्यै नम ॥

सकलाधिष्ठानरूपा सत्यरूपा समाकृतिः ।

सर्वप्रपञ्चनिर्मात्री समानाधिकवर्जिता ॥

सकलाधिष्ठानरूपा । 'अथात आदेशो नेति नेति'  
 'नेह नानास्ति किञ्चन' इत्यादिनिषेधश्रुतिभ्य प्रतिपन्ना ।  
 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' इत्यादिबाधायामा सामानाधिकरण्य  
 मवगम्यते । कार्यम्य कारणाभेदज्ञान बाधा । तद्विन्नता  
 ज्ञानस्य भ्रमरूपत्वात् । तथा च श्रुतिनिषेधस्यावध्यपेक्षया  
 प्रकृत्यादीनामपि तत्त्वज्ञानेन निवृत्तौ भूतपूर्वगत्या सर्वाधि  
 ष्ठानत्वेन अनुभूयते इति भावः ॥ ॐ सकलाधिष्ठान-  
 रूपायै नमः ॥

सत्यरूपा । सत्य जडानृतपरिच्छिन्नव्यावृत्तत्व सच्चिदान-  
 न्दरूप यस्या सा तथा । परिणामवादमाश्रित्य सत् अपरोक्ष-  
 ज्ञानयोग्यानि पृथिव्यप्तेजासि, त्यत्तु परोक्षज्ञानविषया नि  
 त्यानुमेया इत्यर्थः, 'सच्च लब्धाभवत्' इति श्रुते । सत्य  
 रूप यस्या सा तथा ॥ ॐ सत्यरूपायै नमः ॥

समाकृति । समा अभिन्ना सच्चिदानन्दरूपैकरसा आ  
 कृति मूर्ति स्वरूप यस्या सा तथोक्ता । समा अन्यूना  
 नतिरिक्ता यथाशास्त्रप्रमाण मूर्तिर्विग्रहो यस्या सेति वा ।  
 समा सदाशिवेन गुणसौन्दर्यबलवीर्ययशोगाम्भीर्यधैर्यैङ्गि-  
 तादिपरिज्ञानसर्वज्ञत्वादिबहुलधर्मविशेषै मूर्तिर्यस्या सेति  
 वा । चतुर्विधभूतप्रायेषु तत्तत्प्रारब्धानुसारेण समा

तत्र तत्र निवासयाग्या मूर्तिर्यस्या मति वा । कर्माध्यक्ष  
 तथा तत्तत्फलविशेषदानेषु समा पक्षपातरहिता मूर्तिर्यस्या  
 सा । समा बाल्यस्थविरत्वादिभावविकारवर्जिता एक  
 प्रकारा नित्ययौवनशालिनी मूर्तिर्यस्या सा । 'मम सर्वेषु  
 भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम' अङ्गुष्ठमात्रं पुरुषोऽन्तरात्मा  
 सदा जनानां हृदये मनिविष्ट' इति स्मृतिश्रुतिभ्यामे-  
 करूपत्वावगमादित्याशय ॥ ॐ समाकृतये नम ॥

सर्वप्रपञ्चनिर्मात्री । ससारस्यानादितया माक्षस्थायित्वन  
 च भूतभविष्यद्वर्तमानगत्या सर्वशब्दवान्मयत्व प्रपञ्चमय , प्रप  
 ङ्च्यते विस्तार्यते विवर्तते इति प्रपञ्च , 'एक बीज बहुधा  
 य करोति' इति श्रुते । तस्य निर्मात्री निर्माणमभिव्यक्ति  
 तन्निमित्ततया तत्तत्कर्तृत्वमुपचर्यते, दवदत्त पचतीतिवत् ॥  
 ॐ सर्वप्रपञ्चनिर्मात्र्यै नम. ॥

समानाधिकवर्जिता । कुलशीलजातिगुणादिभि तुल्य  
 समान , तै श्रेयानधिक , तैर्वर्जिता । 'न तस्य प्रति-  
 मास्ति' 'विश्राधिको रुद्रो महार्षि' इति श्रुते , 'सर्वाधि  
 पत्य कुरुते महात्मा' इति 'एकमेवाद्वितीयम्' 'न त्वत्स  
 मोऽस्त्यभ्यधिक कुतोऽन्यो लोकत्रये' इत्यादिश्रुतिस्मृति-  
 भ्या चेति भाव । एतद्दृष्ट्या समाननीय समान पूजनी

योऽधिक तद्द्वयेन वर्जिता । ' एकमेवाद्वितीय ब्रह्म ' इत्यादि-  
श्रुतेरिति वार्थ ॥ ॐ समानाधिकवर्जितायै नमः ॥

**सर्वोत्तुङ्गा सगहीना सगुणा सकलेश्वरी ।**

**ककारिणी कान्धलोल कानेश्वरमनोहरा ॥**

सर्वोत्तुङ्गा । कार्यापेक्षया कारणस्याधिकत्वात् सर्वा  
पेक्षया उत्तुङ्गा उन्नता, ' पादोऽस्य विश्वा भूतानि । त्रिपा  
दस्यामृत दिवि ' इति श्रुते ॥ ॐ सर्वोत्तुङ्गायै नमः ॥

सगहीना । निरवयवत्वेन निष्कारणत्वेन वा निर्गुणत्वेन  
वा निराश्रयत्वेन वा नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वरूपत्वेन सबन्धर  
हिता वा, ' असगो न हि सज्जते ' ' न चास्य कश्चिज्जनिता  
न चाधिप ' इत्यादिश्रुतेरित्याशय ॥ ॐ सगहीनायै  
नमः ॥

सगुणा । समा एकप्रकारा गुणा सत्यकामत्वादय य  
स्या सा तथा । ' गुणी सर्वविद्य ' ' सत्यकाम सत्यसक-  
ल्प ' इत्यादिश्रुते । त्रिमूर्तिस्वरूपतया सत्त्वरजस्तमोगुणै  
सह वर्तते इति वा तथा ॥ ॐ सगुणायै नमः ॥

सकलेष्टदा । इच्छाविषयभूतानि इष्टानि काम्यानीत्य-  
र्थ , सकलानि च तानीत्यभेदसमास , अन्यथा जीवादि-

वत् कस्मिंश्चिद्विषये असामर्थ्यशङ्का स्यात् । एकस्य पदार्थस्य बहूनाभिच्छाविषयत्वदर्शनात्, एकत्र कामनायामपि तत्स-  
 हभावित्वेन सर्वप्रापकत्वोक्तौ परदेवताया बहुफलप्रदानृत्वेन  
 अत्यन्तविश्वसनीयतया अतिशयप्रतिभानाच्चेत्यर्थः । अथवा,  
 परिच्छिन्नपरिमितभाग्यवत्प्राणिनः सर्वस्य सर्वत्र इच्छाया  
 मपि, यानि सर्वाणि स्वबुद्धया शास्त्राविरोधेनेष्टानि एषित-  
 व्यानि वाञ्छितव्यानि, तान्येव प्रयच्छति ददाति, न तद्  
 धिकानि, लोकेच्छाया बहुप्रकारत्वेन दुष्पूरणीयत्वादिति  
 भावः । सर्वेषां प्राणिनामिष्ट्या इज्यया पूजया विषयीकृता,  
 यज्ञेन वा समाराधिता तस्य फलप्रदेत्यर्थः । 'अहं च स  
 र्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च' 'एष ह्येव साधुः कर्म का-  
 रयति यमेभ्यो लोकेभ्य उन्निनीषति' इति स्मृतिश्रुतिभ्यां  
 परमेश्वरार्पणबुद्धया क्रियमाणस्यैव कर्मणः शुभफलत्वात्  
 मुक्तिहेतुत्वेन, काम्यफलार्थिना जन्ममरणादिवन्धकत्वेन स्व-  
 रूपफलतया अनादरणीयत्वादित्यर्थः । अथवा, कलाभिः अ-  
 वयवैः तरतमभावैरित्यर्थः । तैः सहितानि इष्टानि फ-  
 लानि मनुष्यान्नादादिब्रह्मानन्दपर्यन्तानि फलानि आनन्द-  
 स्वरूपाणि ददातीति तथा ॥ ॐ सकलेष्टदायै नमः ॥

ककारिणी । तृतीयखण्डद्वितीयवर्णरूप ककारावयव

वाचक अस्या अस्तीति तथा । ॐ ककारिण्यै नमः ॥

काव्यलोला । वात्मीकिवेदव्यासादिकृतेषु काव्येषु लोला, वाच्यलक्ष्यार्थभेदेन तत्र सबद्धेत्यर्थ । अथवा, कविभि कृतेषु स्तुतिविशेषेषु प्रीतिमतीत्यर्थ ॥ ॐ काव्यलोलायै नमः ॥

कामेश्वरमनोहरा । कामेश्वरस्य मन हरतीति तथा । ॐ कामेश्वरमनोहरायै नमः ॥

कामेश्वरप्राणनाडी कामेशोत्सङ्गवासिनी ।

कामेश्वरालिङ्गिताङ्गी कामेश्वरसुखप्रदा ॥

कामेश्वरप्राणनाडी । कामेश्वरस्य प्राणनाडी यथा नाड्या प्राण सचरति सा तथा, जीवनाडीत्यर्थ । 'इडया तु बहिर्याति' इति लयखण्डवचनात् । लोके विशम्भमाने पशौ हृदयपुण्डरीकाकार मासखण्डात्मकान्त सुषिराष्टदलोपेतमङ्गुष्ठपरिमाणसुषिरयुताधाभागकर्णिकामध्य दृश्यते, तस्या कर्णिकाया कसरायमाना एकशत नाडीनामङ्कुरा तद्वेष्टनपुरीतन्नाम कनाडीसुषिरविन्यस्तमूला भवन्ति । तत्र सुषुम्नानामकनाडी मूलाधारादारभ्य ब्रह्मर ध्रपर्यन्त गता । तस्या षट् चक्राणि मूलाधारादीनि तत्तन्मातृकावर्णसहितयोगशास्त्रोक्तदलसयु

तानि सनद्धानि वर्तन्त । तस्या मूल पृथ्वीदेवता विसतन्तुत  
नीयसी कुण्डलिन्यधोमुखावरणशक्तिर्निद्राति । तस्या दक्षि-  
णभागे इलानामनाडी भ्रूमध्यपर्यन्त प्रसृता । वामे  
पिङ्गला तथा । तथा च जाग्रदवस्थाया नेत्रयो दपत्यात्मना  
श्रुतिप्रतिपादित , स्वप्ने मनउपाधिक , सुषुप्तावज्ञानोपाधि-  
क , जाग्रति स्थूलशरीराभिमानी विश्व इत्युच्यत, स्वप्ने सू-  
क्ष्माभिमानी तैजस , सुषुप्तौ कारणार्भिमानी प्राज्ञ । सुषु-  
प्तौ कारणात्मना स्थितानि स्थूलसूक्ष्मशरीरजन्यभोगसाधन  
प्रारब्धकर्मवशेन पुरीतद्वारा नाडीमार्गेण तत्तद्गोलकानि प्रवि-  
शन्ति इन्द्रियाणि । तदुपरमप्रारब्धोद्बोधे आन्दोलिकाया वि-  
द्यमानो राजा गृहान्तरे सोपानमागद्वारा प्रासादे विहृत्य त-  
दवच्छिन्नान्त पुरपर्यङ्के शयान इव नाडीद्वारा पुरीतप्रविश्य  
तदवच्छिन्नहृदयोपाधिक परमात्मान यदा प्रविशति तदा  
सुप्त इत्युच्यते । लिङ्गशरीर कारणात्मना लीयत । तदा प्राणा  
दिवायव प्रलीनवृत्तय सन्त आयु स्वरूपेण शरीर रक्षन्ति ।  
तथा च भाविजाग्रत्स्वप्नभोगानुकूलकर्मानुबन्धप्राणधारण सु-  
षुप्तौ सोपाधिकचैतन्यस्यैव दृश्यते । तत्सत्तथा च नाडीना  
प्राणसंचारयोग्यतापि । एव च सति 'न प्राणेन नापानेन  
मर्त्यो जीवति कश्चन । इतरेण तु जीवन्ति यस्मिन्नेतावुपा-

श्रितौ' इति श्रुत्या ' जीव प्राणधारणे ' इति धातुपाठाच्च प्राण  
नाडीशब्दस्य लक्षणया परमात्मैवोच्यते । कामेश्वरस्यैव  
प्रारब्धकर्मजन्यशरीरमात्राभावेऽपि घृतकाठिन्यन्यायेन मूर्ति  
मत्तया तदन्तर्यामिसभावनया एतन्नाम । कामेश्वरस्य प्राण  
नाडी तदधिष्ठानचैतन्यमिति फलितोऽर्थः ॥ ॐ कामेश्वर  
प्राणनाड्यै नमः ॥

कामशोत्सगवासिनी । कामेशस्य उत्सगे वामाङ्के वसती  
ति तथा । ' अनेकमन्मथाकारकामेशोत्सगवासिनी ' इति  
ललितातापनीये ॥ ॐ कामेशोत्सगवासिन्यै नमः ॥

कामेश्वरालिङ्गिताङ्गी । तेन आलिङ्गितम् अङ्गीकृतम् अङ्ग  
यस्या सा तथा ॥ ॐ कामेश्वरालिङ्गिताङ्ग्यै नमः ॥

कामेश्वरसुखप्रदा । कामेश्वराय सुख प्रददातीति वा ।  
कामेश्वरस्य यत्सुख ब्रह्मस्वरूपसच्चिदानन्दसाक्षात्कारात्म  
कम्, ' दवो भूत्वा देवानप्येति ' इति श्रुत्युक्तन्यायात् स्व  
कीयभक्तानां कामेश्वराभेदरूप सच्चिदानन्दघनात्मक मोक्ष  
ददातीत्यर्थः ॥ ॐ कामेश्वरसुखप्रदायै नमः ॥

कामेश्वरप्रणयिनी कामेश्वरविलासिनी ।

कामेश्वरतपसिद्धिः कामेश्वरमनःप्रिया ॥

कामेश्वरप्रणयिनी । कामेश्वरस्य स्वस्वरूपे परमानन्दघने  
या प्रीति तद्विषयभूतेत्यर्थं ॥ ॐ कामेश्वरप्रणयिन्यै  
नमः ॥

कामेश्वरविलासिनी । कामेश्वरस्य विलास कार्यात्मना  
विवर्तोऽस्या अस्तीति तथा ॥ ॐ कामेश्वरविलासिन्यै  
नमः ॥

कामेश्वरतप सिद्धि । कामेश्वरस्य तप जगदालोचना  
त्मकम्, सिध्यत्यनयेति सिद्धि, तपस साधनभूतेत्यर्थं ।  
स्त्रीपुरुषात्मना कल्पितभेदवशात् जगत्सर्जनसाधनभूतेत्यर्थं ॥  
ॐ कामेश्वरतप सिद्धयै नमः ॥

कामेश्वरमन प्रिया । मनस प्रिया तथा, निरवधिक-  
प्रेमास्पदत्यर्थं ॥ ॐ कामेश्वरमनप्रियायै नमः ॥

कामेश्वरप्राणनाथा कामेश्वरविमोहिनी ।

कामेश्वरब्रह्मविद्या कामेश्वरगृहेश्वरी ॥

कामेश्वरप्राणनाथा । कामेश्वरस्य प्राण हिरण्यगभ  
त नाथयति पालयतीति तथा । कामेश्वर प्राणनाथो बल्लभो  
यस्या सेति वा तथा ॥ ॐ कामेश्वरप्राणनाथायै नमः ॥

कामेश्वरविमोहिनी । विमोहयति स्वय भिन्नविग्रहवती

सती आवा दपती—इति द्विप्रकारकज्ञानवन्त करोतीति सा तथा । अभेदज्ञानवत तद्विपरीतज्ञानवत्त्व मोह तत्करोतीति सा तथा । अथवा, मोहो नाम बुद्धेरेकालम्बनतया तदन्याविषयकत्वम् परमेश्वरस्य स्वस्वरूपपरदेवतापरमानन्दसाक्षात्कारेण स्थाणुवन्निश्चलतया उपचारेण मोहवत्तया तदितरप्रपञ्चाकारकृत्याद्याश्रयतादर्शनेन मोहयतीत्युपचारनाम । मोहयतीवेत्यर्थ । अन्त पुरगत राजान ख्लियासक्तमितिवदित्यर्थ ॥ ॐ कामेश्वरविमोहिन्यै नम ॥

कामेश्वरब्रह्मविद्या । कामेश्वरस्य तत्त्वपदार्थसाक्षात्कारभूतेत्यर्थ , 'य साभ्रादपरोक्षाद्ब्रह्म' इति श्रुते ॥ ॐ कामेश्वरब्रह्मविद्यायै नम ॥

कामेश्वरगृहेश्वरी । गृह्यत इति ग्रह सर्वज्ञानम् तस्य ईश्वरी विषयाधिष्ठानभूतत्वेन नियामिकेत्यर्थ । अथवा, 'गृहिणी गृहमुच्यते' इति न्यायात् कामेश्वर गृहेश्वर स्वस्या अधिपति अस्या अस्तीति सा तथा ॥ कामेश्वरगृहेश्वर्यै नम ॥

कामेश्वराह्लादकरी कामेश्वरमहेश्वरी ।

कामेश्वरी कामकोटिनिलया काङ्क्षितार्थदा ॥

कामेश्वराह्लादकरी । आह्लाद तृप्तिजन्यसुख परमेश्वरस्य

नित्यतृप्तत्वरूपा शक्ति , परदेवतात्मकतया त करोतीति  
तथा ॥ ॐ कामेश्वराह्लादकर्यै नमः ॥

कामेश्वरमहेश्वरी । महती च मा इश्वरी निरुपाधिकैश्व  
र्यवती, ' महान्प्रभुर्वै पुरुष ' इति श्रुते । कामेश्वरस्य मह  
दैश्वर्यम् अस्या अस्तीति तथा , भगवतीत्यर्थ । ' ऐश्वर्यस्य  
समग्रस्य वीर्यस्य यशस श्रिय । ज्ञानवैराग्ययोश्चैव षण्णा  
भग इतीरणा ' तमीश्वराणा परम महेश्वरम् ' इति श्रुते ॥  
ॐ कामेश्वरमहेश्वर्यै नमः ॥

कामेश्वरी । मन्मथापासितकादिविद्यारूपेत्यर्थ ॥ ॐ  
कामेश्वर्यै नमः ॥

कामकोटिनिलया । षण्णवतिपीठेषु मध्य कामकाटि  
श्रीचक्रमित्यर्थ । निलय गृह यस्या सा तथा ॥ ॐ का-  
मकोटिनिलयायै नमः ॥

काङ्क्षितार्थदा । काङ्क्षितान् काङ्क्षाविषयीभूतान् , प्राप्तम्  
जातीयेच्छा काङ्क्षा , तद्गोचरान् पदार्थान् ददातीति तथा ।  
काङ्क्षिता सती उपास्यदेवता मे प्रसन्ना भूयादितिच्छया  
चिरकालोपासिता सती पुरुषार्थान् अप्रार्थयमानस्यापि  
स्वयमेव ददातीत्यर्थ ॥ ॐ काङ्क्षितार्थदायै नमः ॥

लकारिणी लब्धरूपा लब्धधीर्लब्धवाञ्छिता ।  
लब्धपापमनोदूरा लब्धाहकारदुर्गमा ॥

लकारिणी तृतीयखण्डतृतीयवर्णत्वेन वाचकतया अस्या  
अस्तीति सा तथा ॥ ॐ लकारिण्यै नम ॥

लब्धरूपा । रूप्यते ज्ञाप्यत णभिरिति रूपाणि लक्षणा  
नि स्वरूपतटस्थभेदेन सगुणनिर्गुणपराणि, लब्धानि यया  
सा तथा । रूप्यते ज्ञाप्यत इति रूपम् अर्थ , उपलक्षण नाम्नो  
ऽपि, लब्धे नामरूपे यया सा तथा । आदौ स्वय मायोपा  
धिना शब्दार्थभावमापद्य पश्चात् व्याकरणमकरोदिति भा  
व ॥ ॐ लब्धरूपायै नम ॥

लब्धधी । निश्चयात्मिका सविकल्पनामका अन्त कर  
णवृत्तयो धिय , ता उपाधित्वेन प्रतिबिम्बाधिष्ठानत्वेन लब्धा  
यया सा तथा । वृत्त्यारूढ चैतन्य ज्ञानमिति वा, चैतन्य-  
व्याप्ता वृत्तिर्वेति वेदान्तसिद्धान्त । जडाना विषयाणा ग्रहणे  
तादृशीना वृत्तीना असामर्थ्ये जगदान्ध्यप्रसङ्गेन स्वरूपचै  
तन्यमन्त करणाद्युपहित फलचैतन्यतया प्रकाशयति । तथा  
च 'ब्रह्मण्यज्ञाननाशाय वृत्तिव्याप्तिरिहेष्यते' इति न्यायेन  
लब्धा धी तत्त्वमस्यादिमहावाक्यश्रवणजन्यवृत्तिव्याप्तिर्यथा

सत्यर्थ । अथवा, धी शब्दन सर्वज्ञत्वादिकमुच्यते, तत्  
लब्ध ययेति वा, 'य सर्वज्ञ सर्वविन्' इति श्रुत ॥ ॐ  
लब्धधिये नमः ॥

लब्धवाञ्छिता । वाञ्छाया । वषयीभूत वाञ्छतम इष्टम्  
लभित्यर्थ । लब्ध पूर्वमव प्राप्त तद्ययेति तथा । आप्तकामेति  
यावन् ॥ ॐ लब्धवाञ्छितायै नमः ॥

लब्धपापमनोदूरा । पापप्रधानानि च तानि मनासि च  
पापमनासि लब्धानि पापमनासि यैस्ते सदा पापचिन्तका  
इत्यर्थ । तथा दूरा अवेद्येत्यर्थ, 'अन्यत्र धर्मादन्यत्राध  
र्मादन्यत्रास्मात्कृताकृतात् इति श्रुते । 'तमेत वेदानुवच  
नेन ब्राह्मणा विविदिषन्ति' इति श्रुत्या विहिताना तत्तद्वर्णा-  
श्रमधर्माणामीश्वरार्पणबुद्ध्या । क्रयमाणानामात्मज्ञानमाधन  
तया श्रूयमाणत्वात् तदन्येषा दु खप्राप्तिसाधनत्वेन पापवा  
सनाप्रधानत्वेन दुरधिगमेत्यर्थ ॥ ॐ लब्धपापमनोदू  
रायै नमः ॥

लब्धाहकारदुर्गमा । अहकारोऽभिमान उपलक्षण त  
त्कार्याणामासुरसपत्तिविशेषाणाम् । लब्ध अहकार राजस  
तामसात्मक यैस्त दु खेनाप्यधिकप्रयत्नेन क्रियमाणसाध  
नकलापेन अधिगन्तु ज्ञानुमशक्या । सत्त्वगुणाभावे देहे

न्द्रियादौ सुखप्रकाशाव्याप्तौ मन स्थैर्याभावेन रजस प्रवर्त  
 कस्य विश्लेषकस्य तमसश्चावरणप्रधानस्य विवेकज्ञानप्रतिब  
 न्धकस्य निद्रालस्यादिसमुद्भवस्य कार्येण जामित्वादिरूपेण  
 श्रेयोभागसाधनानुष्ठाने गुरुवेदयो श्रद्धाक्षये बाह्यविषयस  
 पादनव्यग्र मनसि लाभालाभहेतुकहर्षशोकजन्यरागद्वेषपर  
 तन्त्रे अनात्मज्ञासुरसपत्तिमता चित्ते न भातीत्याशय ।  
 प्रत्युत जननमरणप्रवाहरूपससारमेवानुभवन्ति, 'तानह  
 द्विषत क्रूरान्' इति भगवद्वचनात् । अतो निरभिमानपुरु  
 षेण स्वाभीष्टलाभाय चित्त मदा चिन्तनीयेत्यर्थ । 'यतय  
 शुद्धसत्त्वा' इत्यादिप्रमाणेभ्य इति द्रष्टव्यम् ॥ ॐ लब्धा  
 हकारदुर्गमायै नम ॥

लब्धशक्तिर्लब्धदेहा लब्धैश्वर्यसमुन्नति ।

लब्धवृद्धिर्लब्धलीला लब्धयौवनशालिनी ॥

लब्धशक्ति । लब्धा शक्ति सकलसामर्थ्यहेतुभूता मा  
 यात्मिका यया सा तथा, 'ते ध्यानयोगानुगता अपश्यन्  
 देवात्मशक्ति स्वगुणैर्निगूढाम्' इति श्रुते ॥ ॐ लब्धश  
 क्त्यै नम ॥

लब्धदेहा । लब्ध देह विग्रह यया सा तथा । स्वे

च्छावलम्बितमूर्ति घृतकाठिन्यन्यायेन जीवत्वाभावेन कर्मा  
धीनत्वाभावान् । तथा च नति अध्यस्तमायाशक्ते भेदक  
त्वस्वाभाव्यन 'पतिश्च पत्नी चाभवताम्' इति श्रुत्या च  
दपतिमूर्तिमती बभूवेत्यभिप्राय ॥ ॐ लब्धदेहायै नम ॥

लब्धैश्वर्यसमुन्नति । ऐश्वर्याणां समुन्नति आधिक्य प  
यवसानमित्यर्थ , लब्धा ऐश्वर्यसमुन्नति यथा सा तथा,  
'तमीश्वराणां परम महेश्वरम्' इति श्रुते 'नान्तोऽस्ति  
मम दिव्यानां विभूतीनां परतप' इति स्मृतेश्च । 'सर्वे  
श्वर एष सर्वज्ञ एषोऽन्तर्याम्येष योनि सर्वस्य' इति  
श्रुतौ निरुपाधिकमहदैश्वर्यसपत्ते तदुपासकानामगस्त्यादि  
महर्षाणां दर्शनात् तदीयमहदैश्वर्यस्य निरवधिकत्वमिति  
किमु वक्तव्यमिति ज्ञायते इत्यभिप्राय ॥ ॐ लब्धैश्वर्य-  
समुन्नत्यै नम ॥

लब्धवृद्धि । वृद्धिर्नाम व्याप्ति परिपूर्णतेत्यर्थ , अव  
यवोपचयात्मका न, तस्या कर्मजन्यत्वेन विनाशहेतुत्वात् ,  
'स वा एष महानज आत्मा न वर्धते कमणा' इति  
श्रुतिवचनात्, 'निष्क्रिय निष्कलम्' इति अवयवमाह्वानि  
षेधाच्च, तथा च लब्धा वृद्धि सर्वव्यापकता स्वस्वरूपैव  
सती उपाधिभिर्जन्यैस्तदाश्रयभूतै अभिव्यज्यत । न

त्वविद्यमानारोपिता इति निष्कर्षार्थं ॥ ॐ लब्धवृद्धयै  
नमः ॥

लब्धलीला । लीला अन्यप्रयोजनार्थव्यापारा स्वहर्ष  
मात्रहेतुका वा, तत्कालोचितशृङ्गारादिनवरसाङ्गीकारसमये  
तदुचितभङ्गीविशेषा वा लब्धा यया सा तथा ॥ ॐ लब्ध  
लीलायै नमः ॥

लब्धयौवनशालिनी । अस्तित्वजननवर्धनभावविकारा  
वस्था बाल्यम्, परिणाम अपक्षयो नाश उत्तरावस्था  
जरा, दहाभावेन तदुभयनिषेधे अर्थाद्यौवनम्, यौति  
गच्छतीति युवा दृढबलवीर्यं, तस्य भाव यौवन तदुभ  
यवयोऽवस्थाराहित्येनैकस्वरूपता, तल्लब्ध प्राप्त यौवन यया  
सा तथा, 'अजरोऽमृतोऽभयो ब्रह्म' इति श्रुते सर्वदा  
एकप्रकारस्वरूपवतीत भाव ॥ ॐ लब्धयौवनशालिन्यै  
नमः ॥

लब्धातिशयसर्वाङ्गसौन्दर्या लब्धविभ्रमा ।

लब्धरागा लब्धपतिर्लब्धनानागमस्थितिः ॥

लब्धातिशयसर्वाङ्गसौन्दर्या । सुन्दरो रुचिर तस्य  
भाव सौन्दर्यम्, अवयवाना सर्वेषा सौन्दर्यमतिशायि  
सर्वाङ्गेषु सर्वावयवेषु लब्ध यया सा तथा, यथाशास्त्रोक्ता

वयवविन्ध्यासविशेषत्वन सर्वमनाहरमूर्तिवतीत्यर्थ , ' न तस्य प्रतिभास्ति ' इति श्रुत ॥ ॐ लब्धातिशयसर्वाङ्गसौन्दर्यायै नम ॥

लब्धविभ्रमा । विभ्रमो बालक्रीडा लब्धा यया सा तथा , सर्वात्मकतया सर्वकर्तृत्वदिति भाव ॥ ॐ लब्धविभ्रमायै नम ॥

लब्धरागा । लब्ध सजानीयो राग काम , ' मोऽकामयत ' इति श्रुत्या जगत्सर्जनस्य कामनापूर्वकत्वप्रतिपादनात् , लब्धो रागो यया मा तथा इत्यर्थ ॥ ॐ लब्धरागायै नम ॥

लब्धपति । लब्ध स्वेच्छयैव स्वयवरे पति कामेश्वरो यया सा तथा ॥ ॐ लब्धपतये नम ॥

लब्धनानागमस्थिति । आ ममतात् नानाप्रकारै कर्मोपासनाज्ञानकाण्डतदङ्गत्वादिभि गमयन्ति स्वार्थान् प्रकाशयन्तीत्यागमा वेदा नाना अनेकशाखाप्रभिन्नसामादय तेषा स्थिति परिपालन लब्धा यया सा तथा । नाना गमस्थिति वेदचतुष्टयोक्तमर्यादा काण्डत्रयविषया लब्धा यया सेति वा । ससारस्थानादित्वेन निरपेक्षप्रमाणभूतान् वेदान् ' सर्वे वदा यत्नैक भवन्ति ' इति श्रुते स्वस्वरूपभूतान्

महाप्रलये सरक्ष्य सर्गादौ जायमानहिरण्यगर्भस्थान्यूनानति  
रेकेण तानेव प्रतिभासयति स्वयं दपती भूत्वा तदुक्तधर्मा  
ननुष्ठाय परेषामप्यनुष्ठापयतीति च । ' वेदशास्त्रे ममैवाङ्गे  
वर्त एव च कर्मणि । यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्दि  
त । उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम् ' इत्यादि  
भगवद्वचनादिति द्रष्टव्यम् ॥ ॐ लब्धनानागमस्थित्यै  
नमः ॥

लब्धभोगा लब्धसुखा लब्धहर्षाभिपूजिता ।  
ह्रींकारसूर्तिह्रींकारसौधशृङ्गकपोतिका ॥ ५४ ॥

लब्धभोगा । भोगः सुखमात्रानुभवः दुःखानुभवे उक्त्य-  
माने जीवाविशेषप्रसङ्गात् । लब्धः भोगः यथा सा तथा ।  
जीववत् क्रमिकस्वेष्टपदार्थानुभवानन्तरकालीनः सुखः न भव-  
ति, स्वस्था आनन्दरूपत्वेन सिद्धस्वरूपत्वात्, साधनभूत-  
भोगोऽप्येतद्विषये सिद्ध इत्युपचर्यते इति लब्धभोगेत्सु  
च्यते ॥ ॐ लब्धभोगायै नमः ॥

लब्धसुखा । लब्धः सुखः अनुकूलवेदनीयः स्वस्वरूपभूतः  
सुखः तत्साधनं च धर्मः यथा सा तथा ॥ ॐ लब्धसु-  
खायै नमः ॥

लब्धहर्षाभिपूरिता । लब्ध या हर्षं तृप्तिनिमित्तकचि  
 त्तोलासविशेष मुखप्रसादशरीरपुष्ट्यादिकार्योन्नेय जगत्या  
 स्वाभीष्टपदार्थानुभवादिजन्य सतोष इति प्रसिद्ध , तेनाभि  
 पूरिता अभित समन्तादन्यूनानतिरेकेणाविच्छिन्नरूपतया  
 पूरिता भरिता । तद्विपरीतदुःखाद्यनुत्पादेन तन्मात्रसमाश्रया  
 नित्यप्रसन्नमुखीत्यर्थ ॥ ॐ लब्धहर्षाभिपूरितायै नमः ॥

ह्रींकारमूर्ति । वाच्यवाचकताभेदसबन्धेन ह्रींकार मूर्ति  
 विग्रहो यस्या सा तथा ॥ ॐ ह्रींकारमूर्त्यै नमः ॥

। ह्रींकारसौधशृङ्गकपोतिका । सुधामय मौधम , सुधा-  
 विकार अट्टालिकेत्यर्थ , तस्य शृङ्ग शिखर चन्द्रशालादि-  
 भित्त्युपरिभाग , निरुपाधिकविश्रान्तजन्यमुखानुभवहेतु  
 तथा ह्रींकारस्य सौधोपमा , तत्र हकारस्य श्रेतवर्णतया  
 अट्टालिकसादृश्यम् , रेफस्य लोहितरूपतया इष्टकादिकृता  
 धोभित्त्युपमा , हकारोपरि ईकारस्य शृङ्गोपमा, ऊर्ध्वगत्व-  
 साम्यात् , तदुपरितनबिन्दु सर्वप्रकृतभूतशब्दार्थात्मक-  
 तया तदवयवत्वेन विचित्रस्वरूपोऽपि सूक्ष्मतया अपवरक-  
 गतकपोतकान्तेव जागरूक दृश्यत इति तदर्थत्वेन परद-  
 धतोपमानशब्देनाभिधीयत इति भाव ॥ ॐ ह्रींकारसौध-  
 शृङ्गकपोतिकायै नमः ॥

ह्रींकारदुग्धाब्धिसुधा ह्रींकारकमलेन्दिरा ।

ह्रींकारमणिदीपार्चिह्रींकारतरुशारिका ॥

ह्रींकारदुग्धाब्धिसुधा । दोहान्निष्पन्न दुग्धम् । स्तनग  
तस्य पयस स्वीयतापादनहस्तक्रियाविशेषो दोह । उपल  
क्षण चोषणादीनाम्, तथा च प्रदीपालकार सिद्ध, अनन्तो  
दकप्रसारितनिम्नभूप्रदेश अब्धिरुच्यते । आप धीयते  
अस्मिन्निति तथा । तस्मिन् मजीवकत्व धर्म । डिम्भक  
सजीवने स्तन्यादौ दर्शनात् । ह्रींकारस्यापि हकारयुक्ततया  
श्वेतवर्णत्वादमृतहेतोश्च तत्सादृश्यम् । तस्य सुधेव सुधा  
तदभिव्यक्तत्वाविशेषात्तत्सेवकाना नित्यत्वे सति बहुविधम  
हिमशालितया दर्शनादिति भाव ॥ ॐ ह्रींकारदुग्धाब्धि  
सुधायै नमः ॥

ह्रींकारकमलेन्दिरा । ह्रींकारबीजस्य विचित्रवर्णतया पर  
मप्रीतिविषयतया च कमलोपमा । तस्य वाच्यार्थतया तदु  
परितनत्वेन सर्वपुरुषार्थप्रदातृत्वाच्च कमलशब्देनाभिधीयते ।  
तस्या पद्यालयत्वात् ह्रींकारकमलस्य इन्दिरा तदधीनब्रह्म-  
विद्येत्यर्थ ॥ ॐ ह्रींकारकमलेन्दिरायै नमः ॥

ह्रींकारमणिदीपार्चि । आधिदैविकागुपद्रवानभिभूतस्त्वे

सति चिरकालावस्थायित्व मणिदीपसान्द्रशयम ह्रींकारस्य ।  
 तस्य प्रकाश अनितरसाधारणमहातिशयवत्त्वेन अनर्घत्व  
 भावेदयति । तदुपासकस्य निरवधिकमहत्त्वापादकह्रींकार  
 वान्यतया तत्प्रकाशकेत्यर्थ । तथा च निरन्तरनमोऽपाकर  
 णेन स्वेष्वपदार्थापादनेन च सुखयतीति फलितोऽर्थे ॥ ॐ  
 ह्रींकारमणिदीपार्चिषे नम ॥

ह्रींकारतरुशारिका । तारयति फलार्थिन स्वारूढान्  
 पतनादे रक्षतीति तरु , तस्य शारिका पिङ्गतुण्डनेत्रचरणा  
 शारिका अभ्यासातिशयेन मनुष्यभाषायामपि भाषते ।  
 भूतभविष्यद्वर्तमानलोकयात्रापरिज्ञानी सती शुभाशुभफल  
 प्राप्तिं च स्वभाषया वदति । अस्य बीजस्य वान्यार्थतया  
 तत्सबन्धिनी सती वेदवाचा सर्वे प्रकाशयतीत्यर्थ ॥ ॐ  
 ह्रींकारतरुशारिकायै नम ॥

ह्रींकारपेटकमणिह्रींकारादर्शाबिम्बिता ।

ह्रींकारकोशासिलता ह्रींकारास्थाननर्तकी ॥

ह्रींकारपेटकमणि । गूहनसाधनतया ह्रींकार पेटकेन  
 दृष्टान्तीक्रियते । तस्य मणि वैदूर्यमित्यर्थ । यथा हीरा  
 दिमणि पेटकादौ गापितोऽपि स्वकान्त्या बाह्याभ्यन्तर तस्य

प्रकाशयन्नितरपेटकेभ्य त व्यावर्तयति, तथेदमपि बीज  
स्ववाचकतयेतरवर्णेभ्य निरतिशयमहिम्ना भेदयतीति भाव ॥

ॐ ह्रींकारपेटकमणये नमः ॥

ह्रींकारादर्शबिम्बिता । अस्य बीजस्य इतरप्रमाणानपेक्ष  
वेदान्तर्गततया निर्दोषत्वादादशसाम्यम् । तस्मिन् बिम्बिता  
प्रतिबिम्बिता, मायाप्रतिबिम्बचैतन्यस्यैव जगत्कारणतया  
सर्वत्र दर्पणे मुखमिव प्रतिफलतीति तात्पर्यार्थं ॥ ॐ  
ह्रींकारादर्शबिम्बितायै नमः ॥

ह्रींकारकोशासिलता । ह्रींकार एव कोश तस्यासिलता  
अतिदीर्घखङ्गमित्यथ । सर्ववैर्यादिजन्यदु खनिवर्तकत्वमसि  
लताया इव परदेवताया अपि । तथात्वेन बहि प्रकटनायो  
ग्यतामाहश्येन आच्छादकापेक्षया ह्रींकारस्य वाचकशब्द  
तया अर्थावारकत्वौपम्यादसिकोशतुल्यता । तथा च ह्रींकार  
काशे विद्यमाना असिलतेव दु खनिवारकत्वे सति भक्ताभय  
करीति भाव । सर्वेषामायुधविशेषाणाम् असिपदमुपलक्ष  
णम् । 'महद्भय वज्रमुद्यतम्' 'भीषास्माद्वात पवते' इत्या  
दिश्रुते ॥ ॐ ह्रींकारकोशासिलतायै नमः ॥

ह्रींकारास्थाननतकी । ह्रींकार एव आस्थान सभामण्डप  
मर्वाश्रयत्वान् । तस्य नतकी नटनसबन्धभूसयोगचरणवि

न्यासोपलक्षिततालानुसारिहस्ताद्यङ्गचेष्टा नर्तनम्, तत्कर्त्री नर्तकी । ह्रींकारवान्यार्थतया मायादिसबन्धासबन्धनिमित्त क्वचिच्चित्रतरकार्योत्पादनव्यापारानुकारविकार्यविकारिस्वरूप वत्तया द्रष्टृलोकमनोवृत्तिभेदेन तीव्रमन्दमन्दतरप्रीतिरूपभ क्तिविषयतयाभिव्यक्तानभिव्यक्तेष्टफलसाधनतया स्वकीयपु-  
ण्यादितारतम्येन बुद्धिशुद्धिभेदात्प्रतिभातीत्यर्थ ॥ ॐ ह्रीं  
कारास्थाननर्तक्यै नम ॥

ह्रींकारशुक्तिकामुक्तामणिह्रींकारबाधिना ।

ह्रींकारमयसौवर्णस्तम्भविद्रुमपुत्रिका ॥

ह्रींकारशुक्तिकामुक्तामणि । ह्रींकार एव शुक्तिका नील  
पृष्ठत्रिकोणाकारा, तस्या मुक्तिकेव मुक्ताफलाभवाभिव्यज्य-  
माना— यथा स्वातीमहानक्षत्र सर्वदेशेषु मघसघात्पतञ्जल  
बिन्दु शुक्तिकान्त पतित समुद्रदेशविशेषे मुक्ताकारेण  
परिणमते, तथा मन्वरजस्तमोगुणात्मकह्रींबीजावच्छेदेन म  
नोहरवाचामगोचरसुन्दरतरपरदेवतामूर्त्या मर्वगतमपि चै-  
तन्य विशिष्याभिव्यज्यते । तथा च मौक्तिकार्थिना शुक्त्यु  
पादानवत् परदेवतासाक्षात्कारेऽसूना ह्रींकारोपादानमाव  
श्यकमिति भाव ॥ ॐ ह्रींकारशुक्तिकामुक्तामणये नमः ॥

ह्रींकारबोधिता । सिद्धे पदार्थे इन्द्रियादिसबन्धे सति स्वत एव ज्ञानोत्पत्तिदर्शनात् ज्ञाने विधिरपेक्षित , क्रियाफलत्वाभावात् । तर्हि नित्यापरोक्षधर्मादिज्ञानवत् शुद्धब्रह्माभेद वेदैकदेशह्रींकारेणैव बोध्यते, अज्ञातज्ञापकत्वेन वदस्य स्वत प्राभाष्याभ्युपगमात्, परचैतन्यस्य च ज्ञायमानस्य परमानन्दरूपतया पुरुषार्थरूपत्वात् । अत ह्रींकारेणैव मूलमन्त्रात्मना बोधिता ज्ञापिता । हकाररेफेकाराणा व्यस्तत्वदशाया भिन्नभिन्नार्थकाना मेलने ह्रींकारात्मना परिणामे सच्चिदानन्दस्वरूपश्रीतिपुरसुन्दर्या तदर्थत्वेन अद्वैतस्वरूपतया प्रतिमानात् । ‘नान्योऽतोऽस्ति द्रष्टा’ ‘इद सर्वयदयमात्मा’ ‘एक एव तु भूतात्मा भूते भूते व्यवस्थित । एकधा बहुधा चैव दृश्यते जलचन्द्रवत्’ इत्यादिश्रुते । ‘आत्मा वा अरे दृष्टव्य’ ‘तद्विजिज्ञासस्व’ ‘आत्मान पश्येत्’ इत्यादिलिङ्ग्लोट्त्वप्रत्ययानामर्हतार्थकतया न विधित्वमिति सिद्धान्त ॥ ॐ ह्रींकारबोधितायै नमः ॥

ह्रींकारमयसौवर्णस्तम्भविद्रुमपुत्रिका । पिङ्गलपृथ्वीरेणुसुवर्णमित्युच्यते । अनुच्छिद्यमानद्रवत्वस्य नैमित्तिकत्वेऽपि तैजसान्तर प्रदीपप्रभादावदर्शनात् । पदार्थान्तरसयोगे रजतादिवदतितेजसयोगात् भस्मभावापत्तेश्च हरिमणौ लोहले

रूप्यत्वाभाववत्त्वेऽपि पार्थिवत्ववदत्र पार्थिवत्वे बाधाभावात् ।  
द्रवत्वस्यादकस्वभावत्वेन तत्कायपृथिव्यामपि उपलम्भोपप  
त्तेश्च । तद्विकार , सौवर्णश्चासौ स्तम्भश्च । सौवर्णस्तम्भस्य  
नवरत्नमण्डपभारवाहित्वे सति तदभिन्नत्वेन तदलकारभूतत्व  
स्येव गाधर्म्यस्य ह्रींकारेऽपि जगदाश्रयत्वे सति तत्कारणत्वे  
सति तदन्तर्भूतत्वे सति परमानन्दजनकत्वस्य सत्त्वेन ह्रींका  
रमय इत्यभेदोपचार प्रदीपालकारद्योतनार्थ इति ज्ञातव्यम् ।  
ह्रींकारे उपमेये मयशब्देनोपमानाभेदकल्पनात् । तस्मिन्वि  
चित्रपिङ्गप्रधानरूपे तत्सबन्धितया विद्रुमपुत्रिकेव प्रतीय  
माना विद्रुमन प्रवालन कृता पुत्रिका सालभञ्जिका । सौव  
र्णस्तम्भशब्द उपलक्षण भिन्यादीनाम् , प्रायस्त्वदर्शनात् तदु  
पादान स्वत मनोज्ञस्य स्तम्भस्यातिशयदर्शनीयतायै । दुर्ल  
भतरप्रवालपुत्रिका स्तम्भमण्डप तत्स्वामिन तद्दश च प्रकृ  
ष्टीकरोति तथा श्रीपरदेवतापि रूढ्यैतद्धीजाथतया तदव  
च्छिन्ना सती तदादीन सर्वान भूषयति सफलीकरातीत्यथ ॥  
ॐ ह्रींकारमयसौवर्णस्तम्भविद्रुमपुत्रिकायै नमः ॥

ह्रींकारवेदोपनिषद्ध्रींकाराध्वरदक्षिणा ।

ह्रींकारनन्दनारामनवकल्पकवल्लरी ॥ ८७ ॥

ह्रींकारवेदोपनिषत् । वेद्यन्ते ज्ञायन्ते सर्वे पदार्था  
अनेनेति वेद । जात्येकवचनम् । ह्रींकार एव वद ।  
ज्ञापकत्वाविशेषान् । तस्य उपनिषद्वेदान्तभाग लक्ष्यार्थो  
वा, तत् ब्रह्मोपनिषत्परमिति श्रुत । कर्मोपासनाज्ञानका-  
ण्डभेदेन चत्वागऽपि वेदा त्तिप्रकारा । ‘तमेत वदानुव  
चनेन ब्राह्मणा विविदिषन्ति’ इति वाक्येन ज्ञानसाधनतया  
कर्मोपासनयो विनियुक्तत्वात्, ‘अन्धतम प्रविशन्ति ये  
ऽविद्यामुपासते । ततो भूय इव ते तमो य उ विद्याया  
रता’ इति श्रुत्या तदुभयो ससारफलकत्वेन निन्दितत्वाच्च,  
‘आत्मान चेद्विजानीयादयमस्मीति पुरुष । किमिच्छन् क  
स्य कामाय शरीरमनुसज्जरेत्’ ‘आत्मकाम आत्मकाम’  
इत्यादिश्रुतिभ्य अद्वैतज्ञानोत्पादकवेदभागस्योपनिषच्छब्द  
वान्यस्य मोक्षफलकत्वेन फलप्रतिपादनात्तदुभयप्रतिपादक  
वदभागापेक्षया श्रेष्ठत्वम्, लाके साधनापेक्षया फलस्य श्रेष्ठत्व  
नात्तमत्वप्रसिद्धे । तथा च पूर्वकाण्डद्वयार्थस्य जन्यतया  
तत्प्रतिपादकवेदभागस्योपनिषच्छेषत्ववत् ह्रींकारस्यापि पर-  
देवताप्रकाशकत्वेन तच्छेषत्वात्तस्या प्राधान्यमुक्तमिति द्रष्ट  
व्यम् । वेदान्तेषूपनिषच्छब्दं तज्जन्यतारूपशक्यसम्बन्धेन प्र  
वर्तते । मुख्यया वृत्त्या तु ब्रह्मविद्यायामेव । तथा हि—उप

शब्द समीपदेशार्थक । ब्रह्माण्यध्यस्तमायासमीपदेशक  
 तत्पदार्थप्रतिबिम्बितमविद्योपाधिकचैतन्य जीवशब्दवान्यमुप  
 शब्दार्थं लक्षणया प्रतिपाद्यते । नि शब्द षद् इति पदस्य  
 विशेषणम् । सन् इति पदं सदनगत्यवसादनेषु भवति ।  
 तथा च उपशब्दवाच्यो जीव अविद्या निहत्य त्यक्त्वा  
 ब्रह्मस्वरूपेण निषीदति वर्तत इति उपनिषदित्येकोऽर्थः ।  
 जीव ब्रह्म स्वरूपत्वेन निगच्छति जानातीत्यन्योऽर्थः । जी-  
 व ब्रह्मस्वरूपेण अवसीदति परिसमाप्नोतीति तृतीयोऽर्थः ।  
 एवमुपनिषच्छब्दस्य ब्रह्मविद्यावाचकत्वेन प्रसिद्धस्य तद्वाच-  
 कवेदभागे लक्षणवत्त्वेऽप्युपनिषच्छब्दवान्यो भवति । तथा  
 च ह्रींकार एव वेद तस्य उपानषत्प्रधानभूता ब्रह्मविद्ये  
 त्यर्थः । ॐ ह्रींकारवेदोपनिषदे नमः ॥

ह्रींकाराध्वरदक्षिणा । ह्रींकार एव अध्वर यज्ञ तस्य  
 दक्षिणा समाप्तिसाधनम्, दक्षिणाया दत्ताया यज्ञसमाप्ति  
 दर्शनात् । ह्रींकारस्यापि जप यजनात्मकतया अध्वान  
 राति गच्छतीत्यध्वर मार्गसाधक इत्यर्थः । दक्षिणापद  
 फलवाचि ऋत्विग्न्यापाराणा दक्षिणाफलत्वदर्शनात् । ह्रीं  
 काराध्वरस्य ह्रींकारजपयज्ञस्य दक्षिणा फलसाधनीभूतपुरु  
 षार्थरूपा । अथवा ह्रींकाराध्वरस्य दक्षिणा पत्नी, मखस्य

दक्षिणा पत्नी ' इति वचनात् । ' ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्ट स्या  
मिति मे मति ' इति भगवद्वचनात् । ह्रींकारलक्ष्यार्थज्ञान-  
मेव ह्रींकाराध्वर ह्रींकारज्ञानयज्ञ , ' प्रधान दक्षिणा मखे '  
इति वचनात् दक्षिणावत्फलभूतत्वेन प्रधानभूतेति वा । दे  
वतोद्देशेन द्रव्यत्यागो याग इत्युच्यते । त्यक्तद्रव्यस्य अग्नौ  
प्रक्षेपा होम । ऋत्विगुद्देशेन वद्यामथविभागो दक्षिणा । अ-  
र्थिभ्य वेदिबहिर्देशेऽर्थविभागो दानमिति तेषा भेद ॥ ३५  
ह्रींकाराध्वरदक्षिणायै नम ॥

ह्रींकारनन्दनारामनवकल्पकवल्लरी । नन्दयत्यानन्दयती  
ति नन्दन स चासौ आरामश्च तथा । देवेन्द्रोद्यान विचि-  
त्रस्वरूपतया विजातीयार्थकत्वात् । ह्रींकार एव नन्दना  
राम सुखकर्तृविश्रामभूमि , तस्य नवा नूतना अतिकोमले  
त्यर्थ । कल्पयतीति कल्पका कल्पका च सा वल्लरी चेति  
तथा । देवोद्याने विद्यमानाना वृक्षगुल्मलतातृणादीनाम्  
पतल्लोकातिशायिपुष्पफलादिमन्त्रेऽपि न सर्वोत्तमताप्रसि-  
द्धि । कल्पवल्ल्यास्तु यथाकर्म यथासेवमुपासकना सर्वा-  
र्थप्रदानशक्तिमन्त्रेण सर्वोत्कृष्टता । तथा ब्रह्मविष्णुरुद्राणा  
तद्वाचकवर्णभेदानाम् अन्योन्यसंबन्धतया एकत्र प्रतीयमा  
नत्वेन चिरजीवित्वफलादिप्रदानेन आनन्दकतया ससारता

पशामकत्वेन च ह्रींकारस्य नन्नापमा । तत्र सर्वाथप्रदा  
 वृत्त्वेन कामेश्वरालिङ्गितकोमलतरसुन्दरमूत्या विशिष्टपुरुषा  
 र्थचतुष्टयकल्पनन सगुणनिर्गुणोपासकाना तद्वतात्मना प्रा  
 धान्येन समष्टिरूपतया सादृश्येन नवकल्पकवल्लरीत्युच्यत  
 इति भाव ॥ ॐ ह्रींकारनन्दनारामनवकल्पकवल्लर्यै  
 नमः ॥

ह्रींकारहिमवद्गङ्गा ह्रींकारार्णवकौस्तुभा ।

ह्रींकारमन्त्रसर्वस्वा ह्रींकारपरसौख्यदा ॥

ह्रींकारहिमवद्गङ्गा । हिमान्यस्मिन् सन्तीत हिमवान्  
 शीतलपर्वतराज । ह्रींकारस्य अभूतादसाधकतया शीत  
 लता बोध्या । तस्माद्गङ्गेव पावनी सर्वपुरुषार्थप्रदा  
 मन्त्रदवतात्मनाभिव्यक्त्यर्थ ॥ ॐ ह्रींकारहिमवद्गङ्गायै  
 नमः ॥

ह्रींकारार्णवकौस्तुभा । कौस्तुभ क्षीराब्धिजन्मसु चतु  
 र्दशरत्नेषु यथा श्रेष्ठ सर्वाधिकप्रकाशादिगुणतया, तथा पर  
 देवतापि अपारमहिमापरिच्छिन्नह्रींकारमन्त्रवेद्यत्वेन तन्नि  
 ष्पन्ना सती 'अत्राय पुरुष स्वय ज्योति ' इति श्रुते स्वय  
 प्रकाशतया विद्योतत इत्यर्थ । अत्र कौस्तुभहृदयस्य लक्ष्मी

पतित्वसर्वदेवोत्तमत्वसकलसुन्दरतमत्वगुणा इव विष्णो ह्रीं  
कारार्णवविद्योतमानह्रींकारदेवतोपासकस्यापि नारायणाभेदेन  
श्रीकान्तत्वादिधर्मा स्वत एव मिथ्यन्तीति कौस्तुभपदन ध्व  
नितमिति द्रष्टव्यम् ॥ ॐ ह्रींकारार्णवकौस्तुभायै नम ॥

ह्रींकारमन्त्रसर्वस्वा । सर्वाणि च तानि स्वानि च धना  
नि अणिमाद्यष्टैश्वर्यजनकत्वादीनि तानि तथा । ह्रींकारघटि  
ता ह्रींकारो वा तेषा सर्वस्वा सकलसपत् सर्वार्थसाधकश  
क्तिरित्यर्थ ॥ ॐ ह्रींकारमन्त्रसर्वस्वायै नम. ॥

ह्रींकारपरसौख्यदा । ह्रींकारपरा ह्रींकारमन्त्रजपपरा  
ह्रींकारघटितश्रीविद्याजपपरा वा । तेषा सौख्य चतुर्विधपुरु  
षार्थप्राप्तिजन्यानन्द तद्ददातीति तथा । ह्रींकाराणा व्यष्टि  
रूपण वाच्यार्थना क्षिमूर्तिना पर सौख्य सामरस्यसुख एकी  
भावानन्द ददातीति वार्थ । 'यत्र नान्यत्पश्यति नान्य  
च्छृणोति नान्यद्विजानाति स भूमा । यत्रान्यत्पश्यत्यन्य  
च्छृणोत्यन्यद्विजानाति तदल्पम्' 'नाल्पे सुखमस्ति' इति,  
'आनन्द ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चन' इति 'यदा  
ह्यवैष एतस्मिन्नदृश्येऽनात्म्येऽनिरुक्तेऽनिलयनेऽभय प्रतिष्ठ  
विन्दते । अथ सोऽभय गतो भवति', 'विज्ञानमानन्द ब्रह्म  
रातिर्दातु परायणम्' इत्यादिबहुश्रुतिभ्य अखण्डसच्चिदा

नन्दब्रह्मस्वरूपतया सैव फल भवति, अन्यज्ञानादन्यफल  
 प्राप्तेरयोगात् । 'ब्रह्म वद ब्रह्मैव भवति' 'तरति शोकमा  
 त्मवित्', 'येन मामुपयान्ति ते । तषामह समुद्धर्ता मृत्यु  
 ससारसागरात्' 'ब्रह्मैव सन्न ब्रह्माप्यति' इत्यादिश्रुतिस्मृ  
 तिज्ञानेभ्य स्वस्वरूपप्राप्तेरेव पुरुषार्थस्य प्रदातृत्व सिद्धम् ॥  
 ॐ ह्रींकारपरसौरुयदायै नम ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोविन्दभगव  
 त्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ  
 श्रीललितान्त्रिशतीभाष्यम् सपूर्णम् ॥

इत्येव ते मयाख्यात देव्या नामशतत्रयम् ।  
 रहस्यातिरहस्यत्वाद्गोपनीय त्वया मुने ॥  
 शिववर्णानि नामानि श्रीदेव्या कथितानि हि ।  
 शक्त्यक्षराणि नामानि कामेशकथितानि च ॥  
 उभयाक्षरनामानि ह्युभाभ्या कथितानि वै ।  
 तदन्यैर्ग्रथित स्तोत्रमेतस्य सदृश किमु ॥ ३ ॥  
 नानेन सदृश स्तोत्र श्रीदेवीप्रीतिदायकम् ।  
 लोकत्रयेऽपि कल्याण सभवेन्नात्र सशय ॥

इति हयमुखगीत स्तोत्रराज निशाम्य  
 प्रगलितकलुषोऽभूच्चित्तपर्याप्तिमेत्य ।  
 निजगुरुमथ नत्वा कुम्भजन्मा तदुक्त  
 पुनरधिकरहस्य ज्ञातुमेव जगाद ॥ ५ ॥

अगस्त्य उवाच—

अश्वानन महाभाग रहस्यमपि मे वद ।  
 शिववर्णानि कान्यत्र शक्तिवर्णानि कानि हि ॥  
 उभयोरपि वर्णानि कानि वा वद देशिक ।  
 इति पृष्ट कुम्भजेन हयग्रीवोऽवदत्पुनः ॥ ७ ॥  
 तव गोप्य किमस्तीह साक्षादम्बानुशामनात् ।  
 इदं त्वनिरहस्य ते वक्ष्यामि शृणु कुम्भज ॥  
 एतद्विज्ञानमात्रेण श्रीविद्या सिद्धिदा भवेत् ।  
 कत्रय हृदय चैव शैवो भागः प्रकीर्तितः ॥ ९ ॥  
 शक्यक्षराणि शेषाणि हींकार उभयात्मकः ।  
 एव विभागमज्ञात्वा ये विद्याजपशालिन ॥

न तेषां सिद्धिदा विद्या कल्पकादिशतैरपि ।  
चतुर्भिः शिवचक्रैश्च शक्तिचक्रैश्च पञ्चभिः ॥

नवचक्रैश्च ससिद्ध श्रीचक्र शिवयार्वपु ।  
त्रिकोणमष्टकोण च दशकोणद्वय तथा ॥ १२ ॥

चतुर्दशार चैतानि शक्तिचक्राणि पञ्च च ।  
बिन्दुश्चाष्टदल पद्म पद्म षोडशपत्रकम् ॥ १३ ॥

चतुरश्र च चत्वारि शिवचक्राण्यनुक्रमात् ।  
त्रिकोणे वैन्दव श्लिष्ट अष्टारेष्टदलाम्बुजम् ॥

दशारयो षाडशार भृगृह भुवनाश्रके ।  
शैवानामपि शाक्ताना चक्राणा च परस्परम् ॥

अविनाभावसबन्ध यो जानाति स चक्रवित् ।  
त्रिकोणरूपिणी शक्तिर्बिन्दुरूपपर शिव ॥

अविनाभावसबन्ध तस्माद्बिन्दुत्रिकोणयो ।  
एव विभागमज्ञात्वा श्रीचक्र यः समर्चयेत् ॥

न तत्फलमवाप्नोति ललिताम्बा न तुष्यति ।  
ये च जानन्ति लोकऽस्मिन्श्रीविद्याचक्रवेदिनः ॥

सामान्यवेदिन सर्वे विशेषज्ञोऽतिदुर्लभः ।  
स्वयविद्याविशेषज्ञो विशेषज्ञ समर्चयेत् ॥१९॥

तस्मै देय ततो ग्राह्यमशक्तस्तस्य दापयेत् ।  
अन्धनमः प्रविशन्ति येऽविद्या ममुपासते ॥

इति श्रुतिरपाहैतानविद्योपासकान्पुन ।  
विद्यान्योपासकानेव निन्दत्यारुणिकी श्रुतिः ॥

अश्रुता सश्रुतासश्च यज्वानो येऽप्ययज्वनः ।  
स्वर्धन्तो नापेक्षन्ते इन्द्रमग्निं च ये विदुः ॥

सिकता इव मयन्ति रश्मिभिः समुदीरिताः ।  
अस्माल्लोकादमुष्माच्चेत्याह चारण्यकश्रुतिः ॥

यस्य नो पश्चिम जन्म यदि वा शकर स्वयम् ।  
तेनैव लभ्यते विद्या श्रीमत्पञ्चदशाक्षरी ॥

इति मन्त्रेषु बहुधा विद्याया महिमोच्यते ।  
माक्षैकहेतुविद्या तु श्रीविद्या नात्र सशयः ॥

न शिल्पादिज्ञानयुक्ते विद्वच्छब्द प्रयुज्यते ।  
माक्षैकहेतुविद्या मा श्रीविद्यैव न सशयः ॥

तस्माद्विद्याविदेवात्र विद्वान्विद्वानितीर्यते ।  
स्वयं विद्याविदे दद्यात्ख्यापयत्तद्गुणान्मुधी ॥

स्वयं विद्यारहस्यज्ञो विद्यामाहात्म्यवेद्यपि ।  
विद्याविदं नार्चयेच्चैत्को वा तं पूजयेज्जनः ॥२८॥

प्रसङ्गादिदमुक्तं तं प्रकृतं शृणु कुम्भज ।  
यं कीर्तयन्मकृद्भक्त्या दिव्यनामशतत्रयम् ॥

तस्य पुण्यमहं वक्ष्ये शृणु त्वं कुम्भसम्भव ।  
रहस्यनाममाहस्त्रपाठे यत्फलमीरितम् ॥ ३० ॥

तत्फलं कोटिशुणितमेकनामजपाद्भवेत् ।  
कामेश्वरीकामेशाभ्यां कृतं नामशतत्रयम् ॥

नान्येन तुलयेदेतत्स्तोत्रेणान्यकृतेन च ।  
 श्रिय परम्परा यस्य भावि वा चोत्तरोत्तरम् ॥  
 तेनैव लभ्यते चैतत्पश्चाच्छ्रेय परीक्षयेत् ।  
 अस्या नाम्ना त्रिशत्यास्तु महिमा केन वर्ण्यते ॥  
 या स्वय शिवयोर्वक्त्रपद्माभ्या परिनिःसृता ।  
 नित्य षोडशसख्याकान्विप्रानादौ तु भोजयेत् ॥  
 अभ्यक्तास्तिलतैलेन स्नातानुष्णेन वारिणा ।  
 अभ्यर्च्य गन्धपुष्पाद्यै कामेश्वर्यादिनामभिः ॥  
 सूपापूपै शर्कराद्यै पायसै फलसयुतै ।  
 विद्याविदो विशेषेण भोजयेत्षोडश द्विजान् ॥  
 एव नित्यार्चन कुर्यादादौ ब्राह्मणभोजनम् ।  
 त्रिशतीनामभिः पश्चाद्ब्राह्मणान्क्रमशोऽर्चयेत् ॥  
 तैलाभ्यङ्गादिक दत्त्वा विभवे सति भक्तित ।  
 शुक्लप्रतिपदारभ्य पौर्णमास्यं वधि क्रमात् ॥

दिवसे दिवसे विप्रा भोज्या विशतिसख्यया ।  
दशाभि पञ्चभिर्वापि त्रिभिरेकेन वा दिनै ॥

त्रिंशत्षष्टि शतविप्रा सभोज्यास्त्रिंशत क्रमात्  
एव य' कुरुते भक्त्या जन्ममध्ये सकृन्नर ॥

तस्यैव सफल जन्म मुक्तिस्तस्य करे स्थिरा ।  
रहस्यनामसाहस्रभोजनेऽप्येवमेव हि ॥ ४१ ॥

आदौ नित्यबलिं कुर्यात्पश्चाद्ब्राह्मणभोजनम् ।  
रहस्यनामसाहस्रमहिमा यो मयोदितः ॥ ४२ ॥

सशीकराणुरत्रैकनाम्नो महिमवारिधेः ।  
वाग्देवीरचिते नामसाहस्रे यद्यदीरितम् ॥ ४३ ॥

तत्फल कोटिगुणित नाम्नोऽप्येकस्य कीर्तनात् ।  
एतदन्यैर्जपै स्तोत्रैरर्चनैर्यत्फल भवेत् ॥ ४४ ॥

तत्फल कोटिगुणित भवेन्नामशतत्रयात् ।  
वाग्देवीरचितास्तोत्रे तादृशो महिमा यदि ॥

साक्षात्कामेशकामेशीकृतेऽस्मिन्गृह्यतामिति ।  
मकृत्सकीर्तनादेव नाम्नामस्मिञ्शतत्रये ॥४६॥

भवेच्चित्तस्य पर्याप्तिर्न्यूनमन्यानपेक्षिणी ।  
न ज्ञातव्यमितोऽप्यन्यन्न जसव्य च कुम्भज ॥

यद्यत्साध्यतम कार्यं तत्तदर्थमिदं जपेत् ।  
तत्तत्फलमवाप्नोति पश्चात्कार्यं परीक्षयेत् ॥

ये ये प्रयोगास्तन्त्रेषु तैस्तैर्यत्साध्यते फलम् ।  
तत्सर्वं सिध्यति क्षिप्रं नामत्रिशतकीर्तनात् ॥

आयुष्कर पुष्टिकर पुत्रद वडयकारकम् ।  
विद्याप्रद कीर्तिकर सुकवित्वप्रदायकम् ॥५०॥

सर्वसपत्प्रद सर्वभोगद सर्वसौख्यदम् ।  
सर्वाभीष्टप्रद चैव देव्या नामशतत्रयम् ॥५१॥

एतज्जपपरो भूयान्नान्यदिच्छेत्कदाचन ।  
एतत्कीर्तनसतुष्टा श्रीदेवी ललिताम्बिका ॥

भक्तस्य यद्यदिष्ट खात्तत्तत्पूरयते ध्रुवम् ।  
 तस्मात्कुम्भोद्भव मुने कीर्तय त्वमिदं सदा ॥  
 नापरं किञ्चिदपि ते बोद्धव्यं नावशिष्यते ।  
 इति ते कथितं स्तोत्रं ललिताप्रीतिदायकम् ॥  
 नाविद्यावेदिने ब्रूयान्नाभक्ताय कदाचन ।  
 न शठाय न दुष्टाय नाविश्वासाय कर्हिचित् ॥  
 यो ब्रूयात्त्रिशतीं नाम्ना तस्यानर्थो महान्भवत् ।  
 इत्याज्ञा शाकरी प्राक्ता तस्माद्गोप्यमिदं त्वया ॥  
 ललिताप्रेरितनैव मयोक्तं स्तात्रमुत्तमम् ।  
 रहस्यनामसाहस्रादपि गोप्यमिदं मुने ॥ ५७ ॥  
 एवमुक्त्वा हयग्रीवं कुम्भजं तापसोत्तमम् ।  
 स्तोत्रेणाननं ललितां स्तुत्वा त्रिपुरसुन्दरीम् ॥  
 आनन्दलहरीमग्नमानसः समवर्तत ॥ ५९ ॥

इति श्रीललितात्रिशतीस्तोत्रं सपूर्णम् ॥



ललितात्रिशती  
नामानुक्रमणिका



॥ श्री ॥

## ॥ नामानुक्रमणिका ॥

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
ईकाररूपा	१९१	इश्वरवल्लभा	१९५
ईक्षणसूत्राण्डकोटि	१९५	ईश्वरार्धाङ्गशरीरा	१९७
ईक्षित्री	१९४	ईश्वरोत्सगनिलया	१९७
ईडिता	१९५	इषात्स्मतानना	१९८
ईतिबाधाविनाशिनी	१९७	इहाविरहिता	१९८
ईदृगित्यविनिर्देश्या	१९२	एकप्राभवशालिनी	१९०
ईप्सितार्थप्रदायिनी	१९१	एकभाक्तमदर्चिता	१८१
ईशाताण्डवसाक्षिणी	१९७	एकभोगा	१८५
ईशशक्ति	१९८	एकरसा	१८६
ईशाधिदेवता	१९६	एकवीरादिससेव्या	१८९
ईशानादिब्रह्ममयी	१९३	एकाक्षरी	१७५
ईशश्री	१९१	एकाग्रचित्तनिर्ध्याता	१८२
ईशित्वाद्यष्टसिद्धिदा	१९३	एकातपत्रसाम्राज्यप्रदा	१८७
ईश्वरत्वविधायिनी	१९३	एकानन्दाचदाकृति	१७९
ईश्वरप्रेरणकरी	१९६	एकानेकाक्षराकृति	१७७

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
एयान्तपूजता	१८८	क गालिप्राणनायिका	२२४
एकाररूपा	१७५	कमनीया	१६९
एकैश्वर्यप्रदायिना	१८६	कमलाक्षा	१६९
एजदनेकजगदीश्वरी	१८९	कम्बुकण्ठा	२२६
एतत्तदित्यनिर्देश्या	१७८	कम्पनिग्रहा	१७४
एधमानप्रभा	१८८	करनिर्जितपल्लवा	२२६
एन कुटविनाशिना	१८५	करभारु	२२३
एलासुगा धचिकुरा	१८४	करुणामृतसागरा	१७०
एवमित्यागमाबोध्या	१८०	कर्पूरवीटीमौरभ्यकल्लोलि	१७२
एषणार्राहतादृता	१८४	कर्मफलप्रदा	१७५
कजलाचना	१७३	कमाादमाक्षिणी	१७४
कदर्पजनकापाङ्गवीक्षणा	१७१	कलानाथमुरवी	२२३
कदपविद्या	१७१	कलावती	१६९
ककाररूपा	१६६	कलालापा	२२६
ककाराथा	२२	कलिदाषहरा	१७३
ककारिणी	२६४	कल्पवल्लासमभुजा	२२७
कचाजताम्बुदा	२२३	कल्मषघ्नी	१७०
कटाक्षस्या दकरुणा	२२३	कल्याणगुणशालिनी	१६७
कठिनस्तनमण्डला	२२२	कल्याणशैलिनिलया	१६८
कदम्बकाननावासा	१७१	कल्याणा	१६७
कदम्बकुसुमप्रियां	१७१	कल्या	२२२

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
कस्तूरीतिलकाञ्चिता	२२८	कामश्वरालिङ्गिताङ्गी	२६७
काञ्चिदार्थदा	२७०	कामश्वराह्लादकरी	२६९
कान्ता	२२५	कामेश्वरी	२७०
कातिधूतजपावलि	२२६	कारयित्रा	१७४
कामकाटिर्निलया	२७	कारुण्यविग्रहा	२२४
कामसजीवनी	२२२	मालहत्री	२२१
कामितार्थदा	२२१	मा यलोला	२६५
कामेशी	२२१	लपटा	२४२
कामेशोत्सगवार्सिनी	२६७	लकाररूपा	१९८
कामेश्वरगृहेश्वरा	२६९	लकारारया	२३६
कामेश्वरतपे सिद्धि	२६८	लकारिणी	२७१
कामेश्वरप्रणयिनी	२६८	लकुलेश्वरी	२४३
कामेश्वरप्राणनाडी	२६५	लक्षकान्ध्याण्डनायिका	२०१
कामेश्वरप्राणनाथा	२६८	लक्षणागम्या	२०२
कामेश्वरब्रह्मविद्या	२६९	लक्षणोज्ज्वलदिव्याङ्गी	२००
कामेश्वरमनाहरा	२६५	लक्ष्मणाग्रजप्रजिता	२४०
कामेश्वरमन प्रिया	२६८	लक्ष्मीवाणीनिषेविता	१९८
कामेश्वरमहेश्वरी	२७०	लक्ष्याथा	२०१
कामेश्वरविमोहिनी	२६८	लग्नचामरहस्तश्रीशार०	२४१
कामेश्वरविलासिनी	२६८	लघुसिद्धिदा	२३९
कामेश्वरसुखप्रदा	२६७	लङ्घयेतराजा	२३८

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
लजाब्जा	२०४	ल-धशक्ति	२७३
लजापदसमाराध्या	२४२	ल-धसपत्समुन्नात	२४४
लतातनु	५ २	ल-धसुखा	२७७
लतापूज्या	२३६	ल-धहर्षाभिपूरिता	२७८
ल-धकामा	२०२	ल-धतिशयसर्वाङ्गसौ-दर्या	२७५
ल-धदेहा	२७२	ल-धहकारदुर्गमा	२७२
ल-धधी	२७१	ल-धैश्वर्यसमुन्नति	२७४
ल-धनानागमस्थिति	२७६	ल-ध्या	२ ४
ल-धपति	२७६	ल-ध्येतरा	२४०
ल-धपापमनोदूरा	२७२	ल-धिमृक्तालताञ्जिता	२ ३
ल-धभक्तिसुलभा	२४०	ल-ध्योदरप्रसू	२०४
ल-धभोगा	२७७	ल-धवर्जिता	२ ४
ल-धमाना	२४३	ल-धरिधत्युद्भवश्वरी	२२६
ल-धयौवनशालिनी	२७५	ल-धनारूपा	१९९
ल-धरसा	२४४	ल-धतिकालसत्फाला	२०
ल-धरागा	२७६	ल-धटनयनार्चिता	२००
ल-धरूपा	२७१	ल-धामराजदलिका	२०३
ल-धलीला	२७५	ल-धिता	१९८
ल-धवाञ्छिता	२७२	ल-धहाडिमपाटला	१९९
ल-धविभ्रमा	२७६	ल-धकिनी	१९९
ल-धबुद्धि	२७४	ल-धक्षारससवर्णाभा	२३९

नामानुक्रमणिका ।

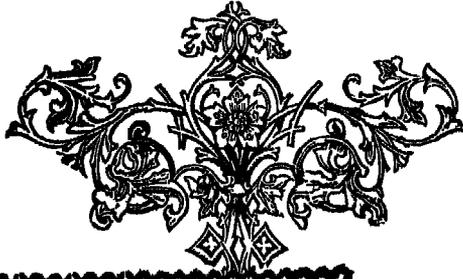
३०५

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
लाङ्गलायुधा	२४१	समानाधिकवर्जिता	२६२
लाभालाभविवर्जिता	२३८	सर्वकर्त्ती	२१६
लावण्यशालिनी	२३९	सर्गता	२१९
लास्यदर्शनसतुष्टा	२३७	सर्वज्ञा	२१५
सगहीना	२६३	सर्वप्रपञ्चनिमात्रा	२६२
सकला	२५८	सर्वभर्त्री	२१६
सकलागमसस्तुता	२५६	सर्वभूषणभूषिता	२२०
सकलाधिष्ठानरूपा	२६१	सर्वमङ्गला	२१५
सकलेष्टदा	२६३	सर्वमाता	२१९
सकाररूपा	२१५	सर्वविमोहिना	२१८
सकाराख्या	२५५	सर्ववेदा ततात्पयभूमि	२५७
सगुणा	२६३	सर्वसाक्षिणी	२१७
सच्चिदानंदा	२५८	सर्वसौरयदात्री	२१८
सत्यरूपा	२६१	सर्वह त्रा	२१६
सदसदाश्रया	२५७	सर्वाङ्गसुदरी	२१७
सदाशिवकुटुम्बिनी	२६०	सर्वात्मिका	२१७
सद्गतिदायिनी	२५९	सर्वाधारा	२१८
सनकादिमुनिध्येया	२६०	सर्वानवद्या	२१७
सनातना	२१६	सर्वारूणा	२१९
समरसा	२५६	सर्वावगुणवर्जिता	२१९
समाकृति	२६१	सर्वेशी	२१५

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
सर्वोत्तुङ्गा	२६३	हरिब्रह्मे द्रवदिता	२११
साध्या	२५९	हरिसोदरी	२३४
हसगति	२२८	हर्यक्षवाहना	२१२
हसमन्त्रार्थरूपिणी	२३३	हर्यश्वाद्यमरार्चिता	२१४
हसवाहना	२१२	हर्षप्रदा	२३२
हकाररूपा	२११	हर्षिणी	२३४
हकारार्था	२२८	हलधृक्पूजिता	२११
हठात्कारहतासुरा	२३१	हल्यवर्जिता	२३१
हतदानवा	२१३	हल्लीसलास्यसतुष्टा	२३३
हत्यादिपापशमनी	२१३	हविर्भोक्त्री	२३२
हयमेधसमर्चिता	२१२	हस्तिकुम्भोत्तुङ्गकुचा	२१३
हयारूढासेविताङ्घ्रि	२१२	हस्तिऋत्तिप्रियाङ्गना	२१३
हय्यङ्गवीनहृदया	२३५	हाकिनी	२३१
हरप्रिया	२११	हाटकाभरणोज्ज्वला	२२९
हराराध्या	२११	हादिविद्या	२१४
हरिकेशसखी	२१४	हानिवृद्धिविवर्जिता	२३५
हरिगोपारुणाशुका	२३६	हानोपादाननिर्मुक्ता	२३४
हरिणेषणा	२११	हारहारिकुचाभोगा	२३०
हरित्पतिसमाराध्या	२३१	हार्दसतमसापहा	२३३
हरिदश्वादिसेविता	२१३	हालामदालसा	२१४
हरिद्राकुङ्कुमादिग्धा	२१४	हाहाहूहूमुखस्तुत्या	२३५

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
ह्रीं	२१०	ह्रींकारभास्कररुचि	२४८
ह्रींकारकमलेदरा	२७९	ह्रींकारमणिदीपार्चि	२७०
ह्रींकारक दरासिंही	२५३	ह्रींकारमन्त्रसर्वस्वा	२८९
ह्रींकारकदाङ्कुरिका	२४९	ह्रींकारमन्त्रा	२०६
ह्रींकारकुण्डाग्निशिखा	२४७	ह्रींकारमयसौवर्णस्तम्भवि०	२८३
ह्रींकारकोशासिलता	२८१	ह्रींकारमूर्ति	२७८
ह्रींकारचिन्त्या	२१०	ह्रींकाररूपा	२०५
ह्रींकारजपसुप्रीता	२०७	ह्रींकारलक्षणा	२०६
ह्रींकारतरुमञ्जरी	२५५	ह्रींकारवाच्या	२०९
ह्रींकारतरुशारिका	२८०	ह्रींकारवेदोपनिषत्	२८५
ह्रींकारदीर्घिकाहसी	२५०	ह्रींकारवेद्या	२०९
ह्रींकारदुग्धाग्निधसुधा	२७९	ह्रींकारशशिचन्द्रिका	२४७
ह्रींकारनदनारामनवक०	२८७	ह्रींकारशुक्तिकामुक्तामणि	२८२
ह्रींकारनिलया	२०५	ह्रींकारसुमनामाध्वी	२५४
ह्रींकारपञ्जरशुकी	२५२	ह्रींकारसौधशृङ्गकपोतिका	२७८
ह्रींकारपरसौरयदा	२८९	ह्रींकारहिमवद्गङ्गा	२८८
ह्रींकारपूज्या	२०९	ह्रींकाराङ्गणदीपिका	२५२
ह्रींकारपीठिका	२०९	ह्रींकारादर्शविम्बिता	२८१
ह्रींकारपेटकमणि	२८०	ह्रींकाराद्या	२४५
ह्रींकारबीजा	२०५	ह्रींकाराध्वरदक्षिणा	२८६
ह्रींकारबोधिता	२८३	ह्रींकारार्णवकौस्तुभा	२८८

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
ह्रींकाराम्भोजभृङ्गिका	२५३	ह्रींपदप्रिया	२०७
ह्रींकाराम्भोदचञ्चला	२४८	ह्रींपदाभिधा	२०८
ह्रींकारारण्यहरिणी	२५१	ह्रींपदाराध्या	२०८
ह्रींकारावालवल्ली	२५२	ह्रींमती	२०७
ह्रींकारास्थाननर्तकी	२८१	ह्रींमध्या	२४५
ह्रींकारिणी	२४५	ह्रींविभूषणा	२०७
ह्रींकारैकपरायणा	२५०	ह्रींशरीरिणी	२१०
ह्रींकारोद्यानकेकिनी	२५०	ह्रींशिखामणि	२४६
ह्रींगर्भा	२०८	ह्रींशीला	२०८



परिग्रहण सं० १०३४० ..  
 ग्रन्थालय, के. ए. लि. शि. संस्थान  
 सायनाथ वाराणसी